Digital Education Portal

निष्ठा प्रशिक्षण

डिजिटल शिक्षक प्रशिक्षण

प्रशिक्षण डायरी

शैक्षणिक खबरों से अपडेट रहने के लिए

हमें फॉलो सब्सक्राइब करें

https://t.me/digitaleducationportal

https://www.facebook.com/Digitaleducationportal

https://twitter.com/deelip_jaiswal

https://educationportal.org.in

https://bit.ly/36Djsw7

क्रं.	अवधि एवं विषय	कोर्स का नाम
1.	16 अक्टूबर, '' जेनेरिक विषय ''	1. पाठ्यक्रम और समावेशी शिक्षा
		2. सामाजिक व्यक्तिगत योग्यता का विकास करना एवं सुरक्षित व स्वस्थ स्कूल वातावरण बनाना
		3. स्कूलों में स्वास्थ्य और कल्याण
2.	1 नवम्बर '' शैक्षणिक रणनीतियाँ ''	4. शिक्षण सीखने की प्रक्रिया में जेण्डर को एकीकृत करना
		5. टीचिंग लर्निंग और असेसमेंट कोर्स में आईसीटी का एकीकरण
		6. आर्ट इंटीग्रेटेड लर्निंग
3.	16 नवम्बर '' विशिष्ठ शिक्षाशास्त्र ''	7. स्कूल आधारित मूल्यांकन
		8. पर्यावरणीय अध्ययन (प्राथमिक चरण) का शैक्षणिक पाठ्यक्रम
		9. गणित का शिक्षाशास्त्र
4.	1 दिसम्बर '' विशिष्ठ शिक्षाशास्त्र ''	10. सामाजिक विज्ञान (उच्च प्राथमिक चरण) का शिक्षाशास्त्र
		11. भाषाओं का शिक्षाशास्त्र
		12. विज्ञान का शिक्षाशास्त्र (उच्च प्राथमिक चरण)
5.	16 दिसम्बर '' स्कूल नेतृत्व ''	13. स्कूल नेतृत्व : अवधारणा और अनुप्रयोग
		14. स्कूली शिक्षा में पहल
		15. प्री स्कूल शिक्षा
6.	1 जनवरी से 15 जनवरी तक '' स्कूल नेतृत्व ''	16. पूर्व व्यवसायिक शिक्षा
		17. कोविड–19 परिदृश्य : स्कूली शिक्षा में चुनौतियों का समाधान
		18. अधिकार – बाल यौन शोषण (C.S.A.) और यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण (POCSO) अधिनियम, 2012

Scanned by CamScanner

कोर्स – 1 (पाठ्यक्रम और समावेशी शिक्षा)

(प्रोफेसर अनुपमा आहूजा)

परिचय :– मॉड्यूल / कोर्स में हमारे सीखने की यात्रा निम्नानुसार होगी (सभी कोर्स में) –

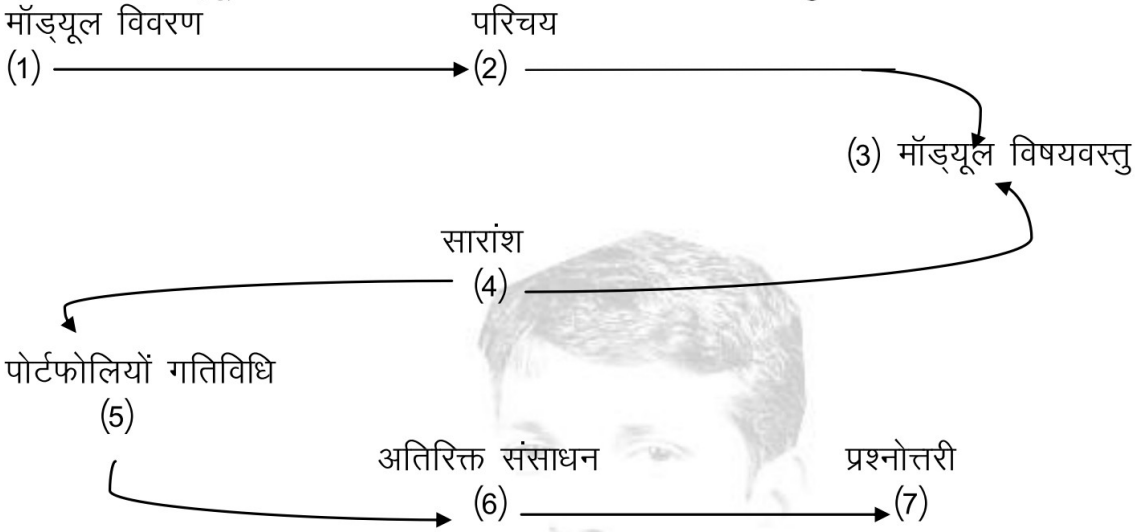

मॉड्यूल में गतिविधियों के प्रकार :–

(1) ऑनलाईन (2) ऑफलाईन

. ऑफलाईन वह गतिविधि हैं जिसमें शिक्षक चिंतन करके डायरी या चार्ट निर्माण कर लिखते हैं।

. ऑनलाईन वह गतिविधि हैं जो शिक्षक ऑनलाईन blogspot link पर जाकर पूरा करेगे। जब शिक्षक इस Link पर जायेगे तो उन्हे इसमें दी गई जानकारी को पढ़ना होगा तथा अपने विचारों को भी Post करना होगा।

मॉड्यूल के उद्देश्य :– इससे निम्न बाते जानेगे–

1. शैक्षिक नीतियों, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के विकास तथा अभिष्ठ निष्पादित एवं मूल्यांकित पाठ्यचर्या के अंतःसंबंधों और प्रकार्यो का वर्णन।
2. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के परिदृश्य तथा पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तको में इसके अंतरण की व्यवस्था।
3. समावेशी शिक्षा एवं समावेशी कक्षा निर्माण की रणनीति बनाने की एक समृद्ध समझ विकसित करना।
4. नियमित कक्षाओं में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को शामिल करने के लिए अपने कौशल को सुदृढ़ करना।
5. Covid-19 जैसी परिस्थितियों में पाठ्यचर्या व समावेशी शिक्षा से संबंधित चिंताओं व मुद्दों पर अपने विचार देना।

Scanned by CamScanner

सामग्री की रूपरेखा :–

(1) राष्ट्रीय शिक्षा नीति, रूपरेखा, पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक, शिक्षक सहायक सामग्री, सीखने का प्रतिफल

(2) समावेशी कक्षा – कानून व नीतिपरक ढाँचा

(3) कक्षाओं में विविधता को स्वीकार करना।

(4) कक्षाओं में विविधता के संबंध में चर्चा।

(5) समावेशी कक्षा बनाने के सुझाव।

(6) समावेशी शिक्षण अधिगम के मूल्यांकन।

पाठ्यचर्या एवं समावेशी कक्षा –

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति के परिप्रेक्ष्य में पाठ्यचर्या एवं तद्अनुसार पाठ्यक्रम का निर्धारण किया जाता हैं।
- शाला में प्रत्येक कक्षा में भिन्न प्रकार के बच्चे होते हैं जैसे – सीखने के क्रम में, आकार में, आर्थिक स्थिति में, दिव्यांगता, लिंग, जाति आदि आधार पर।
- पढ़ना बच्चे का अधिकार हैं इसलिए सबको प्रवेश शाला में दिया जाता हैं।
- शिक्षक होने के नाते बच्चे की पारिवारिक स्थितियों, परेशानियों आदि को भी समझने का प्रयास किया जाना चाहिए।

कुछ पदो के सही क्रम –

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति
2. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा
3. पाठ्यचर्या
4. पाठ्यक्रम
5. पाठ्यपुस्तकें
6. शिक्षक सहायक सामग्री
7. सीखने का प्रतिफल

राष्ट्रीय शिक्षा नीति – आज हमारे सामने तीसरी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 हैं। इसके पहले 1968 में सबसे पहले, फिर 1986 में दूसरी बार राष्ट्रीय शिक्षा नीति बनी थी। पहली राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 के परिप्रेक्ष्य में 1975 में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, दूसरी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के परिप्रेक्ष्य में 1988, 2000 एवं 2005 में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा का निर्माण किया गया।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा – राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा सामान्य केन्द्रों के इर्द गिर्द घूमती हैं इसमें हमारे संवैधानिक मूल्य जिसमें समता, सामाजिक न्याय, धर्मनिरपेक्षता और हमारा वैज्ञानिक दृष्टिकोण हैं। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा को राष्ट्रीय शिक्षा नीति मार्गदर्शन प्रदान करती हैं। इसका निर्माण इसलिए किया जाता हैं ताकि हम बच्चों में सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, शैक्षिक परिवर्तन को समझा पायें तथा बच्चों का सर्वांगीण विकास करा पायें। NCERT ने कक्षा 1 से 10 तक Learning Outcomes का निर्माण किया हैं।

Scanned by CamScanner

पाठ्यचर्या – स्कूलो की दिनचर्या राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा के मार्गदर्शन से होती हैं जैसे – प्रार्थना, अवकाश एवं अन्य गतिविधियां। यह राष्ट्र स्तर पर NCERT द्वारा बनाई जाती हैं।

पाठ्यक्रम – पाठ्यक्रम हमारे स्कूलों की शिक्षण अधिगम के लिए Topics और Theams देता हैं जो कि कक्षावार, विषयवार होते हैं तथा इनमें यह बताया जाता हैं कि किस कक्षा में किस विषय में किस तरह की विषयवस्तु को पढ़ाया जाए, उसका मूल्यांकन कैसे हो, कितना समय दिया जाये?

पाठ्यपुस्तके – पाठ्यपुस्तकों में विषयवस्तु होती हैं यानि जो Topics हमारे पाठ्यक्रम में दिये हैं उनको Detail Out यानि विवरण दिया जाता हैं। राष्ट्रीय स्तर पर मॉडल पुस्तके बनती हैं जो कि NCERT द्वारा बनाई जाती हैं। मगर राज्य व संघ शासित प्रदेशों के संदर्भ अलग–अलग होते हैं। इन्ही मॉडल पुस्तकों के पाठ्यक्रम के आधार पर राज्य स्तर के लिए भी पाठ्यपुस्तकों का निर्माण किया जाता हैं, जिसमे बच्चों के लिए संदर्भो का ध्यान रखा जाता हैं। प्रत्येक प्रदेश के खान–पान, संस्कृति आदि को ध्यान में रखते हुए पाठ्यपुस्तकें बनती हैं। ताकि छात्रों को स्थानीय ज्ञान मिल सके।

शिक्षक सहायक सामग्री – पाठ्यपुस्तकों के बाद शिक्षको के लिए शिक्षण सहायक सामग्री का निर्माण किया जाता हैं।

गुप्त पाठ्यचर्या (Headen Cuuriculum) – कभी कभी शिक्षको के व्यवहार से बच्चे कुछ संदेश लेकर अपना व्यवहार परिवर्तन कर लेते हैं या कुछ सीख लेते हैं। यह पाठ्यचर्या में दिखाई नही देता लेकिन इससे भी बच्चे सीख रहे हैं अतः इसे गुप्त पाठ्यचर्या कहते हैं। जैसे – लिंग संवेदनशीलता को बताने के लिए कक्षा में लड़के और लड़कियों को अलग–अलग बिठाया जाता हैं।

कुछ महत्वपूर्ण बातें –

. हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति और पाठ्यचर्या की रूपरेखा का उद्देश्य यह हैं कि सबको साथ लेकर चले, सबको एक समान गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान की जाये चाहे बच्चे किसी भी धर्म, जाति, समुदाय, आर्थिक स्थित, लिंग से क्यो न हो।

समावेशी कक्षा – हमारी कक्षा में कुछ ऐसे बच्चे होते हैं जो पढ़ने में रूचि नही लेते, स्कूल तो आते हैं मगर उनकी सहभागिता नही रहती, कुछ ऐसे भी बच्चे होते हैं जो स्कूल ही नही आते, ऐसे बच्चों पर शिक्षक ध्यान दे तथा उनमें रूचि पैदा करायें। कुछ बच्चें दिव्यांग होते हैं तो क्या उन्हें दिव्यांग वाली शाला में दाखिला दिलवाना उचित होगा? क्या इन दिव्यांग बच्चों को Normal बच्चों के साथ पढ़ने देना उचित हैं? हो सकता हैं कि वह दिव्यांग बच्चा दिव्यांग वाली शाला में पढ़ने भी लगे, ब्रेललिपि या अन्य संसाधनों से पढ़ने व सीखने भी लगे मगर जब वह बड़ा होकर कक्षा से बाहरकी दुनिया में जायेगा जो उसे Normal बच्चों के साथ अच्छा न लगेगा, हीन भावना भी आ सकती हैं कि जो काम सभी कर सकते हैं वो मैं नही कर सकता। अगर हम इन दिव्यांग बच्चों को अपनी शाला में दाखिला दे और इनके स्वास्थ्य, शिक्षा और उनकी सुरक्षा पर ध्यान देते हुये उन्हे सब के बीच रखकर शिक्षा दे तो वे दिव्यांग बच्चे सब के साथ घुल मिल जायेगे। ऐसी कक्षा को समावेशी कक्षा कहते हैं जिसमें सभी प्रकार के बच्चे समान भाव से रूचि के साथ शिक्षा लेते हैं।

Scanned by CamScanner

समावेशी शिक्षा कानूनी एवं नीतिगत ढाँचा –

(1) 6–14 वर्ष की आयु वर्ग के सभी बच्चों को निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा का मौलिक अधिकार हैं। (भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21–अ के अंतर्गत, 86 वॉ संविधान संशोधन अधिनियम 2002)

(2) 6–14 वर्ष के सभी बच्चों को प्राथमिक शिक्षा के पूर्ण होने तक पड़ोस के विद्यालय में निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा का अधिकार हैं। (RTE Act 2009 जो 1 अप्रेल 2010 में लागू हुआ)

(3) गंभीर अक्षमताओं वाले बच्चों को घर में शिक्षा पाने का पूर्ण अधिकार हैं।

(RTE अधिनियम संशोधन 2012)

(4) समावेशी शिक्षा का तात्पर्य सामान्य व विशेष जरूरत वाले बच्चों को एक साथ सिखाने से हैं तथा शिक्षण अधिगम व्यवस्था को विशेष जरूरत वाले बच्चों के अनुरूप बनाकर देना हैं। (दिव्यांगजन अधिकार कानून 2016)

(5) N.C.F. 2005 पाठ्यचर्या को बच्चो के लिए समावेशी व सार्थक अनुभव बनाने के महत्व को बताते हुये कहता हैं कि – '' हमें छात्रों व उनके सीखने की प्रक्रिया के बारे में एक मौलिक बदलाव लाने की जरूरत हैं। ''

प्रेरक कहानी (एनिमल पाठशाला) – जंगल में जानवरों ने स्कूल खोला जिसमें योग्यताओं की विभिन्नता का ध्यान नही रखा जैसे – बत्तख को दौड़ प्रतियोगिता में दौड़ाया, गिलहरी को अधिक ऊँचाई पर चढ़ने की परीक्षा ली आदि इस प्रकार की कहानी थी। इससे यह प्रेरणा ली जानी चाहिए कि हमें बच्चो की व्यक्तिगत विभिन्नताओं एवं समस्याओं को ध्यान रखते हुए शिक्षण कार्य करना चाहिए। उनकी योग्यता और रूचि अनुसार आगे बड़ाना चाहिए।

- कभी कभी स्वयं को एक शिक्षार्थी के रूप में देखना चाहिए। इससे हमें छात्रों की समस्याओं के सही कारण समझ में आयेगे तद्अनुसार उनके निराकरण खोज पावेगे।

शिक्षक की भूमिका –

(1) सकारात्मक सोच व विश्वास।

(2) संवेदनशील बने।

(3) बच्चों के बीच अंतर को जाने।

(4) बच्चो की सराहना करे।

(5) छात्रो की सामाजिक, सांस्कृतिक, भौतिक विविधताओं को स्वीकार करे।

(6) बच्चों की तुलना करना बंद करे तथा सबकी सहभागिता कराना सुनिश्चित करे।

(7) दिव्यांग बच्चों के लिए सहायक यंत्र जैसे – व्हील चेयर, बैसाकी, छड़ी के उपयोग को प्रोत्साहित करे व सहूलियत प्रदान करे।

(8) रूढ़िवादी विचारधारा का त्याग करे।

(9) यूनिवर्सल डिजाइन फॉर लर्निंग (UDL) लागू करना। यह शिक्षण और अधिगम का एक ऐसा तरीका हैं जो कक्षा में प्रत्येक सीखने वाले की जरूरत को पूरा करता हैं।

(10) UDL यह स्वीकार करता हैं कि यदि छात्र जानकारी तक नही पहुच पाता तो वह इसे नही सीख सकते हैं अतः सीखने की सामग्री को कई रूपों में उपलब्ध होना चाहिए जैसे – प्रिंट, ऑडियो, वीडियो, ब्रेल, सांकेतिक भाषा आदि।

Scanned by CamScanner

समावेशी कक्षा निर्माण हेतु सुझाव :–

1). समावेशी कक्षाओं को सफलतापूर्वक बनाया जा सकता हैं जब शिक्षकों के पास पर्याप्त कौशल हो तथा सभी प्रकार के बच्चों की सीखने की जरूरतों को पूरा करने हेतु उपयुक्त रणनीति अपनाई जाये।

2). NCERT द्वारा शिक्षको की मदद के लिए 2 हैण्डबुक प्रकाशित की गई हैं –

2.1 विशेष आवश्यकता वाले बच्चों का समावेशन प्राथमिक स्तर पर।

2.2 विशेष आवश्यकता वाले बच्चों का समावेशन उच्च प्राथमिक स्तर पर।

दृष्टिबाधित(V.I.) बच्चे का समावेश :–

1. कक्षा में शिक्षक के करीब एक सीट आरक्षित करे।
2. उसे नाम से संबोधित करे।
3. छात्रों को बड़े प्रिंट, ब्रेल लिपि, स्पर्श आलेख, आरेख , ऑडियो बुक प्रदान करे।

श्रवणबाधित(H.I.) बच्चे का समावेश :–

1. श्रवण विशेषज्ञों की मदद ले।
2. चित्र दिखाते हुये धीरे–धीरे बोले ताकि वह आपके हाव भाव को समझे।
3. छोटे वाक्य बोले।
4. वीडियों से बच्चों को सिखाये।
5. बरखा सिरीज का उपयोग करे।

शारीरिक रूप से दिव्यांग का समावेशन –

1. कक्षा में बैठने के लिए सुलभ टेबल बेंच प्रदान करायें।
2. बहुविकल्पीय प्रश्नों जैसे हॉ/नही या चार उत्तर वाले प्रश्नों से आंकलन करे।
3. खेलकूद में बच्चे को निर्णायक बना सकते हैं।

समावेशी कक्षा में बच्चों का मूल्यांकन –

1. एक प्रश्न के कई प्रतिक्रियाओं को प्रोत्साहित करें, स्पष्ट संदेश दे और एक प्रश्न के बाद पर्याप्त समय दे।

2. याद करने के बजाय देखकर/पहचान कर चुनने, सही उत्तर पर रंग भरने, गोला करने, मिलान करने, काटने, चिपकाने को कहे।

3. अक्षरों के कट आउट का उपयोग करे।
4. चित्रों व टिकटो व पेस्टर का उपयोग करे।
5. फ्लैश कार्ड, शब्द कार्ड का उपयोग करे।

Scanned by CamScanner

NCF 2005 के मार्गदर्शी सिद्धान्त :–

(1) ज्ञान को विद्यालय के बाहर के जीवन से जोड़ना।
(2) रटने की प्रथा बंद करें।
(3) पाठ्यपुस्तकों पर केन्द्रित न होकर बच्चों का सर्वांगीण विकास करें।
(4) मूल्यांकन सरल व लचीला रहें।

:: प्रश्नोत्तरी ::

प्रश्न 1. N.E.P. 2020 स्कूली शिक्षा के मौजूदा 10+2 डिजाइन किसमें बदलने का प्रस्ताव हैं ?
उत्तर 1. 5+3+3+4
प्रश्न 2. भारत में शिक्षा पर पहली व दूसरी राष्ट्रीय शिक्षा नीति किन वर्षो में तैयार हुई ?
उत्तर 2. 1968 और 1986
प्रश्न 3. बच्चों को निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम कब बना ?
उत्तर 3. 2009 में अधिनियमित किया गया ता 2010 में लागू हुआ।
प्रश्न 4. निम्न में से कौन सा U.D.L. का सिद्धान्त नही हैं।
उत्तर 4. व्यवहार प्रबंधन के साधन।
प्रश्न 5. राम दृष्टिबाधित हैं। उसके लिए कौन सा अभिविन्यास व गतिशीलता प्रशिक्षण हेतु उपयोगी होगा ?
उत्तर 5. स्कूल भवन के स्पर्श नक्शे।
प्रश्न 6. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के लिए सही कथन हैं?
उत्तर 6. उपरोक्त सभी।
प्रश्न 7. विकलांग व्यक्ति अधिनियम 2016, समावेशी शिक्षा को शिक्षा की एक प्रणाली के रूप में परिभाषित करता हैं ?
उत्तर 7. एक साथ सीखे और सीखने की प्रणाली उपयुक्त रूप से अनुकूलित हैं।
प्रश्न 8. कौन सा कथन पाठ्यक्रम के लिए मान्य नही हैं ?
उत्तर 8. यह भारत में विभिन्न स्तरों पर शिक्षा के लिए दृष्टि प्रदान करता हैं।
प्रश्न 9. समान विकलांगता वाले 2 बच्चें :–
उत्तर 9. कक्षा में शिक्षक के द्वारा विभिन्न हस्तक्षेप की आवश्यकता हो सकती हैं।
प्रश्न 10. समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए क्या सही नही हैं?
उत्तर 10. शिक्षक की सामाजिक आर्थिक स्थिति।

——00 कोर्स 1 समाप्त 00 ——

Scanned by CamScanner

कोर्स – 2
(सामाजिक व्यक्तिगत योग्यता का विकास करना एवं सुरक्षित व स्वस्थ स्कूल वातावरण बनाना)

मॉड्यूल के उद्देश्य :– इस मॉड्यूल के द्वारा हम निम्न कार्यो में सक्षम हो जायेगे –
(1) व्यक्तिगत , सामाजिक गुणों के बारे में समझ विकसित करने में।
(2) स्वयं के व्यक्तिगत–सामाजिक गुणों पर विचार करने के साथ शिक्षार्थियों में उन्ही गुणों का विकास करने में।
(3) कक्षा में मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए आवश्यक गुणों और कौशलों का विकास करने में।
(4) विद्यालयों/कक्षाओं में एक ऐसा परिवेश निर्मित करने में, जहाँ सभी विद्यार्थी स्वीकार्य महसूस करे, उनमें आत्मविश्वास जगे, वे यह महसूस करें कि उनका ध्यान रखा जा रहा हैं और वे एक दूसरे की भलाई के लिए तत्पर हों।

सामग्री की रूपरेखा :–
(1) समझ विकसित करें – विद्यालय में दृष्टिकोण लेने, शिष्य/अभिभावकों को समझना, व्यक्तिगत–सामाजिक गुणों और अवसरों को समझना, जहाँ इन गुणों का पोषण किया जा सकता हैं।
(2) विद्यालय और कक्षा में एक स्वस्थ परिवेश प्रदान करने के लिए आवश्यक गुण और कौशल, संवेदनशीलता और देखभाल, विश्वसनीयता, स्वयं और दूसरों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण, प्रभावी संप्रेक्षण कौशल और परानुभूति।
(3) शारीरिक और भावनात्मक रूप से सुरक्षित और स्वस्थ परिवेश के बारे में जानकारी।

सुरक्षित और स्वस्थ विद्यालय परिवेश निर्मित करने के लिए व्यक्तिगत–सामाजिक योग्यता का विकास– एक परिचय (डॉ. सुष्मिता चक्रवर्ती)

. व्यक्तिगत सामाजिक गुण वह हैं जो हमें अपने व्यक्तिगत, पेशेवर और सामाजिक जीवन में संबंधों को समझने तथा उन्हे स्वस्थ और प्रभावी बनाने में मदद करते हैं।
. इस कोर्स का उद्देश्य मुख्य रूप से व्यक्तिगत–समाजिक गुणों को समझना है और स्वयं के व्यक्तिगत –सामाजिक गुणों को और कौशलों को प्रतिबिंबित करना हैं ताकि आप छात्रों में इन गुणों का पोषण भलीभांति कर सकें।

पाठ्यक्रम सामग्री तीन भागों में विभाजित हैं –

- ❖ पहला भाग समझ विकसित करने के लिए केन्द्रित हैं जिनमे चार हिस्से हैं –
  - पहला हिस्सा परिप्रेक्ष्य लेने के बारे में समझना
  - दूसरा व्यक्तिगत सामाजिक गुणों को समझना
  - तीसरा स्कूल में अवसर जहां व्यक्तिगत सामाजिक गुणों का पोषण किया जा सकता हैं
  - और चौथा सीखने–सीखाने वालों को समझना

Scanned by CamScanner

❖ इस पाठ्यक्रम का दूसरा भाग पाँच व्यक्तिगत सामाजिक गुणों के बारे में हैं जिसको सीखना हैं और उन्हें अपने छात्रों में कैसे पोषित किया जाए इस बारे में केंद्रित हैं

❖ तीसरा और अंतिम भाग विभिन्न सूचनाओं के बारे में हैं जिनके बारे में स्कूल और कक्षा में शारीरिक और भावनात्मक रूप से सुरक्षित वातावरण बनाने के लिए किसी को भी जागरूक होने की आवश्यकता हैं।

सुरक्षित और स्वस्थ विद्यालय परिवेश निर्मित करने के लिए व्यक्तिगत–सामाजिक योग्यता –

शिक्षक प्रभावी सुगमकर्ता के रूप में विद्यार्थियों को न केवल ज्ञान प्रदान करके और उनके संज्ञानात्मक कौशलों को विकसित करके , बल्कि व्यक्तिगत–सामाजिक गुणों, आवश्यक कौशलों, जैसे – व्यक्तिगत तथा सामाजिक संबंधों में प्रभावी ढंग से संवाद करने के कौशलों को विकसित करके , विद्यार्थियों के समग्र विकास को सुनिश्चित करने में महत्वपर्ण भूमिका निभाते हैं, ताकि वे अपने व्यक्तिगत, सामाजिक और शैक्षणिक जीवन के हर स्तर पर अपना सर्वश्ष्ठ प्रदर्शन करने में सक्षम हों। कक्षा/विद्यालय में, शिक्षकों, विद्यार्थियों और अन्य हितधारकों द्वारा व्यक्तिगत–सामाजिक गुणों, जैसे – देखभाल, चिंता, संवेदनशीलता, स्वीकृति, परानूभुति , सहयोग आदि को अपनाना और प्रदर्शित करना, एक अनूकुल वातावरण बनाने में मदद करता है, जो अधिगम के लिए पूर्व शर्त है।

21वीं सदी में आभासी (वर्चुअल) दुनिया में हम बातचीत के लिए कई अवसरों से घिरे हुए हैं। परिणामस्वरूप वास्तविक दुनिया में सार्थक बातचीत करने की आवश्यकता कम होती जा रही है। हालाँकि, विद्यार्थियों को वास्तविक वैश्विक संबंधों के मूल्यों का पोषण और स्वस्थ पारस्परिक संबंधों के निर्माण तथा पोषण हेतु अपनी क्षमताओ के ं विकास के लिए, इन प्रभावी संप्रेक्षण कौशलों को बढ़ावा देना उचित है। ये कौशल न केवल घर पर विद्यार्थियों के पारस्परिक संबंधों, परिवार के सदस्यों और मित्रता के लिए, बल्कि एक प्रभावी तथा अनुकूल शिक्षण–अधिगम के माहौल को बनाने के लिए भी महत्वपूर्ण हैं, जिसमें शिक्षक और विद्यार्थी दोनों प्रभावी ढंग से लेन–देन कर सकते हैं, इस प्रकार अधिगम प्रक्रिया एक सार्थक प्रयास है।

व्यक्तिगत– सामाजिक कौशल विकसित करने के आधार – एक दृष्टिकोण (डॉ. रूचि शुक्ला)

- हमारा अनुभव हमारे अतीत के अनुभवों , मान्यताओं, हमारी सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर काफी हद तक निर्भर करता हैं। जैसे – पानी शब्द को सुनकर हम अलग अलग कल्पनायें पानी के लिए कर सकते हैं।
- जब हम दूसरों के दृष्टिकोण का सम्मान करते हैं तो हम संवेदनशील होने की नींव रखते हैं
- विभिन्न परिस्थितियों में समायोजन, चुनौतीपूर्ण स्थितियों का सामना करना, प्रभावी ढंग से पारस्परिक संबंधों का प्रबंधन करना और इस तरह से स्वस्थ वातावरण का निर्माण करना एक शिक्षक होने के नाते हममें होना चाहिए।

Scanned by CamScanner

विद्यालय/कक्षा में व्यक्तिगत–सामाजिक गुणों की भूमिका –

हम चीजों को अलग तरह से देखते हैं, जो अभिप्राय हम घटनाओ, स्थितियों, मौखिक उक्तियों आदि को देते हैं, वह किसी व्यक्ति की उम्र, व्यक्तिगत अनुभव, शिक्षा, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक पृष्ठभूमि पर निर्भर करता है। ये सभी एक साथ, चिंतन को बढ़ाने, अभिनय, प्रतिक्रिया, परिस्थितियों को एक विशेष प्रकार से समझने के लिए विकसित होते हैं, जो व्यक्तियों और परिस्थितियों को समझने के लिए हमारे मानसिक रुझान/प्राथमिकताएँ बन जाते हैं। यह वही प्रवृत्ति (या मानसिकता) है जो दूसरों को समझने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करती है, जिसे व्यक्ति बातचीत करने के साथ–साथ, विभिन्न स्थितियों को ग्रहण करता है, जिसका अनुभव उसे घर, विद्यालय, पड़ोस और जीवन में प्राप्त होता है। दृष्टिकोण से प्रभावित होना/लेना, अन्य व्यक्तियों के दृष्टिकोण से स्थितियों को देखने में सक्षम होने की क्षमता/सामर्थ्य है। यह दूसरों के दृष्टिकोण को सुनने और अवबोधन करने,दूसरों की भावनाओं को पहचानने और समझने के लिए प्रोत्साहित करता है, एक वैकल्पिक वास्तविकता के बारे में सोचता है, एक नए दृष्टिकोण से चीजों की कल्पना करता है, परानुभूति रखता है, सक्रिय रूप से परस्पर विरोधी स्थितियों में समाधान तलाशता है, संवेदना और टीम भावना के साथ काम करता है। दूसरे शब्दों में, दृष्टिकोण लेने की क्षमता एक आधार बनती है जो किसी व्यक्ति को संवेदनशील तथा मददगार बनाने में, देखभाल करने में तथा दूसरों के विचारों, भावनाओं, कार्यों और परिस्थितियों की सराहना करने में सहायता करती है। विद्यालय में और साथ ही एक कक्षा की स्थिति में, (आभासी कक्षा सहित) जब शिक्षक और छात्र, दोनों एक दूसरे के दृष्टिकोण को समझने और उसकी सराहना करने के लिए इस तरह के आधार के साथ लेन–देन करते हैं, यह व्यक्तिगत–सामाजिक गुणों का अभ्यास करने की सुविधा प्रदान करता है, इस प्रकार एक स्वस्थ कक्षा और विद्यालय के परिवेश में योगदान मिलता है।

व्यक्तिगत–सामाजिक गुण –

विद्यालय, विद्यार्थियों के जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता हैं – विशेष रूप से वहाँ बिताए जाने वाले वर्षों की संख्या को देखते हुए। विद्यार्थियों को विद्यालय में, विविध अनुभव प्राप्त होते हैं (शिक्षण, कक्षा–शिक्षण, निर्देश, सफलता या असफलता, शिक्षक, प्रधान अध्यापक और अन्य विद्यार्थियों के साथ बातचीत से संबंधित), जो उनके जीवन पर बहुत प्रभाव डालते हैं। विद्यालय का वातावरण विद्यार्थियों के लिए, उनके व्यक्तिगत–सामाजिक गुणों को विकसित करने के लिए एक संदर्भ बनाता है, जो उनके जीवन के सभी पहलुओ में, उनके अधिगम और व्यवहार को प्रभावित करता है।

विद्यार्थियों की अधिगम प्रक्रिया में भावनाएँ एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जैसे – उनका शिक्षा की ओर क्या दृष्टिकोण है और वे क्या सीखते हैं। सकारात्मक भावनाएँ, जैसे –खुशी, उत्साह, आदि प्रेरणा को बढ़ाती हैं और अधिगम और प्रदर्शन को सुविधाजनक बनाती हैं। नकारात्मक भावनाएँ, जैसे – क्रोध, उदासी, अपराधबोध, रोष, असुरक्षा और संबंधित भावनाएँ, अर्थात सजा का डर, उपहास, लांछन लगाना आदि आमतौर पर प्रेरणा से ध्यान हटाती हैं और अधिगम में बाधा डालती हैं। इसलिए यह समझना महत्वपूर्ण है कि विद्यार्थी भावनाओं के साथ कक्षाओ में आते हैं और विद्यार्थी जीवन के बारे में पूर्वाग्रह रखते हैं। विद्यार्थियों को सुरक्षित

Scanned by CamScanner

और स्वीकृत महसूस कराने के लिए सकारात्मक कक्षा वातावरण को बढ़ावा देना आवश्यक है। जब शिक्षक यह दर्शाते हैं कि वे विद्यार्थियों को जानने और उनकी मदद करने में रुचि रखते हैं, उनका ध्यान रखते हैं, तो विद्यार्थी न केवल भावनात्मक रूप से सुरक्षित महसूस करते हैं, बल्कि अपने दिन–प्रतिदिन के व्यवहार में ऐसे गुणों को दोहराने की भी कोशिश करते हैं।
इसलिए आवश्यक है कि शिक्षक बच्चों के अधिगम और समग्र विकास के लिए एक महत्वपूर्ण समर्थन के रूप में, इन गुणों और कौशलों के महत्व को समझें।विद्यालय में, जब विद्यार्थी समूहों में काम करते हैं, तो उनकी विविध पृष्ठभूमियाँ और अद्वितीय अनुभव, व्यक्तिगत विशेषताओं, रुचि और क्षमताओं के साथ अपने व्यक्तिगत–सामाजिक गुणों के विकास में योगदान करती हैं। व्यक्तिगत और सामाजिक क्षमता विद्यार्थियों को आत्मविश्वास से परिपूर्ण व्यक्ति बनने में सहायता करती है जिससे विद्यार्थी अपने जीवन के हर पहलू में उचित निर्णय लेने में सक्षम बनते हैं।
एक प्रभावी सहायक के रूप में शिक्षक, शिक्षार्थियों के विश्वास, उनकी भावनाओं, उनकी विचार प्रक्रियाओं और व्यवहार में बदलाव की सुविधा प्रदान कर सकते हैं ताकि वे अपने शैक्षणिक कार्यों पर ध्यान केंद्रित कर सकें तथा अपने व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन के हर पहलू में अपने स्तर पर सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर सकें ।
वे शिक्षक जो संप्रेक्षण, कक्षा–प्रबंधन और उचित अनुशासन तकनीकों में कुशल हैं, एक सकारात्मक अधिगम माहौल बनाते हैं। यद्यपि, उनका विषय–क्षेत्र से अच्छी तरह से परिचित होना महत्वपूर्ण है, विद्यार्थियों को समझाने हेतु आवश्यक अवधारणाओं को करने में सक्षम होना महत्वपूर्ण है। अपने प्रभावी संप्रेक्षण कौशल के माध्यम से शिक्षक, विद्यार्थियों को सार्थक और प्रभावी ढंग से संवाद करना सीखने में मदद करते हैं। व्यक्तिगत–सामाजिक गुणों को पहचानने और प्रदर्शित करने से वे विद्यालय में विद्यार्थियों और अन्य लोगों के साथ अधिक सहायक एवं उत्साहजनक तरीके से पारस्परिक क्रिया करते हैं तथा व्यवहार संबंधी दिशा निर्देश निर्धारित करते हैं। इसलिए शिक्षक अपनी दक्षता और कौशल के माध्यम से विद्यार्थियों में भी इसे बढ़ावा देते हैं।
वर्तमान परिस्थितियों में, COVID–19 महामारी के कारण, कक्षा की अधिकांश बातचीत एक आभासी (वर्चुअल) मंच पर होती है, जो अपने छात्रों के प्रति इन गुणों को प्रदर्शित करने के लिए शिक्षकों की भूमिका पर प्रकाश डालती हैं।

विद्यालय में व्यक्तिगत–सामाजिक योग्यता के पोषण के अवसर

पाठ्यक्रम के माध्यम से व्यक्तिगत–सामाजिक गुणों का पोषण – पाठ्यक्रम संज्ञानात्मक विकास के साथसाथ व्यक्तिगत–सामाजिक क्षमता के विकास के लिए स्थान प्रदान करता है। शिक्षकों को इन क्षेत्रों का अवलोकन करने की आवश्यकता है। शिक्षा सामग्री को पढ़ाने के दौरान कुछ गुणों के विकास को उजागर करने वाली शिक्षण–अधिगम प्रक्रियाओ के माध्यम से पाठ्यक्रम को पढ़ाएँ। उदाहरण के लिए, पाठ्यपुस्तकों में विज्ञान और सामाजिक विज्ञान में दी गई गतिविधियों को यदि विद्यार्थियों के समूह बनाकर संचालित किया जाए तो विद्यार्थियों में निर्णय लेने की और समूह निर्माण की क्षमता मजबूत होती है। स्वास्थ्य, खेल, शारीरिक शिक्षा, कला शिक्षा, कुछ अन्य पाठ्यक्रम क्षेत्र भी हैं जो इन गुणों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

Scanned by CamScanner

विद्यालय की विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से व्यक्तिगत–सामाजिक गुणों का पोषण – सुबह की सभा, वार्षिक दिवस, त्योहारों का जश्न, यहाँ तक कि मध्याह्न भोजन, किचन गार्डन, पर्यावरण संघ (इको क्लब), युवा संघ (युथ क्लब) इत्यादि भी सामाजिक–व्यक्तिगत गुणों और जीवन–कौशल को विकसित करने के लिए पर्याप्त स्थान प्रदान करते हैं, जैसे –पर्यावरण संरक्षण, समूह कार्य (टीम वर्क), समस्या समाधान, महत्वपूर्ण सोच, रचनात्मकता आदि के प्रति संवेदनशीलता।

पुस्तकालय –एक समृद्ध स्त्रोत

पुस्तकालय में कहानियों /पुस्तकों आदि को समूह में पढ़कर चर्चा कर सकते हैं। विभिन्न क्रियाकलापों, कहानी, पुस्तकों आदि से संबंधित विचारात्मक सत्रों का आयोजन भी किया जा सकता है। बच्चों से संबंधित अच्छा साहित्य, उपरोक्त गुणों एवं कौशलों का विकास करने में सहायता करता है।

पूर्व–व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से व्यक्तिगत–सामाजिक गुणों का पोषण (उच्च प्राथमिक स्तर पर) – इन दिनों, छठी कक्षा से शुरू होने वाली व्यावसायिक शिक्षा पर जोर दिया जा रहा है। इसके तहत, विद्यालयों को कुछ उत्पादक कार्य गतिविधियों की पहचान करने और इसे गणित, विज्ञान आदि के साथ एकीकृत करने की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए, इतिहास पढ़ाते समय हम अक्सर संग्रहालय, विभिन्न स्थानों पर स्मारकों की अवधारणाओ पर विचार कर सकते हैं और पढ़ाते समय शिक्षक, यात्रा तथा पर्यटन को व्यावसायिक शिक्षा क्षेत्रों में पेश कर सकते हैं। यह विद्यार्थियों को कक्षा 9 में उनके व्यावसायिक शिक्षा पाठ्यक्रम को चुनने में मदद करेगा। पूर्व–व्यावसायिक शिक्षा से उन्हें जोड़ने वाली गतिविधियों का संचालन करने से बच्चों के व्यक्तिगत–सामाजिक गुणों, जैसे– निर्णय लेने, समस्या सुलझाने, संप्रेक्षण आदि को विकसित करने में मदद मिलती है।

प्रत्येक गतिविधि करते समय स्वयं विचार करें

- क्या विद्यार्थी प्रयोगशाला में प्रयोग करते समय या सामाजिक विज्ञान का अध्ययन करते समय व्यक्तिगत–सामाजिक गुणों का अभ्यास करना सीख सकते हैं?
- सुबह की सभा में भाग लेते समय विद्यार्थियों में किन गुणों का पोषण किया जा सकता है?

प्राथमिक स्तर के शिक्षार्थियों को समझना

- प्राथमिक स्तर पर शिक्षार्थियों के प्रमुख सरोकार क्या हैं?
- क्या वे उन लोगों से अलग हैं जो उच्च प्राथमिक स्तर में हैं?

विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक और सामाजिक–व्यक्तिगत विकास का अवलोकन करते हुए शिक्षक प्रारंभिक चरण के शिक्षार्थियों की विभिन्न शैक्षणिक, व्यक्तिगत और सामाजिक भावनात्मक जरूरतों से परिचित होते हैं, ताकि वे इन आवश्यकताओं को पूरा करने में सहयोग कर सकें । ये आवश्यकताएँ हैं –

- घर / प्ले स्कूल से औपचारिक विद्यालयी शिक्षा तक के बदलाव को सहज बनाना।
- विद्यालय में लोगों के साथ समायोजन करना।
- अपने कार्यों की जिम्मेदारी लेना, विशेष रूप से शिक्षा संबंधी।

Scanned by CamScanner

• व्यक्ति से संबंधित शारीरिक, भावनात्मक और सामाजिक जागरूकता पैदा करना और यह समझना कि वे एक–दूसरे से अलग होते हैं।

• स्वस्थ आदतों का विकास करना (स्वस्थ आहार लेना, स्वच्छता और व्यक्तिगत वस्तुओं की व्यवस्था करना)।

• आत्म–छवि और आत्मसम्मान का विकास करना।

• सहपाठियों के साथ स्वस्थ संबंध स्थापित करना।

• स्वस्थ सामाजिक संबंधों के पोषण के लिए उचित सामाजिक कौशलों का निर्माण करना।

• कक्षाओं में विविधता की समझ विकसित करना।

• उन सभी के लिए प्रशंसा और सम्मान विकसित करना जिनके साथ वह अपनी जाति, धर्म, जेंडर आदि की भिन्नता के बावजूद बातचीत करता है।

• समूह के सदस्य के रूप में सामूहिक बोध, समस्या समाधान और निर्णय–क्षमता आदि को विकसित करना।

• संघर्ष की स्थितियों और लोगों की पहचान करना सीखना।

• स्वतंत्र रूप से और समूहों में सहयोग करते हुए मिल–जुलकर काम करने की क्षमता।

• समय का सार्थक उपयोग करना सीखना (अपने शैक्षणिक कौशल में सुधार के लिए)।

• अपनेपन, प्रशंसा और स्वीकार्यता की भावनाओ को विकसित करना।

• शैक्षणिक विकल्पों का चयन करना, शैक्षणिक लक्ष्यों को स्थापित करने में सक्षमता और आत्मविश्वास की भावनाओ का संप्रेक्षण करना ।

उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षार्थियों को समझना –

शिक्षा के उच्च प्राथमिक चरण में, शिक्षार्थियों की कुछ जरूरतें, जिनमें शिक्षक सुविधा और सहयोग प्रदान कर सकते हैं, इस प्रकार हैं –

• शैक्षणिक सफलता के लिए अध्ययन कौशल को लागू करना।

• अधिगम सहायक सामग्री , उपकरण और तकनीकों का पर्याप्त रूप से उपयोग करना सीखना।

• काल्पनिक प्रश्नों को उठाना और उत्तर खोजने के लिए प्रोत्साहित किया जाना।

• स्पष्टता के साथ सोच और भावनाओं को संप्रेषित करना सीखना।

• स्वयंमें शारीरिक परिवर्तनों को सामान्य मानने की क्षमता।

• स्वयं और साथियों के बीच शारीरिक विकास की दर में अंतर को समझना और स्वीकार करना।

• साथियों के साथ मित्रता का विकास करना।

• पारंपरिक जेंडर भुमिकाओ और रूढ़ियों को समझना।

• विभिन्न सामाजिक परिवेश (विद्यालय, घर, ट्यशून क्लास आदि) में मित्र बनाना।

• अपनेपन, प्रशंसा और स्वीकार्यता की भावनाएँ विकसित करना, विशषेकर मित्रों और साथियों के साथ।

Scanned by CamScanner

• संज्ञानात्मक और भावात्मक स्वतंत्रता को विकसित करना, विशषे रूप से अपनी भावनाओं के साथ–साथ दूसरों की भावनाओं के बारे में जागरूक होना।

व्यक्तिगत सामाजिक गुणवत्ता के रूप में सवेदनशीलता और देखभाल –

किसी भी पारस्परिक संबंध के निर्माण, उसे बनाए रखने और उसमें सुधार के लिए संवेदनशील होना और एकदूसरे की देखभाल करने का गुण, आवश्यक प्राथमिक गुणों में से एक है। शिक्षण–अधिगम के वातावरण में ये गुण शिक्षक–विद्यार्थी, विद्यार्थी–विद्यार्थी, शिक्षक–शिक्षक आदि के बीच के संबंध को विकसित करने और मजबूत करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

कक्षा में जब शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों के प्रति और विद्यार्थियों द्वारा शिक्षकों एवं परस्पर दूसरे विद्यार्थियों के प्रति मौखिक और गैर–मौखिक व्यवहार के माध्यम से संवेदनशीलता और देखभाल, जैसे भाव प्रदर्शित किए जाते हैं। इससे एक–दूसरे के बारे में बिना कोई धारणा बनाए, उनके गुणों और अवगुणों की समझ विकसित होती है। यह भावना सभी को उनकी कमजोरियों में सुधार करने और उनकी क्षमताओंको मजबूत करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करती है और इस प्रकार मनोवैज्ञानिक रूप से सुरक्षित और अनकूल वातावरण बनता है।

संवेदनशीलता में जेंडर, संस्कृति, दिव्यांगता, सामाजिक हानि, मानवाधिकार आदि जैसे संवेदनशील मुद्दों के प्रति अपने स्वयं के दृष्टिकोण में जागरूकता शामिल है, जो किसी के कार्यों (विचार, भावना और व्यवहार में) को पहचानने में मदद करती है। संवेदनशीलता शिक्षकों को, निष्पक्ष तरीके से अपने विद्यार्थियों के गुणों, अवगुणों,विशेष योग्यताओं आदि को जानने, समझने और मूल्यांकन करने में सहायता करती है। एक संवेदनशील और देखभाल करने वाला व्यक्ति होने के लिए अपने स्वयं के और दूसरों के भावों का अच्छा पर्यवेक्षक होना आवश्यक है, किसी की मौखिक और गैर–मौखिक अभिव्यक्तियों के माध्यम से भावनाओ और ंविचारों को समझने की क्षमता, स्वयं और दूसरों को स्वीकार करने की क्षमता बिना किसी पक्षपात के , किसी के संसाधनों को साझा करने की क्षमता (शारीरिक, संज्ञानात्मक आदि), गरिमा और दूसरों के संसाधनों के प्रति सम्मान दिखाते हैं। संवेदनशील होने और देखभाल करने के लिए भी धैर्यकी आवश्यकता होती है और दूसरों को भी उसी के साथ संवाद करना पड़ता हैं

विद्यार्थियों में संवेदनशीलता और देखभाल का पोषण करना (डॉ. मोनिका वर्मा) –

- एक शिक्षक की सबसे महत्वपूर्ण व्यक्तिगत सामाजिक गुणवत्ता संवेदनशील होना और छात्रों के बीच उस संवेदनशीलता को बढ़ावा देना हैं।
- हम सबके व्यवहार अलग अलग हो सकते हैं परन्तु मनुष्य के रूप में हम अपनी भावनाओं के संदर्भ में बहुत समान हैं और हम सभी को संबंधिता और स्वीकृति की आवश्यकता होती हैं।

Scanned by CamScanner

- संवेदनशीलता का अर्थ हैं बिना किसी पक्षपात के अपने आप को और दूसरों को स्वीकार करने की क्षमता और दूसरों के प्रति सम्मान और करूणा दिखाना यह छात्रों का समझाया जाना चाहिए।

विश्वसनीयता को समझें और विद्यार्थियों में उसका पोषण करें –

शिक्षक–विद्यार्थी संबंध यह सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है कि विद्यार्थियों को न केवल कक्षा और विद्यालय में, बल्कि एक व्यक्ति के रूप में भी अच्छा महसूस हो। जब विद्यार्थियों को पता चलता है कि उनके शिक्षक वास्तव में उनका सम्मान करते हैं और उन्हें पसंद करते हैं : ईमानदारी से उनकी भलाई के बारे में चितिंत होते हैं, न केवल विद्यार्थी के रूप में, बल्कि उनके जीवन के अन्य सभी पहलुओ (घर पर, दोस्तों आदि) के बारे में भी उनके प्रदर्शन की परवाह करते हैं, तब वे कक्षा में ध्यान देने के लिए अधिक उत्साही और उत्कृष्ट प्रयास करते हैं। ऐसे में, शिक्षक अपने विद्यार्थियों के प्रति विश्वसनीयता के गुण का प्रदर्शन करते हैं, तो विद्यार्थी आगे चलकर अपने रिश्तों और संबंधों में उसी तरह का प्रदर्शन करना सीखते हैं।

विश्वसनीय होना काफी हद तक एक व्यक्ति की सच्चे होने की क्षमता पर आधारित होता है और वह स्वयं और दुसरों की भावनाओं और विचारों के प्रति ईमानदार होता है। इसके लिए अपनी भावनाओं और विचारों को खुलकर और स्पष्ट रूप से व्यक्त करना चाहिए, किसी का अनादर किए बिना प्रतिक्रिया देनी चाहिए। कक्षा में जब शिक्षक और विद्यार्थी ईमानदारी, खुले और स्पष्ट रूप से अपनी दूसरों पर निर्भरता और वास्तविकता को व्यक्त करते हैं, तो वे एक–दूसरे के लिए अपना सम्मान, वास्तविक रुचि और संबद्धता व्यक्त करते हैं साथ ही, एक–दूसरे के गुणों और क्षमताओं पर भरोसा करते हैं। यह शिक्षक और विद्यार्थी के साथ–साथ विद्यार्थियों के आपसी संबंधों को भी मजबूत करते हैं। इसके परिणामस्वरूप वे अधिक ध्यान देने और उत्साह के साथ काम करने के लिए प्रेरित होते हैं।

शिक्षकों को प्रभावी सुगमकर्ता के रूप में, अपने विद्यार्थियों की क्षमताओं के प्रति वास्तविक रुचि, चिंता और विश्वास व्यक्त करने की आवश्यकता है। इसके लिए उन्हें स्वयं के विचारों, भावनाओ, ं विद्यार्थियों के प्रति कार्यों, उनकी विशिष्टता के लिए उनका सम्मान करने और उन्हें स्वीकार करने के लिए जागरूक होने की आवश्यकता है।

जब आपके शब्दों, कार्यों और भावनाओं में एक संगतता होती है, तब आपका किसी विद्यार्थी में रुचि लेना जाहिर होता है। उदाहरण के लिए, जब आप कह रहे होते हैं कि आप विद्यार्थी द्वारा कही जा रही बातों को सुन रहे हैं, तो आपको अपनी मुद्रा (आगे की ओर झुकना) और इच्छुक भाव–भंगिमा (आँखों का संपर्क) आदि को भी प्रदर्शित करना चाहिए जिससे विद्यार्थी को स्पष्ट हो कि आप उसे सुन रहे हैं। शिक्षकों को न केवल अपने विद्यार्थियों में रुचि लेने और उनके साथ होने का उन्हें अनुभव कराना चाहिए, बल्कि गैर–शाब्दिक व्यवहार के माध्यम से अपनी वास्तविक रुचि को भी व्यक्त करना चाहिए।

विश्वसनीयता के महत्व को समझाने के लिए (अतिरिक्त संसाधन विडियो फिल्म) –

इसमें शिक्षिका के बालक के प्रति नकारात्मक व्यवहार के परिणाम को दर्शाया गया हैं जिससे बालक शिक्षिका पर विश्वास नही करता हैं और सहम जाता हैं।

Scanned by CamScanner

अतिरिक्त संसाधन : विद्यार्थियों के बीच विश्वास बनाने की रणनीतियाँ

कुछ बिंदुओं के माध्यम से विद्यार्थियों के साथ आपकी बातचीत में वास्तविक लगाव और रुचि का संप्रेषण किया जा सकता है –

» विद्यालय/कक्षा में प्रवेश करते समय विद्यार्थियों का मुस्कराहट के साथ अभिवादन करना।

» उन्हें उनके नाम से बुलाना (कक्षा के साथ–साथ विद्यालय में कक्षा के बाहर भी)।

» उनसे पूछना कि, "आज आप कैसा महसूस कर रहे हैं" या "दिन कैसा चल रहा है" आदि और ध्यान से सुनना कि वे क्या कह रहे हैं। यह उन विद्यार्थियों के लिए विशेष रूप से उत्साहजनक हो सकता है, जो शर्मीले होते हैं और स्वयं को व्यक्त नहीं कर पाते हैं।

» आँखों से संपर्क बनाना और विद्यार्थियों की उपस्थिति, उनके मूक प्रयासों और उनकी सराहना करना।

» विद्यार्थियों को व्यक्तिगत रूप से बेहतर तरीके से जानने के लिए प्रश्न पूछना। उनके बारे में जानना आपकी वास्तविक रुचि को भी व्यक्त करता है। यहाँ कुछ आदर्श प्रश्न दिए गए हैं –

- खाली समय होने पर आप क्या करेंगे?
- यदि आपको अपना परिचय देना पड़े तो आप अपने बारे में क्या बताएगे?
- क्या करने से आपको सबसे ज्यादा खुशी मिलती है?
- आपको क्या चीज दुखी करती है?
- बड़े होकर आप क्या करना चाहेंगे?

आप कक्षा में एक 'शो–ऑफ' बोर्ड भी लगा सकते हैं, जहाँ हर सप्ताह अलग–अलग विद्यार्थी (स्वयं सेवक या कक्षा द्वारा चयनित विद्यार्थी) अपने बारे में कुछ प्रस्तुत कर सकते हैं जो वे अपने शिक्षक और सहपाठियों से संवाद के माध्यम से कहना चाहते हैं। उदाहरण के लिए, विद्यार्थियों द्वारा लिखित कविताएँ, यदि कोई कविताएँ लिखना पसंद करता है तो कोई उसकी लिखी हुई कविता/हाल ही में लिखी गई कोई कविता, विद्यालय में या घर पर हुई खुशी की कोई बात, घर पर होने वाली चीजें जिसके लिए विद्यार्थी बहुत खुश होता है, इसलिए वे उसके बारे में लिखते हैं और उसे लगाते हैं। दुसरे शब्दों में, ऐसा कुछ भी लगाया जा सकता है, जो कक्षा को किसी विद्यार्थी के बारे में अधिक जानकारी देगा।

» अन्य शिक्षकों के साथ सहयोग करना और विद्यालय में विद्यार्थियों के गुणों एवं विशेषताओ को साझा करना।

» माता–पिता के साथ शिक्षक बैठकों (पी.टी.एम.) के दौरान विद्यार्थियों के बारे में और उनके व्यवहार में सधुार लाने के लिए, सहपाठियों और विद्यालय में अन्य सभी (शिक्षणेत्तर कर्मचारियों सहित) के साथ उनके व्यवहार एवं बातचीत के बारे में सकारात्मक प्रतिक्रिया देना महत्वपूर्ण है।

स्वयं और दूसरों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण

शिक्षकों के लिए आशावादी होना और अपने भीतर तथा अपने विद्यार्थियों में सकारात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा देना बहुत महत्वपूर्ण है। अपने विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा स्रोत होने के नाते, शिक्षक अपने सकारात्मक दृष्टिकोण, विद्यार्थियों में भी विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। न केवल विद्यार्थियों के लिए, बल्कि उनके माता–पिता, सहकर्मियों और विद्यालयी वातावरण में काम करने वाले अन्य लोगों के लिए भी देखभाल, चिंता और सम्मान

Scanned by CamScanner

के पर्याप्त प्रदर्शन की आवश्यकता है। स्वयं के सशक्तिकरण के अलावा, शिक्षक इसे अपने विद्यार्थियों के लिए प्रदर्शित कर सकते हैं, जो अपनी बढ़ती आयु में, एक शिक्षार्थी के रूप में और अपने अंतर–व्यक्तिगत संबंधों में कई बाधाओ का सामना करते हैं। कुछ ऐसे गुण जो स्वयं और दूसरों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को उजागर करते हैं, वे हैं, स्वयं में और दूसरों के भीतर अच्छाई देखना तथा महसूस करना, पहल करना एवं दूसरों को अग्रणी बनाना, सहयोगी होना, क्रीड़ाशीलता आदि।

स्वयं और दूसरों में अच्छाई देखना (प्रो. रत्नमाला आर्य) –

सारिका और कल्पना शिक्षिका साथियों का विडियों जिसमें सारिका अपनी नई साथी कल्पना के बारे में नकारात्मक दृष्टिकोण को बदलकर सकारात्मक दृष्टिकोण बनाती हैं।

व्यक्तिगत–सामाजिक कौशल के रूप में प्रभावी संप्रेक्षण –

शिक्षण में प्रभावी रूप से संवाद करना शामिल है। प्रभावी संप्रेक्षण में, बोलने, सुनने, प्रस्तुत करने, पढ़ने और साथ ही लेखन शामिल है। प्रभावी संप्रेक्षण कौशल की अच्छी समझ रखने वाले शिक्षक विद्यार्थियों, अभिभावकों और स्कूल प्रशासकों के साथ, विद्यार्थियों को पढ़ाने और मार्गदर्शन करने के लिए बेहतर तरीके से तैयार होते हैं।

यदि एक शिक्षक का संप्रेक्षण कौशल (गैर–शाब्दिक सहित, जिसमें बोलना, लिखना, कल्पना करना, विचारों का संगठन इस तरह से शामिल है कि वे समझने योग्य हैं, उनके हाव–भाव और चेहरे के भाव, शरीर की भाषा आदि) अच्छे हैं, तब वे विचारों को अधिक अर्थपूर्ण और रुचिपूर्णतरीके से व्यक्त कर सकते हैं।

चूँकि अच्छे संप्रेक्षण का एक बड़ा हिस्सा इस बारे में जानना है कि जो बोला गया है, क्या वही समझा गया है। शिक्षकों को यह ध्यान रखने की आवश्यकता है कि उन्होंने कब प्रभावी ढंग से संप्रेक्षण किया है और कब वे ऐसा करने में सफल नहीं हुए हैं। उन्हें अपने विद्यार्थियों के लिए भी ऐसा करने की जरूरत है और उन्हें विद्यार्थियों को अपने संप्रेक्षण कौशल का निरीक्षण करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। शिक्षक को यह सुनिश्चित करना होगा कि वह जो कह रहा है, वह सभी विद्यार्थी समझ रहे हैं (उनकी विविध आवश्यकताओ और पृष्ठभूमि के बावजूद)। संप्रेक्षण में सही से इस बात की व्याख्या भी शामिल होती है कि सौंपा गया कार्य क्या है और सौंपे गए कार्य से क्या अपेक्षाएँ हैं? जब विद्यार्थी यह पूरी तरह से समझते हैं कि उनसे क्या उम्मीद की जाती है, तो उनके लिए प्रदर्शन करना बहुत आसान हो जाता है।

संप्रेक्षण में यह बताना भी शामिल है कि असाइनमेंट क्या हैं और सौंपे गए कार्यों से क्या अपेक्षाएँ हैं। जब विद्यार्थी पूरी तरह से समझते हैं कि उनसे क्या उम्मीद की जाती है, तब उनके लिए प्रदर्शन करना और उसे पूरा करना बहुत आसान होता है।

प्रभावी संप्रेक्षण कौशल में अभिव्यक्ति (शाब्दिक और गैर–शाब्दिक), प्रभावी ढंग से सुनने और प्रतिक्रिया देने का कौशल शामिल है। प्रभावी शिक्षक बनने के लिए शिक्षकों को सचेत श्रोता होना चाहिए। इसलिए सीखने के एक आदर्श माहौल में, शिक्षकों को प्रश्न उठाने और फिर सक्रिय रूप से, सावधानीपूर्वक, समानुभूतिपूर्वक तरीके से, सीखने वाले क्या कह रहे हैं, इसे सुनने व तदअनुसार जवाब देने की आवश्यकता होती है।

Scanned by CamScanner

सुनना और प्रतिक्रिया देना –

संप्रेक्षण के सभी आयामों में सुनना एक बहुत ही महत्वपूर्ण पहलू है और यह संबंध बनाने में विशेष रूप से मदद करता है। यह सचेत होकर सुनने का कौशल है जो एक प्रभावी सहायक बनने के लिए आवश्यक है। इस प्रकार सुनने से, शिक्षक विद्यार्थियों की शाब्दिक और साथ ही गैर–शाब्दिक अभिव्यक्तियों और उनके व्यवहार में भाग लेता है।

अतिरिक्त पढ़ना : सुनना और प्रतिक्रिया देना

सुनना, सूचना प्राप्तकर्ता द्वारा दी गई प्रतिक्रिया को संभव करता है। लोग आमतौर पर अपनी दैनिक बातचीत में पाँच प्रकार की प्रतिक्रियाओ का उपयोग करते हैं जिन्हें पाँच अक्षरों ई.आई.एस.पी.य. (EISPU)

E = Evaluative
I = Interpretation
S = Subsidiary
P = Providing in-depth investigation
U = Understanding

द्वारा द्वारा पहचाना जाता है – मूल्यांकनात्मक, व्याख्यात्मक, सहायक, गहराई से जाँच और समझ। प्रत्येक प्रतिक्रिया, उसे देने वाले उत्तरदाता के एक विशिष्ट इरादे को व्यक्त करती है। कुल मिलाकर, इस तरह से जवाब देना महत्वपूर्ण हैं जो विश्वास और खुलेपन को बढ़ाए। इस प्रक्रिया में विद्यार्थियों में भावनाओ को ं प्रकट करने और वस्तुनिष्ठ निर्णय एवं रचनात्मक व्यवहार परिवर्तन का अवसर देना चाहिए।

गैर–मौखिक संप्रेक्षण के माध्यम से दूसरों/स्वयं की भावनाओं को समझना (डॉ. मोनिका वर्मा) (रश्मि और सुलेखा का गैर मौखिक संप्रेक्षण वाला विडियो) –

- संचार का गैर मौखिक भाग उतना ही महत्वपूर्ण हैं जितना कि मौखिक भाग।

परानुभूति –

परानूभुति, दूसरे व्यक्ति की भावनाओं को उसके दृष्टिकोण से समझने की क्षमता है। यह स्वयं को दूसरे व्यक्ति के स्थान पर रखकर महसूस करने जैसा है। जब आप उनके साथ परानूभुति रखते हैं तो विद्यार्थियों की निराशा, गुस्सा, बेबसी, उदासीनता, भय और ऐसी अन्य सभी भावनाएँ अधिक स्पष्ट हो जाती हैं। यह वह कौशल है जो विद्यार्थी को यह महसूस कराता है कि आप उनकी समस्याओं को उनके लिए दुःख व्यक्त किए बिना पहचान सकने में सक्षम हैं।

परानुभूति से जुड़े कौशल

» संप्रेक्षण परानुभूति पूरी तरह से तब शुरू होगी जब हम व्यक्ति के साथ पूर्ण रूप से होंगे अर्थात शारीरिक और मनोवैज्ञानिक, दोनों रूपों में।
» 'सचेतता' को शाब्दिक और गैर–शाब्दिक रूप से संप्रेषित किया जाना चाहिए ताकि विद्यार्थी यह अनुभव कर सके कि आप उसके साथ हैं।

Scanned by CamScanner

» शाब्दिक सचेतता को 'आगे बोलो', उह–अहान', 'हम्म', और सिर हिलाने से इंगित किया जाता है।

» शाब्दिक सचेतता का उपयोग शिक्षक को ध्यान से सुनने की स्थिति में सहायक के रूप में रखता है और समझने की भावना को भी बढ़ाता है। दूसरी ओर, संप्रेक्षण में गैर–शाब्दिक व्यवहार का महत्व अच्छी तरह से स्थापित किया गया है। स्वर के साथ–साथ चेहरे के भाव और हाथ के इशारे किसी भी संदेश को संप्रेषित करने के उपयोगी साधन हैं।

विद्यार्थी के अनुभव करने के तरीकों के साथ तालमेल

परानुभूति को संप्रेषित करने का दूसरा तरीका अपने विद्यार्थियों के अनुभवों की अभिव्यक्ति या उसके अनुभवों के साथ तालमेल रखना है। विद्यार्थियों के शब्दों, आवाज के स्वर, आँखों की हरकत आदि के माध्यम से उनके अनुभवों के साथ तालमेल रखने की कोशिश करने और समान रूप से प्रतिक्रिया देने से परानुभूति का संप्रेक्षण करने में मदद मिलती है।

विद्यार्थी द्वारा अक्सर उपयोग की जाने वाली भाषा और प्रकारों पर ध्यान देना, यह समझने में सहायक हो सकता है कि संवेदी तौर–तरीकों का क्या उपयोग किया जा रहा है। उदाहरण के लिए, यदि कोई अकसर ऐसे भावों का उपयोग करता है, जैसे – मैं जानता हूँ, तुम्हारा क्या मतलब है', यह दिखता है' या यह स्पष्ट रूप से दिखायी दे रहा है, तो यह इंगित करता है कि व्यक्ति आदतन दृश्य अभिव्यक्ति वाले तौर–तरीकों का उपयोग कर रहा है।

एक सुरक्षित और स्वस्थ स्कूल वातावरण बनाना

कक्षा में अधिगम के लिए अनुकूल माहौल बनाने में शिक्षक महत्वपूर्ण भुमिका निभाते हैं। शिक्षकों को पता होना चाहिए कि विद्यार्थी अपने श्रेष्ठ या सर्वोत्तम स्तर तक तभी सीखते हैं जब वे एक ऐसे वातावरण में हों, जो सुरक्षित और अच्छी तरह से संगठित होता है (शारीरिक और भावनात्मक दोनों रूप से)। शिक्षक सभी विद्यार्थियों के लिए कक्षा में ऐसा वातावरण बनाने का प्रयास करते हैं। जब विद्यार्थी सुरक्षित और आत्मविश्वास महसूस करते हैं, तो उन्हें प्रोत्साहित किया जाता है और सक्रिय रूप से उपस्थित होने, भाग लेने, अन्वेषण करने और समझने के लिए प्रेरित किया जाता है जो वे कक्षा में लेन–देन के साथ–साथ उनके आस–पास के वातावरण में भी देखते हैं। इसके लिए शिक्षकों को निम्नलिखित कदम उठाने की आवश्यकता है –

» कक्षा के भीतर ही नहीं बल्कि पी.टी.एम. के दौरान माता–पिता से बात करते हुए हर बच्चे के गुणों को उजागर करें ताकि उसके आत्मसम्मान और आत्मविश्वास को बढ़ावा मिले।

» भरोसेमंद संबंध को विकसित करने के लिए बच्चे और माता–पिता के साथ अनौपचारिक रूप से जुड़ें ताकि बच्चे अपनी व्यक्तिगत समस्याओं के बारे में बात करने से न डरें।

» स्वस्थ कक्षा मानदड और व्यवहार का संचालन करें और सुरक्षित एवं संरक्षित कक्षा वातावरण सुनिश्चित करें।

» असामान्य व्यवहार और तनाव या अवसाद के संकेतों के बारे में सतर्क और सचेत रहें और उनका उचित समाधान करने के लिए रणनीति विकसित करें।

» विभिन्न प्रावधानों और कानूनों के बारे में जानकारी प्राप्त करें जो विद्यार्थियों को उनकी सुरक्षा/शिकायतों के संभावित तरीकों के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं। चाइल्ड हेल्पलाइन और पॉक्सो ई–बॉक्स उनमें से कुछ हैं।

Scanned by CamScanner

चाइल्ड हेल्पलाइन (1098 – 24×7 बच्चों के लिए हेल्पलाइन) सेवाएँ –
चाइल्ड हेल्पलाइन 1098, संकट में, बच्चों के लिए 24 घंटे उपलब्ध निशुल्क (टोल फ्री) एक राष्ट्रीय आपातकालीन फोन सेवा है। वर्तमान में, पूरे देश में 412 स्थानों पर बच्चों के लिए हेल्पलाइन कार्यरत है। चाइल्ड हेल्पलाइन में अप्रैल 2016 से मार्च 2017 के दौरान 1.45 करोड़ कॉल और अप्रैल से नवंबर 2017 के दौरान 78 लाख से अधिक कॉल दर्ज की गई। चाइल्ड हेल्पलाइन, संकट में, बच्चों को टेली–काउंसलिंग या भौतिक मदद के माध्यम से सहायता प्रदान करती है।
पॉक्सो (POCSO — यौन शोषण से बच्चों का संरक्षण)
पॉक्सो ई–बॉक्स बच्चों के खिलाफ यौन शोषण की सरल और प्रत्यक्ष जानकारी देने और पॉक्सो अधिनियम 2012 के तहत अपराधियों के खिलाफ समय पर कार्रवाई करने के लिए एक ऑनलाइन शिकायत प्रबंधन प्रणाली है।
» पॉक्सो ई–बॉक्स का लिंक– http://www- ncpcr-gov-in/User_complaints-php है।

– कोर्स सारांश –

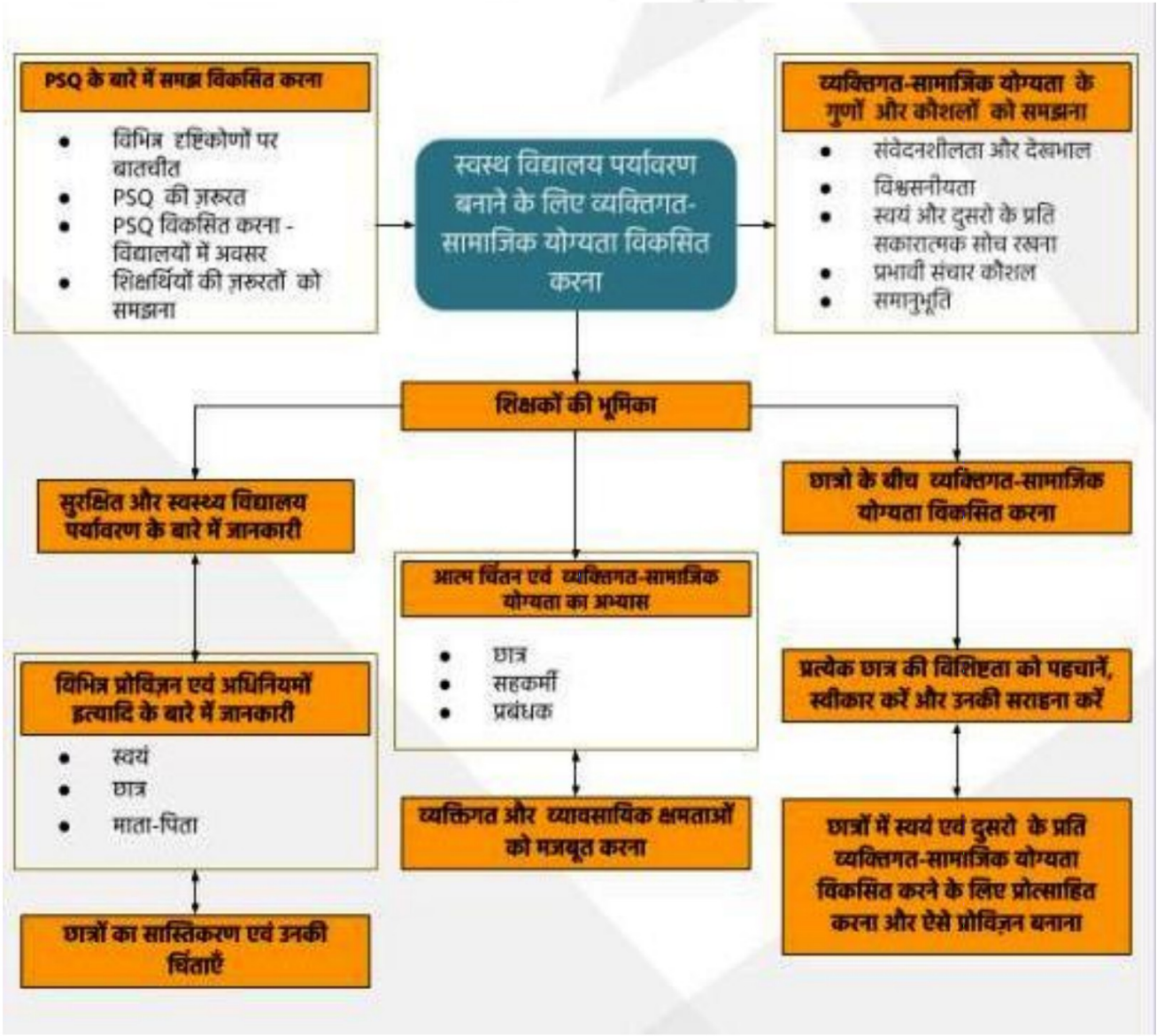

Scanned by CamScanner

पोर्टफोलियो गतिविधि –

व्यक्तिगत सामाजिक गुणों के बारे में समझ के आधार पर, एक सप्ताह के लिए स्वयं के निरीक्षण के रूप में स्वयं के साथ बातचीत (वर्चुअवल मंच पर हो सकता है) विचार करे –

1. कक्षा में आपके छात्र, या
2. आपके स्कूल के प्रिंसिपल / सहकर्मी जिनके साथ आपका मेल नहीं खाता हो, या
3. घर पर अपने बच्चों के साथ

व्यक्तिगत सामाजिक गुणों का अभ्यास करने के लिए आपके पास जो कुछ है, उस पर चिंतन करें। पहचानें कि किस गुणवत्ता का उपयोग किया गया और आपने इसे कैसे व्यक्त किया। आपको यह कैसे पता चला ? अपने पर्यवेक्षणों का समर्थन करने के लिए उपयुक्त साक्ष्य के साथ अपनी दैनिक टिप्पणियों को प्रस्तुत करें।

प्रयास करने की गतिविधियाँ

गतिविधि 1: शिक्षकों के लिए स्वयं और दूसरों में व्यक्तिगत–सामाजिक गुणों की पहचान करने के लिए गतिविधि

» शिक्षकों को एक समूह में बैठाएँ।

» प्रत्येक समूह में, प्रतिभागियों को उन व्यक्तियों की सूची बनाने के लिए कहें, जिनकी वे प्रशंसा करते हैं। ये लोग अपने परिवार, पड़ोस, कार्यस्थल, कक्षा आदि से हो सकते हैं।

» वे आपस में इन लोगों के अच्छे गुणों की चर्चा करें।

» उन गुणों की एक सूची बनाएँ, जिन्हें वे समाज में योगदान करने के लिए विकसित करना महत्वपूर्ण समझते हैं।

» शिक्षकों से उन गुणों को सूचीबद्ध करने के लिए कहें, जिन्हें उन्होंने समूह में कार्य करते समय स्वयं में पहचाना है।

गतिविधि 2 : कक्षा में विविधता के प्रति शिक्षकों में संवेदनशीलता विकसित करने के लिए समूह गतिविधि

आपकी कक्षा में चार–पाँच विद्यार्थी ऐसे हैं जिनके पास घर पर पर्याप्त समय नहीं है कि वे पढ़ाई कर सकें और अपना गृहकार्य कर सकें , क्योंकि उन्हें घर के काम के साथ–साथ अपने माता–पिता की मदद करनी होती है। ऐसे कुछ विद्यार्थी हैं जिन्हें यह समझने में कठिनाई होती है कि कक्षा में क्या पढ़ाया जा रहा है और वे अक्सर बातचीत के दौरान शांत रहते हैं। दो–तीन विद्यार्थी ऐसे भी हैं, जिन्हें तीन वर्ष पहले विद्यालय छोड़ने के बाद दोबारा दाखिल किया गया है और वे कक्षा में शिक्षण पर ध्यान नहीं देते हैं और न ही दूसरों को देने देते हैं। प्रभावी सगुमकर्ता के रूप में आप अपनी संवेदनशीलता और देखभाल को कैसे प्रदर्शित करेंगे –

» उनके शिक्षण–अधिगम में सुविधा और सहयोग प्रदान करके।

» उन्हें स्वीकृत, प्रोत्साहित और प्रेरित महसूस कराकर।

Scanned by CamScanner

गतिविधि 3 : विद्यार्थियों में संवेदनशीलता और देखभाल विकसित करने के लिए गतिविधि :

"हम में क्या समानता है"

» अपनी पूरी कक्षा को एक घेरे में खड़ा करें और उन्हें 1–5 की गिनती करते हुए अलग–अलग करें।

» अब 1 से 5 तक के अलग–अलग समूहों में से सभी 1 अंक वालों को मिलाकर एक समूह बनाएँ। इसी तरह सभी 2,3, 4 और 5 अंक वालों को मिलाकर अलग समूह बनाएँ।

» प्रत्येक समूह को उनके समूह के सदस्यों के साथ बातचीत करने और पाँच चीजें, जो उनमें समान हैं, का पता लगाने के लिए 4–5 मिनट दिए जाते हैं। ये समान चीजें उनकी कक्षा विद्यालय या ऐसी किसी भी चीज से संबंधित नहीं हो सकतीं, जो स्पष्ट रूप से दिखाई देती हों ।

» दिया गया समय पूरा होने पर, प्रत्येक समूह के सदस्य अपना परिचय देकर उन पाँच चीजों को साझा करते हैं जो उनमें समान हैं।

» आप पूरे दिन के लिए नवगठित समूहों को एक साथ बैठा सकते हैं और उस दिन उनको विद्यालय में होने वाली सभी गतिविधियों में एक–दूसरे का सहयोग करने के लिए कह सकते हैं।

गतिविधि 4 : चर्चा के बिंदु

प्रतिभागियों को उन समूहों में विभाजित करें जो विद्यार्थियों, अभिभावकों, शिक्षकों और प्रधान अध्यापकों के रूप में कार्य करेंगे। अभिभावक–शिक्षक बैठक में भाग लेने से पहले समूह के रूप में उनकी भावना के बारे में चर्चा करने के लिए उन्हें पांच मिनट दें।

उन्हें अपनी भावनाओं को साझा करने और चर्चा करने के लिए दो मिनट का समय दें।

गतिविधि 5 : एक–दूसरे के प्रति वास्तविक रुचि, चिंता और सम्मान की गुणवत्ता पर विद्यार्थियों को संवेदनशील बनाने के लिए गतिविधि

» कक्षा को चार समूहों में विभाजित करें (उनकेजेंडर , सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि , क्षमताओं आदि पर ध्यान दिए बिना)।

» दो समूहों (समूह 'क' और समूह 'ख') को एक कार्य दिया जाता है (आप एक दायित्व चुन सकते हैं जिसके लिए इस कार्य हेतु समूह गतिविधि की आवश्यकता होती है)।

» शेष दो समूहों (यानी समूह 'ग' और समूह 'घ') में से एक समूह को समूह 'क' का सहयोग करने का कार्य सौंपा गया है, ताकि वे कार्य को पूरा करने में सक्षम हों। दूसरे समूह को यह देखने का कार्य सौंपा गया है कि समूह 'ख' क्या कर रहा है और वह समूह इस पर प्रतिक्रिया प्रदान करे (यदि वे चाहें या माँग करें) लेकिन उन्हें दिए गए कार्य को पूरा करने के लिए कोई अन्य सहायता प्रदान न करें ।

» दिए गए कार्य के पूरा होने पर, समूह 'क' और समूह 'ख' इस बारे में अपने अनुभव साझा करें।

- गतिविधि करने में 'अन्य' समूह की भुमिका।
- उन गुणों को सूचीबद्ध करें जिन्होंने उनकी सहायता की और जिन्होंने नहीं की।

Scanned by CamScanner

» समह 'ग' और समूह 'घ' भी अपनी भावनाओ और ं टिप्पणियों को साझा करते हैं जब उन्होंने अपनी निर्धारित भूमिकाएँ निभाई ं।
» एक–दूसरे पर निर्भर होने की भूमिका पर समूह चर्चा को प्रोत्साहित करें।
» विद्यार्थी, घर, विद्यालय और अन्य जगहों पर बातचीत की अपनी सूची बनाते हैं, जहाँ उन्हें यह गुणवत्ता प्रदर्शित करनी चाहिए।

गतिविधि 6 : शिक्षकों और विद्यार्थियों द्वारा नेतृत्व गुणों को पहचानने और उनकी सराहना करने के लिए समूह चर्चा करें

» आपके समूह या कक्षा में आपके अनुसार कौन नेता है?
» उसके बारे में विचार करें और उस व्यक्ति का उल्लेख करते हुए कुछ शब्दों /वाक्यांशों को लिखें कि वह आपके विचार में एक नेता क्यों है?
» अपने मौजूदा परिवेश से तीन अन्य व्यक्तियों के बारे में विचार करें (जैसे – परिवार, पड़ोस आदि) जिन्हें आप नेता मानते हैं और प्रत्येक व्यक्ति के गुणों का वर्णन करने वाले कुछ शब्दों वाक्यांशों को लिखें।
» उन सभी गुणों की सूची बनाएँ जिन्हें समूह या कक्षा नेता के गुणों के रूप में मानते हैं।
» अपने समूह या सहपाठियों के साथ अपनी टिप्पणियों पर चर्चा करें।

गतिविधि 7 : शिक्षकों और विद्यार्थियों में 'सहयोग' की सराहना के लिए गतिविधि

» अपने समूह या कक्षा से बिना किसी क्रम के 10 सदस्यों का चयन करें।
» समूह के रूप में विद्यार्थियों को अपनी कक्षा में प्रेरित करने के लिए सभी शिक्षकों को किसी भी विषय पर एक पोस्टर तैयार करना होगा।
» सभी विद्यार्थियों को जल संरक्षण विषय पर एक पोस्टर तैयार करना होगा।
» उन्हें पूरी योजना बनाने और कार्य करने केलिए पूर्ण अधिकार और स्वतंत्रता दें।
» जब वे एक समूह की तरह अपना कार्य कर रहे होते हैं तब समूह या कक्षा के अन्य सदस्य उनका निरीक्षण करते हैं।
» गतिविधि पूरी हो जाने के बाद समूह के सदस्यों को समूह में काम करने के अपने अनुभवों और समूह के रूप में काम करते समय प्राप्त किए गए अनुभव को साझा करने के लिए कहें। साथ ही वे सहयोग और प्रतिस्पर्धा के लाभ भी साझा करें।

विद्यार्थियों के लिए

विद्यार्थियों के लिए यह गतिविधि विषय विशेष के शिक्षकों द्वारा भी की जा सकती है और समूह द्वारा किए जाने वाले कार्य को उनकी पाठ्यपुस्तक से चुना जा सकता है। उदाहरण के लिए, विद्यार्थियों को विभिन्न आकृतियों को पढ़ाने के दौरान शिक्षक चार–पाँच सदस्यों के समूह बना सकते हैं और प्रत्येक समूह को कक्षा के भीतर और बाहर की आकृतियों को पहचानने का कार्य सौंप सकते हैं। (गणित, कक्षा 1)

गतिविधि 8: समूह भावना /सहयोग की सराहना करने के लिए शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए गतिविधि

» सभी प्रतिभागियों को कागज वितरित करें और उनसे अनुरोध करें कि जो कुछ भी उनके मन में आता है, उसे कागज पर बनाएँ।

Scanned by CamScanner

» प्रतिभागियों से अनुरोध करें कि वे कागज अगले व्यक्ति को दें जो उस पर कुछ बनाकर फिर से अगले व्यक्ति को दे।
» इस तरह से प्रतिभागी कागज पर कुछ बनाकर उसे 5–7 मिनट तक आगे बढ़ाना जारी रखते हैं।
» प्रतिभागियों से अनुरोध करें कि समूह के मध्य में सभी कागज रखें।
» समन्वयक सब कागजों को मिला देता है और उन्हें समूह के बीच में रखता है और सभी प्रतिभागियों से अनुरोध करता है कि वे उस कागज की पहचान करें जिस पर उन्होंने पहली बार कुछ बनाया।
» प्रतिभगियों द्वारा पहचाने जाने के बाद, समन्वयक उनसे निम्नलिखित सवाल पूछता है –
• आपने अपने कागज की पहचान कैसे की?
• कागज को देखते हुए, अब आपकी क्या भावना है?
• आपके अनुसार कागज पर चित्र बनाने में आपकी क्या भूमिका थी?
यह गतिविधि प्रतिभागियों को समूह भावना और सहयोग के महत्व को समझने में मदद करेगी जैसे कि प्रत्येक प्रतिभागी ने अपने तरीके से कागज पर चित्र बनाकर योगदान दिया। इसलिए चित्र केवल एक व्यक्ति द्वारा नहीं बनाया गया, बल्कि यह सभी के योगदान का परिणाम था।

टिप्पणी

गतिविधि के अतं में शिक्षकों सेनिम्नलिखित प्रश्न पूछे जा सकते हैं –
» इस गतिविधि से आपने क्या सीखा?
» आप इस अधिगम का उपयोग अपने प्रतिदिन के शिक्षण में कैसे करेंगे?
गतिविधि के अतं में विद्यार्थियों सेनिम्नलिखित प्रश्न पूछे जा सकते हैं –
» आपने इस गतिविधि से क्या सीखा?
» घर और विद्यालय में ऐसी स्थितियों को पहचानें, जहाँ आप इस गतिविधि से प्राप्त अधिगम का उपयोग कर सकते हैं।

गतिविधि 9 : उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों हेतु खेल भावना की सराहना के लिए गतिविधि

अपने पड़ोस में एक ऐसे बच्चे की पहचान करें, जो किसी भी खेल में मिली असफलता को एक अच्छे खिलाड़ी की (खेल भावना) की भाँति स्वीकार नहीं करता। वह चिढ़ जाता है और अपनी असफलता केलिए सभी को दोषी ठहराता है।
» बच्चे से बात करें और यह जानने की कोशिश करें कि उसने इस तरह का व्यवहार क्यों किया।
» क्या आप स्वयं में या परिवार केकिसी सदस्य में या विद्यालय के साथी में ऐसा व्यवहार देखते हैं?
» कक्षा में अपनी टिप्पणियों को साझा करें (इसे एक निबंध / रेखाचित्र /भूमिका आदि के माध्यम से साझा किया जा सकता है)।

Scanned by CamScanner

गतिविधि 10 : एस.आर.जी.एस., शिक्षक और उच्च प्राथमिक विद्यार्थियों के लिए चिंतनशील गतिविधि

» क्या आपको अक्सर लोगों की बातों को समझने केलिए उनसे उनकी बात दोहराने केलिए कहना पड़ता है कि वे क्या कह रहे हैं?

» जाँच करें कि, शब्दों पर ध्यान देने के दौरान क्या आप शारीरिक रूप से भी प्रक्रिया में शामिल होते है, जैसे – आगे की ओर झुकना, आँखों से संपर्क बनाना आदि।

» सूची बनाएँ कि आपको कहाँ अपने सुनने में सधुार करने की आवश्यकता है।

गतिविधि 11: एस.आर.जी., शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए परानुभूति समझ पर गतिविधि

» प्रतिभागियों को एक घेरे में खड़ा करें।

» सभी प्रतिभागियों से अनुरोध करे कि वे अपने जूते उतार दें और उन्हें अपने नजदीक रखें।

» समन्वयक अब उनसे तब तक एक घेरे में चलने का अनुरोध करता रहे जब तक वह ताली बजाता रहता है।

» प्रतिभागियों से अनुरोध किया जाता है कि जब ताली बजना बंद हो, तब वे नजदीक में रखे जूते पहन लें।

» प्रतिभागियों से अनुरोध है कि जब तक ताली बजती रहे तब तक वहीं जूते पहने हुए घेरे में चलते रहें।

» एक बार प्रतिभागी अपनी मूल स्थिति, खड़े हुए/बैठे हुए में लौट आते हैं, प्रतिभागियों से अनुरोध किया जाए कि वे बिना जूते बदले अपनी कुर्सी ले लें।

गतिविधि के अतं में प्रतिभागियों को किसी अन्य व्यक्ति के जूते में चलने के अपने अनुभव को साझा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

यह गतिविधि प्रतिभागियों को परानुभूति के सही अर्थ को समझने में मदद करेगी और उन्हें किसी अन्य व्यक्ति के दृष्टिकोण को समझने के लिए भी प्रेरित करेगी।

गतिविधि 12 : एस.आर.जी., शिक्षकों और विद्यार्थियों को दूसरों/स्वयं की भावनाओ को समझने के लिए संवेदनशील बनाने हेतु गतिविधि

» कुछ भावनाओ (उत्तेजना, चिंता, देखभाल, प्यार, क्रोध, खुशी आदि) को पहचानें।

» समूह/कक्षा से कहें कि वे इन भावनाओं की अभिव्यक्ति अपने चेहरे के हाव–भाव और अन्य गैर–शाब्दिक भाव–भंगिमाओं द्वारा करें।

» प्रतिबिंबित करें कि कब उन्होंने इस प्रकार की अभिव्यक्ति व हाव–भाव को स्वयं में और किसी बहुत करीबी (परिवार विद्यालय) में देखा था।

गतिविधि 13 : शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए गैर–शाब्दिक सचेतता वाले हाव–भाव की सराहना हेतु चिंतनशील गतिविधि

» आप दूसरों के साथ बातचीत करते समय अपने गैर–शाब्दिक व्यवहार, जैसे – अपने शरीर के आसन, चेहरे के भाव और आवाज की गुणवत्ता का एक सप्ताह के लिए अवलोकन करें।

» उन गैर–शाब्दिक व्यवहारों को सूचीबद्ध करें जिन्हें आप दूसरों के साथ बातचीत में अक्सर करते हैं।

Scanned by CamScanner

» अपने गैर–शाब्दिक व्यवहारों की उपरोक्त सूची पर परिवार और साथियों से प्रतिक्रिया एकत्र करें (आप क्या अच्छा करते हैं और क्या सुधार की आवश्यकता है)।
» आप अपने गैर–शाब्दिक सचेत व्यवहार में कैसे सधुार करेंगे, ताकि वे दूसरों के प्रति आपकी परानूभुति को प्रतिबिंबित करे। इसके बारे में लिखिए।

गतिविधि 14 : चिंतनशील गतिविधि (के .आर.पी., शिक्षक और उच्च प्राथमिक विद्यार्थियों के लिए)

ऐसे कौशलों की पहचान करने के लिए तालिका बनाएँ, जो आपके अंदर हैं और जिनकी आपके अनुसार आपको अभ्यास करने की आवश्यकता है तथा इसमें अन्य ऐसे कौशलों को भी शामिल करें जिन्हें आप विकसित करना चाहते हैं। ध्यान रहे कि जो कौशल आप में हैं केवल उसके आधार पर प्रतिक्रिया दें, न कि इस आधार पर कि आपको क्या होना चाहिए।

कौशल	आपके अंदर है	विकसित करने की आवश्यकता है
संवेदनशीलता		
दूसरों को स्वीकार करने में सक्षम होना		
अनुकूलन के लिए लचीलापन		
मौलिक रूप से रुचि लेना		
परानुभूति		
स्वतंत्र सोच		
पहल करना		
बहुत ज्यादा निर्देश न देने वाला		
निर्णायक होना		
समूह के सदस्य के रूप में सहायक		
सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ बाधाओं या असफलताओं का सामना करना		
आगे बढ़ना		

उपरोक्त गतिविधि आपको उन कौशलों में एक अर्तदृष्टि प्राप्त करने में मदद करेगी जो आपके पास पहले से हैं और जिन्हें आपको लोगों को बेहतर ढंग से समझने और उनसे प्रभावी रूप से संबंधित करने के लिए विकसित करने की आवश्यकता है।

गतिविधि 15 : विद्यार्थियों के लिए गतिविधि – अपशब्द (दुर्वचन) के बारे में जागरूकता लाने के लिए गतिविधि

विद्यार्थियों को अवांछित स्थिति / असहज भावनाओं के समय अपनी चुप्पी तोड़ने के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाने में मदद करेगी। विद्यार्थियों को दी गई दो परिस्थितियों के बारे में सोचने केलिए कहें (शिक्षक अपने संदर्भों केलिए विशिष्ट परिस्थितियों को विकसित कर सकते हैं) जिसमें विद्यार्थियों को कुछ गुप्त रखने केलिए कहा जाता है –

Scanned by CamScanner

» पहली स्थिति– मेरे पिता/भाई ने सूचित किया कि वह मेरी बड़ी बहन को कुछ देने की योजना बना रहे हैं, जिसे वह लंबे समय से चाह रही थी और वह उसे आश्चर्यचकित करना चाहते हैं। लेकिन वह चाहते हैं कि मैं यह जानकारी केवल अपने तक ही सीमित रखूँ ।
» दूसरी स्थिति– विद्यालय में 10वीं कक्षा का एक विद्यार्थी मुझे हर सुबह, उसे अपना खाने का डिब्बा (टिफिन) देने के लिए मजबूर करता है और अगर मैं अपने शिक्षक या माता–पिता से कुछ भी कहता हूँ तो मुझे नुकसान पहुचाने की धमकी देता है।
» विद्यार्थियों को यह बताने के लिए कहें कि दी गई दो स्थितियों में से कौन–सी जानकारी वे दूसरों के साथ साझा करेंगे। विद्यार्थियों को उनके उत्तर जोर से पढ़ने केलिए कहें और समझाएँ कि उन्होंने पहली या दूसरी स्थिति को क्यों चुना है।
» विद्यार्थियों से बातचीत करके उनके निर्णय को जानें कि वे किस स्थिति में चुप रह सकते हैं और किस स्थिति में यह महत्वपूर्ण है कि वे अपनी भावनाओ / जानकारी को साझा करें।
» विद्यार्थियों को उन स्थितियों को लिखने / चर्चा करने केलिए प्रोत्साहित किया जा सकता है, जहाँ उन्होंने असहज/परेशान/शर्मिंदा महसूस किया है, लेकिन इसे किसी के साथ साझा नहीं कर सके हैं।
» विद्यार्थियों के साथ चर्चा करें कि दूसरों के जो कार्य/व्यवहार उन्हें असहज महसूस कराते हैं, उन्हें उनके खिलाफ आवाज उठाने और परिवार, दोस्तों, शिक्षकों के साथ साझा करना आवश्यक है।

गतिविधि 16: विद्यार्थियों के लिए गतिविधि – विद्यार्थियों को अपनी भावनाओ को व्यक्त करने के लिए सशक्त बनाना

» विद्यार्थियों से उन तरीकों के बारे में पूछे और उन्हें लिखने को कहें, जिनसे उन्हें लगता है कि लोग दूसरों को हानि पहुँचा सकते हैं।
» उनकी प्रतिक्रियाओं को दो समूहों में समूहित करें – शारीरिक रूप से नुकसान पहुँचाना और उनकी भावनाओं को नुकसान पहुँचाना।
• ऐसे कार्य जो शरीर को नुकसान पहुँचाते हैं या हानि पहुँचाते हैं – मारना, धक्का देना, चिकोटी काटना, यौन शोषण करना।
• ऐसे कार्य जो भावनाओं को ठेस पहुँचाते हैं – नीचा दिखाना, चिल्लाना, अपमानित करना, विद्यालय में अलग–थलग होना, घर के अदंर / बाहर बंद हो जाना, दोस्तों का आप से बात करने में कतराना, उन चीजो को करने के लिए मजबूर करना जिन्हें करने में आप असहज महसूस करते हैं आदि।
बता दें कि शरीर को हानि पहुचाने वाली बातें हमारी भावनाओ को भी चोट पहुँचाती हैं। ये बातें हमें दुखी, असुरक्षित,क्रोधित, उपेक्षित, अपमानित महसूस कराती हैं।

विद्यार्थियों से पूछें –

» क्या कभी किसी ने आपके शरीर या/और आपकी भावनाओं को ठेस पहुचाई है?
» क्या हम खुद को चोट पहुँचा सकते हैं? कैसे?
» क्या यह संभव है कि एक दोस्त, रिश्तेदार, शिक्षक – हमें चोट पहुँचा सकते हैं? यदि ऐसा होता है, तो हम किससे बात कर सकते हैं?

Scanned by CamScanner

विद्यार्थियों से अपने हाथ खोलने और एक कागज पर इसकी रूपरेखा तैयार करने केलिए कहें। अब उन्हें पाँच व्यक्तियों के बारे में सोचने के लिए कहें, जिनके साथ वे अपनी भावनाओ को साझा कर सकते हैं (उन्हें बताएँ कि इनमें से कम से कम चार व्यक्ति वयस्क होने चाहिए)। उन्हें हाथ की प्रत्येक उँगली पर ऐसे पाँच व्यक्तियों के नाम लिखने केलिए कहें।

» उन्हें इन लोगों के बारे में क्या पसंद है, इसे साझा करने व लिखने के लिए कहें।

» वे कक्षा में दूसरों के साथ साझा कर सकते हैं कि वे उन पर क्यों भरोसा करते हैं।

» उस व्यक्ति की विशेषताओं पर चर्चा करें, जिस पर विश्वास किया जा सकता है। इससे विद्यार्थियों को उन लोगों के गुणों के बारे में जानने में मदद मिलेगी जो उनकी मदद कर सकते हैं, जब उन्हें चोट, असुविधा आदि की भावनाओं को बताने या साझा करने की आवश्यकता होती है।

गतिविधि 17 : व्यक्तिगत और सामाजिक गुणों को समझने के लिए शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए गतिविधि

» कक्षा को चार–पाँच सदस्यों के समूहों में विभाजित करें और उन्हें बोर्ड पर लिखे गए विभिन्न व्यक्तिगत–सामाजिक गुणों की सूची से चुनाव करने के लिए कहें, जैसे – देखभाल और संवेदनशीलता, स्वयं और दूसरों के लिए सम्मान, सहयोग, समूह–कार्य (टीमवर्क), धैर्य, प्रभावी संप्रेक्षण, नेततृव आदि। चुना गया गुण, समूह का नाम बन जाएगा।

» समूह के सदस्यों/विद्यार्थियों से उन गुणों के बारे में चर्चा करने के लिए कहें, जिन निम्नलिखित बिंदुओं पर उन्होने प्रकाश डाला है और फिर उन्होंनेजो चर्चा की है, उस पर एक प्रस्तुति देने के लिए कहें –

• उनके द्वारा चुने गए गुण के बारे में वे क्या समझते हैं?

• उनके लिए (शिक्षक/विद्यार्थी) इसकी प्रासंगिकता क्या है?

• उनके दिन–प्रतिदिन के जीवन में (शिक्षक/विद्यार्थी के रूप में) कौशल/गुण को कितनी अच्छी तरह से प्रदर्शित किया जा सकता है?

• इस गुण का उनके परिवेश के (विद्यालय/घर आदि में) अन्य लोगों पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

इस गतिविधि से शिक्षकों और विद्यार्थियों को मदद मिलेगी –

» इन गुणों के महत्व को आत्मसात करने में।

» यह समझने में कि उनके व्यवहार और कार्यों के माध्यम से इन्हें कैसे चित्रित किया जा सकता है।

गतिविधि 18 : दूसरों के बारे में अपने विचारों से अवगत होना

आप सामान्य रूप से लोगों के बारे में क्या सोचते हैं? क्या आपको लगता है कि सामान्य रूप से लोग मददगार और ईमानदार हैं या वे ज्यादातर स्वार्थी और कपटी हैं? वास्तव में, क्या आप ज्यादातर लोगों को अच्छे या बुरे के रूप में देखते हैं? अपने व्यक्तिगत और व्यवसायी जीवन में कुछ लोगों का वर्णन करने के लिए पाँच वाक्य लिखें। इस बात पर विचार करें कि लोगों के बारे में आपके द्वारा दिए गए विवरण ने उनके साथ आपके संबंधों, विचारों, भावनाओ और कार्यों के बारे में आपकी धारणा को कैसे प्रभावित किया है।

Scanned by CamScanner

गतिविधि 19 : स्वयं को स्वीकार करना

उन चीजों को एक कॉलम में सूचीबद्ध करें, जिन्हें आप स्वयं के बारे में पसंद नहीं करते हैं। प्रत्येक मद का मूल्यांकन करें, आप जिस सीमा तक सोचते हैं कि यह आपको एक व्यक्ति के रूप में परिभाषित करने की विशेषता है जो मुझे पूरी तरह से परिभाषित करती है (1), मुझे कुछ हद तक परिभाषित करती है (2), एक व्यक्ति के रूप में मेरी बहुत महत्वपूर्ण परिभाषा नहीं है (3) उन मदों को दर्शाइए जिन्होंने आपको पूरी तरह से परिभाषित किया है। क्या आपके समीप रहने वाले व्यक्ति इन विशेषताओं के आधार पर आपको समझते हैं? उन अच्छी चीजों को सचीबद्ध करन ू की कोशिश करें जो आप अपने
बारे में जानते हैं या लोग आपके बारे में बताते हैं। समझें कि प्रत्येक व्यक्ति में कुछ शक्तियों और कमजोरियों का मिश्रण है और ये संयोजन हमें अद्वितीय व्यक्ति बनाते हैं।

:: प्रश्नोत्तरी ::

प्रश्न 1. इनमें से कौन एक प्रभावी सहायक की विशेषता नही हैं ?
उत्तर 1. व्यक्ति के लिए समस्याओं का समाधान करना।
प्रश्न 2. निम्नलिखित में कौन सा संवेदनशील शिक्षक की विशेषताएं हैं ?
उत्तर 2. छात्रों की आवश्यकताओं और समस्याओं के अनुरूप होना।
प्रश्न 3. छात्रों के लिए शिक्षकों को कक्षा के वातावरण में सकारात्मकता को बढ़ावा देने की आवश्यकता है ताकि छात्र अनुभव कर सकें :
उत्तर 3. सुरक्षित और स्वीकृत।
प्रश्न 4. किसी अन्य व्यक्ति के दृष्टिकोण से स्थितियों को देखने में सक्षम होने की योग्यता/दक्षता को निम्न रूप में जाना जाता है :
उत्तर 4. दृष्टिकोण जानना।
प्रश्न 5. एक शिक्षक संवेदनशीलता के गुण को चित्रित /दर्शा सकता है :
उत्तर 5. दूसरों की भावनाओं और विचारों से अवगत होकर।
प्रश्न 6. तदनुभूति है ?
उत्तर 6. किसी और की तरह महसूस करना और सोचना।
प्रश्न 7. बच्चों के समूह के बीच द्वंद के मामले में, आप एक शिक्षक के रूप में कौन – सी युक्ति का उपयोग करेंगे :
उत्तर 7. बच्चों के बीच संवाद करने में सहज बनायेंगे।
प्रश्न 8. स्कूल / कक्षाओं में स्वास्थ्य वातावरण को बढ़ावा देने के लिए शिक्षकों के गुण और कौशल इस प्रकार है
उत्तर 8. संवेदनशीलता और देखभाल।
प्रश्न 9. चौकस श्रवण कौशल उपस्थित होने के लिए एक शिक्षक को छात्रों के निम्नलिखित पर ध्यान देने की आवश्यकता होती है :
उत्तर 9. सभी।
प्रश्न 10. शिक्षक छात्रों को वास्तविक चिंता और रूचि का सम्प्रेषण कर सकते हैं:
उत्तर 10. आँख से संपर्क करके।

——00 कोर्स 2 समाप्त 00 ——

Scanned by CamScanner

कोर्स – 3
(विद्यालयों में स्वास्थ्य और कल्याण)

मॉड्यूल के उद्देश्य :– इस मॉड्यूल के द्वारा हम निम्न कार्यो में सक्षम हो जायेगे –
(1) स्वास्थ्य और कल्याण की अवधारणा को समझने में
(2) शारीरिक विकास को समझने में
(3) भावनात्मक कल्याण और मानसिक स्वास्थ्य के महत्व को विकसित करने में
(4) स्वस्थ्य खाने की आदतों और स्वच्छता का विकास करने में
(5) बच्चों के बीच स्वस्थ मनोदृष्टि और व्यवहार को बढ़ावा देने के लिए उपयुक्त शैक्षणिक प्रक्रियाओं को अपनाने में
(6) पर्यावरणीय शिक्षा, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान, गणित और भाषा जैसे पाठ्यक्रम क्षेत्रों में सीखने के परिणामों के पहलुओं का समेकन करने में
(7) स्वास्थ्य और कल्याण से संबंधित सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने के लिए जीवन कौशल विकसित करने में।
(8) इंटरनेट और गैजेट्स के सुरक्षित उपयोग को समझने में

सामग्री की रूपरेखा :–
(1) स्वास्थ्य एवं कल्याण की अवधारणा
(2) शारीरिक विकास
(3) भावनात्मक कल्याण और मानसिक स्वास्थ्य
(4) स्वस्थ्य खाने की आदते और स्वच्छता
(5) विभिन्न विषयों में शारीरिक शिक्षा का समेकन
(6) विद्यालयों में सुरक्षा और निर्भयता

स्वास्थ्य और कल्याण की अवधारणा (प्रो. सरोज यादव) –

- स्वास्थ्य केवल शारीरिक अंगों तक ही सीमित नही हैं इसके सामाजिक, भावनात्मक और मानसिक स्वास्थ्य एवं कल्याण जैसे कई आयाम हैं।
- भारत में 47 करोड़ जनसंख्या (कुल जनसंख्या का 39%) 18 वर्ष तक के उम्र के बच्चे एवं किशोर हैं, यदि हमें अच्छे स्वास्थ्य और सभी के कल्याण के सतत विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करना हैं तो आबादी के इस बड़े हिस्से के स्वास्थ्य को ध्यान में रखना होगा।
- सभी हमउम्र बच्चे समान दर से वृद्धि और विकास को प्राप्त करे जरूरी नही, वृद्धि और विकास के संबंध में कुछ गलत अवधारणायें भी हो सकती हैं।

. शारीरिक वृद्धि और विकास (प्रो. सरोज यादव) –

- किसी व्यक्ति की शारीरिक वृद्धि स्वस्थ रहने के दृष्टिकोण से सबसे महत्वपूर्ण चिंताओं में से एक हैं।

Scanned by CamScanner

- प्रत्येक उम्र में शारीरिक रूप से स्वस्थ, मानसिक व भावनात्मक रूप से मजबूत होने के लिए उचित देखभाल की आवश्यकता होती हैं।
- विकास शैशवास्था के दृष्टिकोण से भी एक महत्वपूर्ण सरोकार का विषय हैं।
- बच्चों को यह समझाना चाहिए कि शरीर मे होने वाले परिवर्तन प्राकृतिक, सामान्य और स्वस्थ होकर वृद्धि और विकास के आवश्यक अंग होते हैं।
- सभी बच्चे शारीरिक और बौद्धिक रूप से एक ही गति से नही बढ़ते हैं।
- बढ़ने की प्रक्रिया से बहुत से पूर्वाग्रह और हानिकारक रूढ़ियाँ जुड़ी होती हैं जिन पर चर्चा करने की आवश्यकता होती हैं।

. **शारीरिक स्वास्थ्य के घटक –**

- **शक्ति –** प्रतिरोध के खिलाफ कार्य करने के लिए माँसपेशियों की क्षमता।
- **गति –** निश्चित दूरी तय करने के लिए लगने वाले समयों की तुलना से गति तय की जा सकती हैं।
- **धैर्य –** इसे थकान की स्थिति में लंबे समय तक शारीरिक गतिविधि करने की क्षमता के रूप में परिभाषित किया गया हैं।
- **लचीलापन –** लचीलेपन को शारीरिक गतिविधियों को अति सरलता से करने की क्षमता के रूप में परिभाषित किया जा सकता हैं। सिट एवं रीच अभ्यास लचीलापन विकसित करने में मदद करता हैं।
- **चपलता –** यह तीव्रता से हिलने डुलने और शारीरिक गतिविधियाँ करने की क्षमता से संबंधित हैं।

NCERT

अच्छा आसन/पोश्चर कैसे सुनिश्चित करें

आपने देखा है कि कुछ बच्चों का चलने, खड़े होने, बैठने, दौड़ने का आसन / पोश्चर सही नहीं होता। चलिए चित्र 3.क और 3.ख में दिए गए आसन / पोश्चर को देखें। निम्न में से कौन-सा सही आसन / पोश्चर है?

बैठने की स्थिति में आसन/ पोश्चर में पैर एक आरामदायक दूरी पर फ़र्श पर सपाट होने चाहिए। नीचे दिखाए अनुसार कुर्सी पर बैठें।

यदि हम ठीक से नहीं बैठते या खड़े होते या सोते हैं, तो हमें अपनी गर्दन और पीठ में लंबे समय तक दर्द हो सकता है। इसके लिए चिकित्सा विशेषज्ञ की मदद लेनी पड़ सकती है। आसन सही करने के लिए निम्नलिखित अभ्यासों का सुझाव दिया जाता है -

» भुजंगासन
» चलते समय सिर को ऐसी स्थिति में रखें कि आँखें आगे की ओर देख रही हों
» सिर पर किताब को संतुलित करते हुए चलें

Scanned by CamScanner

समग्र स्वास्थ्य के लिए योग – योग केवल शारीरिक आसन नही हैं, बल्कि इसमें यम, नियम, आसन, प्राणायाम, आहार–प्रत्याहार, क्रिया(क्लिजिंग प्रैक्टिस), मुद्रा, बंध, धारणा, ध्यान जैसे अभ्यास शामिल हैं।

योग बच्चों के शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य के लिए सकारात्मक तथा स्वस्थ जीवन शैली को प्रोत्साहित करता है। योग शारीरिक स्तर पर शक्ति, सहनशक्ति, धैर्य और उच्च ऊर्जा के विकास में मदद करता है। यह स्वयं को मानसिक, आंतरिक और बाहरी समरसता की ओर ले जाने वाली एकाग्रता, शांति तथा संतोष में वृद्धि करता है।

योगाभ्यास के लिए सामान्य दिशानिर्देश

- अधिकांश आसन, प्राणायाम और क्रियाओ का अभ्यास खाली पेट या कुछ भी खाने के २ घंटे बाद करना चाहिए।
- सबह का समय योगाभ्यास के लिए आदर्श समय है, लेकिन शाम में भी अभ्यास किया जा सकता है।
- योगाभ्यास करते समय कपड़े ढीले और आरामदायक होने चाहिए।
- श्वास यथासंभव सामान्य/प्राकृतिक होना चाहिए।
- योगिक अभ्यासों की सीमाएँ हैं। यदि बच्चे किसी समस्या या परानी बीमारी से पीड़ित हैं,तो योगाभ्यास शरू करने से पहले अपने शिक्षक को सूचित करें अथवा प्रशिक्षक के मार्गदर्शन में ही योगाभ्यास करें।

भावनाओं को समझना (डॉ. भारती कौशिक) –

- भावना शब्द की उत्पत्ति लैटिन शब्द "Mover" से हुई हैं जिसका अर्थ हैं आगे बढ़ना, मार्गदर्शन करना। भावनाये हमारे व्यवहार का मार्गदर्शन करती हैं।
- भावनात्मक कल्याण स्वयं की देखभाल, विश्राम, तनाव में कमी और हमारी आंतरिक शक्ति के विकास की ओर प्रेरित करता हैं। यह स्वायत्ता और उचित निर्णय लेने के कौशल को प्रोत्साहित करता हैं।
- बच्चों को उनकी भावनायें प्रकट करने के उचित अवसर दिये जाने चाहिए।

निम्नलिखित सुझाव खद को बेहतर तरीके से जानने के लिए फायदेमद साबित हो सकते हैं–

» सुधार या कमजोरियों के क्षेत्रों की पहचान करने से व्यक्तियों को आगे बढ़ने और बेहतर बनने में मदद मिलती है ताकि वे व्यक्तिगत चुनौतियों से निपटने के लिए बेहतर तरीके से तैयार हों।

» यह महत्वपर्ण है कि ऐसे लोगों की पहचान की जाए जो नए कौशल और क्षमताओ को सीखने के लिए आपका समर्थन कर सकते हैं, और सीखने और व्यक्तिगत विकास के नए अवसर पैदा करने में मदद कर सकते हैं।

Scanned by CamScanner

» किसी की ताकत, कमजोरियों, अवसरों और खतरों की पहचान करना और उचित समय पर उनका उपयोग करना कल्याण को बढ़ावा दे सकता है। व्यक्तिगत चुनौतियों का प्रबंधन करने के साथ–साथ उपलब्ध अवसरों का अच्छा उपयोग करने के लिए ताकत का सदुपयोग किया जा सकता है ।

» सकारात्मक लक्षणों /गुणों के प्रति जागरूकता व्यक्ति को अच्छा महसूस कराती है और उसका आत्म–सम्मान बढ़ाती है।

» हमारे जीवन में महत्वपूर्ण लोगों की सकारात्मक प्रतिक्रिया (उदाहरण के लिए, मित्र, परिवार, शिक्षक) हमें खुद के बारे में अच्छा महसूस करने में भी मदद करती हैं।

» दूसरों की सराहना करने से भी हमें अच्छा महसूस होता है।

» जब हम अच्छा महसूस करते हैं, तो हम हर रोजमर्रा की स्थितियों का सकारात्मक रूप से सामना करते हैं।

» सकारात्मक दृष्टिकोण हमें अपनी असफलताओ और कमियों को पहचानने और उन पर काम करने में मदद करता है और लगातार खुद पर कठोर बने बिना खुद को बेहतर बनाने में सहायता करता है।

तनाव प्रबंधन / स्ट्रेस मैनेजमेंट

नीचे दिए गए कुछ उपकरण/रणनीतियाँ हैं जो तनावपूर्ण /चुनौतीपूर्ण स्थितियों से निपटने में मदद करती हैं–

- संगीत सुनना
- बेचैन होने पर गहरी साँसें लेना
- क्रोधित होने पर खेलना, सीढ़ियों से ऊपर और नीचे भागना
- ध्यान या प्रार्थना करना
- तनावपूर्ण जगह से हट जाना
- किसी ऐसे व्यक्ति के साथ अपनी भावनाओ के बारे में बात करना जिस पर भरोसा किया जा सकता है और जो संभवतः घटना में प्रत्यक्ष रूप से शामिल भी नहीं है
- अपने पसंदीदा संगीत को सुनना
- व्यायाम या कुछ शारीरिक गतिविधि करना
- जिस व्यक्ति से नाराजगी है, उसे एक पत्र लिखना और फिर उसे नष्ट कर देना
- अपनी पसंद की फिल्म देखना
- अपना पसंदीदा काम करना
- कुछ रचनात्मक करना
- किसी और की मदद करना

Scanned by CamScanner

स्वस्थ आदतें [(विडियो आर्टिस्ट डॉ. सौरभ कुमार(शिक्षक), वर्तिका, सक्षम (छात्र)] –

जब हम कोई काम करते हैं, तो हमे ऊर्जा की जरूरत होती है, वह ऊर्जा हमारे भोजन से पुरी होती है। हमारे भोजन को हम तीन सेक्शन में विभाजित कर सकते हैं –

1. Energy giving food - दाल चावल, गेहूं, और चने, ज्वार, बाजरा, मक्का ।
2. Protective food - सब्जियां और सभी तरह के फल ।
3. Body building food - हम दो तरह से देख सकते है, पहला शाकाहारी खाना, दूसरा माँसाहारी खाना ।

खाने की अच्छी आदतों जैसे – सफाई से रहना, पानी खड़े होकर नही पीना आदि अपनानी चाहिए।

सन्तुलित आहार के लिए पिरामिड

चित्र :आहार पिरामिड

विभिन्न विषयों में स्वास्थ्य और कल्याण घटक का समेकन (प्रो. रत्नमालाा आर्य) –

विज्ञान में ऐसे बहुत से Topics हैं जहाँ हम Health से Related कई बाते कर सकते हैं जैसे – रिर्सोसेस ऑफ फूड है, हिस्ट्री ऑफ फूड है ।

अगर हम वॉटर पढ़ा रहे हैं तो हम बोल सकते है कि वॉटर हम लोग को जो इतनी आसानी से मिल रहा है वो कई लोग को गांव मे कई किलोमीटर जा करके उनको लेकर आना पड़ता है। इससे हमारी इमोशनल और मेंटल हेल्थ भी अच्छी होती है।

Scanned by CamScanner

इसी तरह अगर हम गणित पढ़ाते है तो हम बोल सकते है अगर हम बोडीमांस इंडेक्स निकलते है तो हमे उसे डिवाइड करना है कि हमे कितनी कैलोरी खानी है, हम कितना चलते है तो कितनी हमारी कैलोर बर्न होती है .... आदि।

विद्यालयों में सुरक्षता और निर्भयता (डॉ. रीतु चंद्रा) –

सड़क पर सुरक्षित रहने के लिए नियम जो बच्चों को बताए जाने चाहिए –

- सिग्नल यानी की ट्रैफिक लाइट, संकेत और प्रत्येक रंग क्या इंगित करता हैं इसकी
- जानकारी रखना
- कब रूकना है, देखना है, और फिर सड़क पार करना है
- सड़क पर दौड़ना नही है
- ध्यान देना और सुनना कि क्या वाहन आ रहा है
- हमेशा फुटपाथ और पैदल यात्री क्रॉसिंग का उपयोग करना
- कभी भी मोड़ पर सड़क पार न करना
- कभी भी वाहन के बाहर हाथ न रखना

सुरक्षा से संबंधित दूसरा महत्वपूर्ण लेकिन छिपा हुआ पहलू हैं हिंसा और उत्पीड़न। यह कोई भी ऐसा कार्य हैं जो किसी अन्य व्यक्ति को नुकसान पहुंचा सकता हैं। हिंसा और उत्पीड़न के कई प्रकार होते हैं जैसे भावनात्मक हिंसा, यौन उत्पीड़न, शारीरिक हिंसा, शारीरिक दंड और धमकाना आदि। बच्चे ऐसी स्थिति में –

- आवश्यकता पड़ने पर लोगो, सेवाओ और संस्थानों से मदद ले
- दृढ़ता के साथ नही कहें
- मौका मिलने पर ऐसे व्यक्ति से दूर चले जाना, यानि एक सुरक्षित जगह पर पहुंचना जहाँ अधिक लोग हो।
- एक व्यक्तिगत सुरक्षा जाल जिसे पर्सलन सेफ्टी नेट भी कहते हैं को तैयार करना जो उन लोगों की एक वेब हैं जिन पर बच्चे भरोसा करते हैं और हिंसा के मामले में सहायता के लिए संपर्क कर सकते हैं।
- बच्चों का यौन शोषण होने की स्थिति में उसनका समर्थन करने के लिए भारत सरकार ने उनकी सुरक्षा के लिए यौन अपराध अधिनियम (पॉक्सो) कानून बनाया हैं।

उक्त के अलावा सायबर क्राइम से जुड़े मुद्दों पर भी बच्चों को जागरूक करना चाहिए और उन्हे मोबाईल तथा इंटरनेट के सुरक्षित उपयोग हेतु तैयार करना चाहिए।

Scanned by CamScanner

हिंसा और उत्पीड़न –

(शिक्षक और छात्र का दो स्थितियों वाला विडियो)

विडियो का सारांश – अध्यापक को बच्चे से अच्छे से बात करना चाहिए, उसे विश्वास में लेकर उसके कमजोर पक्ष को सुधारने का प्रयास करना चाहिए। गुड टच और बेड टच के बारे में भी उसको बताना चाहिए ताकि उसका यौन उत्पीड़न न हो सके।

इंटरनेट, गैजेट्स और मीडिया के सुरक्षित उपयोग को बढ़ावा देना –

आजकल बहुत से लोग शीघ्रता से जानकारी हासिल करने के लिए इन्टरनेट जैसे नये मीडिया का उपयोग करते हैं, साथ ही वे काफ़ी समय मीडिया पर भी व्यतीत करते हैं। यद्यपि मीडिया जानकारी का एक समद्ध स्त्रोत है, लेकिन मीडिया के माध्यम से मिलने वाले सभी जानकारियाँ सच या विश्वसनीय नहीं हो सकती हैं। हमें विज्ञापनों में दिखाई गई हर चीज़ पर विश्वास नहीं करना चाहिए। सूचनाओ को स्पष्ट करना महत्वपर्ण है। गलत सूचनाएँ हमारी मनोदृष्टि और व्यवहार को प्रभावित करती हैं। मीडिया और इन्टरनेट का उपयोग करते समय एक विश्वसनीय वयस्क अथवा बड़ों से मार्गदर्शन लेना चाहिए।

प्रशिक्षकों के लिए मार्गदर्शन

• शिक्षार्थियों को बताएँ कि इस गतिविधि के माध्यम से हम सकारात्मक और नकारात्मक संदेशों के बीच भेदभाव करने की क्षमता विकसित करने का प्रयास करेंगे। हमने यह भी सीखा की वास्तविक व आभास के बीच बहुत बड़ा अतर है, इसलिए हमें विद्यालय में स्वास्थ्य और आनंदित करने वाले, लुभावने विज्ञापनों से प्रभावित नहीं होना चाहिए साथ ही मीडिया पर दिखाई देने वाली हर चीज़ पर भी विश्वास नहीं करना चाहिए।

• शिक्षार्थियों को बताएँ कि हम सभी के पास प्रतिदिन के वल सीमित घंटे होते हैं, जिसके भीतर हमें वह सब करना है जो हम करना चाहते हैं काम, आराम, माता–पिता के साथ समय व्यतीत करना और इसी तरह के अन्य कार्य।

• इसके लिए एक समय सारणी बनानी चाहिए।

• कुल समय में से, आप विभिन्न मीडिया पर कितना समय बिता रहे हैं?

• क्या आपको लगता है कि आप शारीरिक गतिविधियों, शौक और नए कौशल सीखने के लिए पर्याप्त समय दे रहे हैं?

• मीडिया पर अधिक समय बिताने का हमारे स्वास्थ्य और रिश्तों पर क्या प्रभाव पड़ता है?

• अब अपने आपको विभिन्न गतिविधियों पर व्यतीत किए गए समय को समायोजित करने के लिए कहें, ताकि आप अपने दिन का बेहतर उपयोग कर सकें । समय सीमित है इसलिए उत्पादकता बढ़ाने के लिए इसका सदुपयोग करना बहुत महत्वपूर्ण है। प्रत्येक गतिविधि, जैसे घर में बैठकर टीवी देखने, इंटरनेट आदि पर समय बिताने के बजाय खेलने, व्यायाम करने, अपने पसंदीदा शौक की कोई चीज़ करने आदि जैसी प्रत्येक गतिविधि के लिए उचित समय निर्धारित करना बेहतर है।

Scanned by CamScanner

सारांश

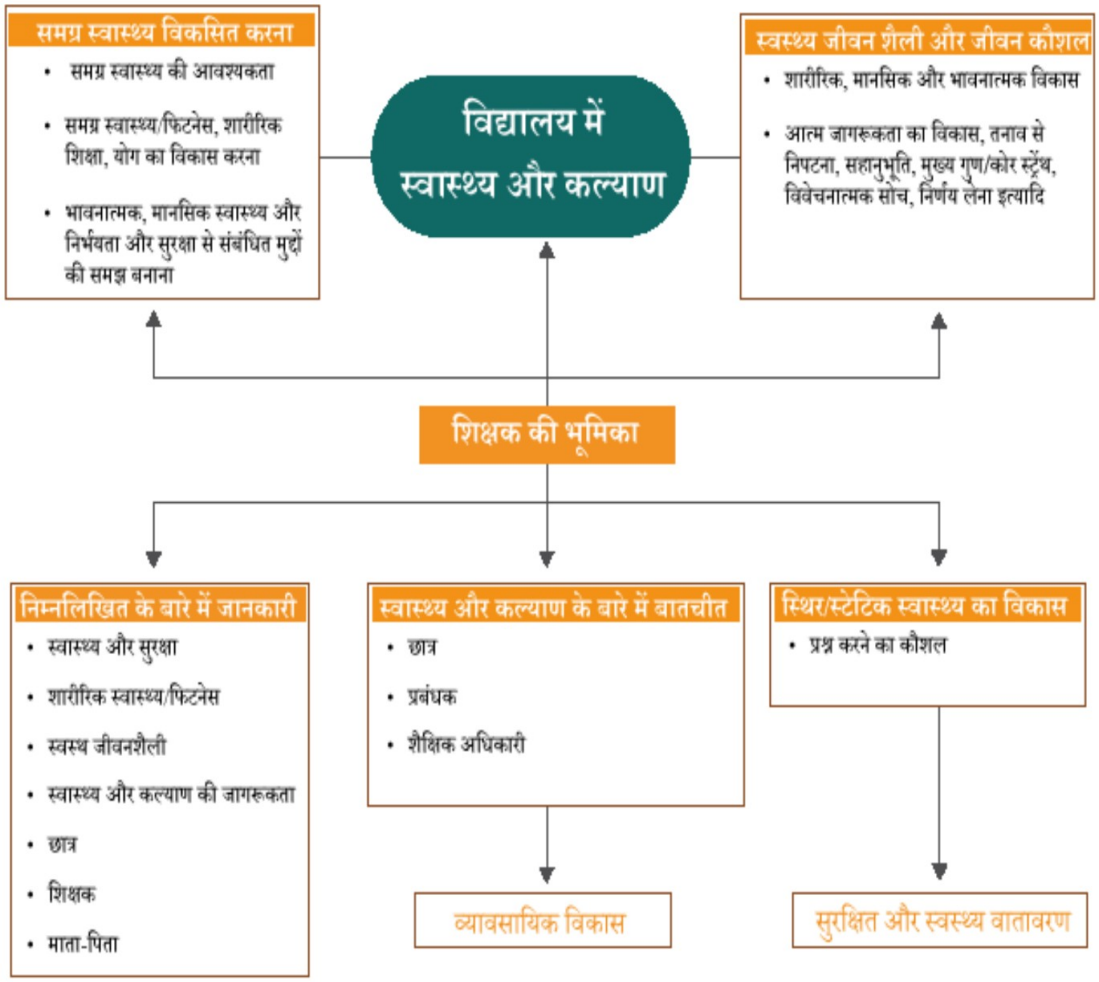

Scanned by CamScanner

:: प्रश्नोत्तरी ::

प्रश्न 1. मुख्यतः घरेलु हिंसा कहाँ होती हैं ?
उत्तर 1. ऊपर के दोनो (गरीब और कुलीन परिवार में)

प्रश्न 2. इस आसन को पहचाने –

उत्तर 2. भुजंगासन।

प्रश्न 3. सभी भावनाएं ..... ?
उत्तर 3. व्यक्त की जानी चाहिए।
प्रश्न 4. किस आसन में बाहें ऊपर की ओर खींची होती हैं ?
उत्तर 4. हस्तोत्तानासन।
प्रश्न 5. संतुलित आहार से क्या तात्पर्य हैं ?
उत्तर 5. उचित अनुपात में प्रोटीन,कार्बोहाइड्रेट,वसा,विटामिन का समावेश।
प्रश्न 6. स्कूल सुरक्षा और स्वच्छता में क्या नहीं आता है ?
उत्तर 6. इनमें से कोई नही।
प्रश्न 7. शारीरिक स्वास्थ्य में क्या नहीं आता ?
उत्तर 7. टीवी पर व्यायाम देखना।
प्रश्न 8. निम्नलिखित में कौन सा कथन सत्य है ?
उत्तर 8. हमारे शरीर में परिवर्तन प्राकृतिक, सामान्य और स्वास्थ्य होते हैं।
प्रश्न 9. शारीरिक शिक्षा में किन का समेकन नहीं किया जा सकता है ?
उत्तर 9. सभी।
प्रश्न 10. इन्टरनेट, गैजेट्स और मीडिया के सुरक्षित उपयोग में क्या – क्या शामिल है ?
उत्तर 10. अजनबियों के साथ व्यक्तिगत विवरण साझा करना

––00 कोर्स 3 समाप्त 00 ––

Scanned by CamScanner

कोर्स – 4
(शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में जेंडर आयामों की प्रासंगिकता)

मॉड्यूल के उद्देश्य :– इस मॉड्यूल के द्वारा हम निम्न कार्यो में सक्षम हो जायेगे –

- ❖ शिक्षकों एवं बच्चों के बीच मौजूदा जेंडर संबंधी पूर्वाग्रहों और पक्षपातों और उन पर आलोचनात्मक रूप से पहचान करना।
- ❖ विभिन्न विषयों के संव्यवहार में जेंडर संवेदनशील शैक्षणिक प्रक्रियाओं का विकास करना
- ❖ कक्षागत वातावरण जेंडर संवेदनशीलता को बढ़ावा देने वाली अधिगम गतिविधियों का उपयोग और उन्हें ग्रहण करना।
- ❖ बालिकाओं की शिक्षा और सशक्तिकरण को बढ़ाने में पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों की भूमिका को समझना।
- ❖ विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की उपलब्धियों की पहचान और उनके योगदान की उदाहरण द्वारा प्रशंसा करना।
- ❖ राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय प्रक्रियाओं में महिलाओं की भागीदारी को पहचानना और उनकी सराहना करना।

सामग्री की रूपरेखा :–

(1) शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में जेंडर आयाम का परिचय
(2) विद्यालयी शिक्षण प्रक्रिया में जेंडर एवं जेंडर आयामों की समझ
(3) प्रछन्नय पाठ्यक्रम को पूर्ण करने में प्रधानाचार्यों एवं शिक्षकों की भूमिका की समझ
(4) भाषा शिक्षण में से जेंडर संबंधी मुद्दों का समावेश
(5) सामाजिक विज्ञान शिक्षण में जेंडर समस्याओं का समावेश
(6) गणित शिक्षण में जेंडर समस्याओं का समावेश
(7) विज्ञान शिक्षण में जेंडर संबंधी समस्याओं का समावेश
(8) गतिविधियों के माध्यम से जेंडर संबंधी मुद्दों का समावेश
(9) गतिविधियों के माध्यम से जेंडर संबंधी मुद्दों का समावेश
(10) सारांश

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में जेंडर का परिचय (प्रो. नीरजा रश्मि) :–

- यह विषय न केवल कक्षा प्रक्रियाओं में बल्कि स्कूली प्रक्रियाओं में भी प्रासंगिक हैं।
- जेंडर संबंधी मुद्दों पर चर्चा द्वारा शिक्षकों तथा प्रधानाचार्यो में इन मुद्दों पर संवेदनशीलता और समझ को प्रोत्साहन देने में मदद मिलेगी साथ ही जेंडर समावेशी कार्यप्रणाली विकसित करने के बारे में दिशा निर्देश भी मिल सकेगा।

Scanned by CamScanner

- यह विषय महिला सशक्तिकरण के अलावा लड़कों को स्वयं के पूर्वाग्रहों को समझने और उन पर सवाल उठाने में सक्षम कर सकेगा, जो घर और परिवार में सामाजीकरण के प्रभाव के कारण उत्पन्न होते हैं।
- यहॉ निम्नलिखित मुद्दों पर विचार किया जावेगा :–
  (1) विभिन्न विषयों के शिक्षण अधिगम में जेंडर संवेदनशील शैक्षणिक प्रक्रियाओं का विकास करना।
  (2) कक्षा के वातावरण में जेंडर संवेदनशीलता को बढ़ावा देने वाली अधिगम गतिविधियों के प्रयोग का सुझाव देना।
  (3) बालिकाओं की शिक्षा और सशक्तिकरण को बढ़ाने में पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों की महत्वपूर्ण भूमिका को समझना।
  (4) जेंडर संबंधित वर्तमान रूढ़िवादी दृष्टिकोणों और पूर्वाग्रहों पर सवाल उठाने और उन पर गंभीरतापूर्वक विचार करने के लिए तैयार करना।
- स्कूली प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण साझेदार होने के कारण जेंडर संवेदनशील वातावरण तैयार करने में शिक्षको की प्राथमिक भूमिका होती हैं, साथ ही प्रधानाचार्य की भूमिका का भी महत्व हैं।
- इस विषय का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू यह भी हैं कि जेंडर संबंधी मुद्दों को विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, गणित जैसे विषयों तथा हिन्दी या अंग्रेजी जैसी भाषाओं के शिक्षण में किस प्रकार समावेशी विधि से स्थान दिया जाये।
- इस विषय पर चर्चा / प्रशिक्षण कक्षा के बहु–वर्गीय, बहु–जातीय तथा बहु–धर्मावलंबी चरित्र के साथ ही विशेष–आवश्यकता समूह से युक्त वातावरण को जेंडर समावेशी बनाने में सहायक होगा।

विद्यालयी शिक्षण प्रक्रिया में जेंडर एवं जेंडर आयामों की समझ (प्रो. मोना यादव) :–

सामाजिक निर्माण (जेंडर के संदर्भ में) – सामाजिक निर्माण एक सतत प्रक्रिया हैं जिसमें सभी व्यक्ति और सामाजिक प्रक्रियाएं एक अहम भूमिका निभाती हैं। जैसे – बच्चा जब जन्म लेता हैं तब उनमें लैगिक भेदभाव नही होता लेकिन जैसे जैसे बच्चा बड़े होते हैं उनमें लैगिक भेदभाव बड़ता जाता हैं। जन्म के समय लड़को और लड़कियों में जैविक अन्तर होता हैं लेकिन बड़े होने के साथ–साथ सामाजीकरण की प्रक्रिया में वे भिन्न भूमिकाओं, जिम्मेदारियों, विशेषताओं को आत्मसात् करने लगते हैं अतएव जेंडर को सामाजिक प्रक्रियाओं का एक उदाहरण मान सकते हैं।

'' जेंडर सामाजिक रूप से निर्धारित और सांस्कृतिक रूप से महिलाओं, पुरूषों और ट्रांसजेंडर के बीच अंतर को संदर्भित करता हैं। ''

जेंडर परिवार, स्कूलों, विज्ञापन, मीडिया, बाजार, नस्ल, धर्म, वर्ग, जातीयता और विकलांगता से प्रभावित होता हैं।

सेक्स महिला और पुरूषों के बीच जैविक अन्तर को संदर्भित करता हैं जो प्रकृति प्रदत्त होकर स्थायी हैं जबकि जेंडर पुरूषों और महिलाओं के बीच एक सामाजिक सांस्कृतिक अंतर हैं।

जेंडर की अवधारणा महिला, पुरूष तक सीमित न होकर यह ट्रांसजेंडर पर भी कार्य करती हैं।

Scanned by CamScanner

हालांकि शिक्षक भी समाज की मान्यताओं के प्रभाव से जेंडर पक्षपात करता हैं परन्तु शिक्षक को जेंडर संवेदनशील होना चाहिए इसके लिए उसे जेंडर भेद की पहचान कर तद्अनुसार अनुकूल और समान अवसर देने वाला स्कूली वातावरण बनाने का प्रयास करना चाहिए।
जैसे – विषयों के शिक्षण के दौरान शिक्षक को सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक प्रक्रियाओं में महिलाओं की भागीदारी की भूमिका पर जोर देने का ध्यान रखना आदि।
जेंडर निम्न कारणों से हिडन पाठ्यक्रम का हिस्सा बन जाता हैं :–
(1) संगठनामक व्यवस्था जिसमें जेंडर के आधार पर कक्षा और स्कूल के भीतर भौतक स्थानों का विभाजन शामिल है।
(2) लड़के और लड़कियों को अलग–अलग कार्य सौंपना
(3) स्कूल की गतिविधियों में अनुष्ठान और अभ्यास
(4) लिंग के आधार पर इनाम और सजा की व्यवस्था
(5) विभिन्न रणनीतियों के माध्यम से लड़के और लड़कियों को अनुशासित करना
(6) शिक्षकों द्वारा लेबल पैटर्न
(7) शिक्षक–छात्र और छात्र–छात्र में परस्पर बातचीत।
स्कूल के भौतिक स्थान भी जेंडर की धारणा से प्रभावित होते हैं।
प्रधानाचार्य को स्कूल के शासन और संचालन में लैगिक समानता को प्रोत्साहित करना चाहिए। साथ ही लैंगिक संवेदनशीलता को बढ़ावा देने हेतु पृथक शौचालय, सैनेटरी पेड जैसी सुविधायें भी दी जानी चाहिए। शिक्षण के दौरान जेंडर संवेदनशील भाषा का प्रयोग करना चाहिए। समय समय पर आत्मरक्षा के प्रशिक्षण, मार्गदर्शन, परामर्श सेवाओं का भी आयोजन किया जाना चाहिए।
गतिविधि 1 – रूढ़िगत धारणा से संबंधित प्रश्नावली (महिला , पुरूष या दोनो उत्तर वाली)
गतिविधि 2 – जेंडर रूढ़ियों को मजबूत करने वाला और जेंडर अनुकूल एक–एक विज्ञापन की लिंक को ब्लॉग में पब्लिश/पोस्ट करना।
गतिविधि 3 – स्कूल के कार्यक्रमों को लड़कियों को ही अतिथियों को फूल देने का काम सौंपा जाता हैं (तस्वीर द्वारा प्रदर्शित) , इस पर विचार करना।

भाषा शिक्षण के माध्यम से जेंडर मुद्दों का समेकन –

- शिक्षण के दौरान हमारी भाषा जेंडर समावेशी और जेंडर निष्पक्ष दोनो होनी चाहिए। जैसे – हम आदमी शब्द के संबोधन के स्थान पर मानव या मनुष्य का उपयोग करे।
- अमूमन जब किसी का संदर्भ जेंडर अज्ञात होता हैं तो सामान्य अभिव्यक्ति पुल्लिंगवाचक संज्ञा या पुरूषवाचक रूप में की जाती हैं, इससे बचना चाहिए।
- इन बिन्दुओ पर विचार करें –
    - क्या शारीरिक गुण एक अच्छा शासक होने के लिए पर्याप्त हैं?
    - क्या लड़कियाँ / महिलाएँ शक्ति और अधिकार वाले पदों को संभालने में पुरुषों की तुलना में कम सक्षम हैं?
    - कक्षा में शक्तिशाली एवं निर्णयात्मक भूमिकाओं में स्थानीय महिलाओं के उदाहरण दें।

कक्षा 5 की पाठ्यपुस्तक मैरीगोल्ड के कुछ उदाहरण –

Scanned by CamScanner

उदाहरण 1 – अध्याय 'व्हूविल बी निंगथौ' में मणिपुर के एक राजा और रानी के बारे में एक कहानी है जिसके तीन बेटे और एक बेटी हैं। तीन बेटे होने के बावजूद वे अपनी बेटी को अपने उत्तराधिकारी के रूप में चुनते हैं और सबसे बड़े बेटे को राजा घोषित करने के पुराने रिवाज को चुनौती देते हैं।

उदाहरण 2 – एक दिन मीना एक आम तोड़ती है और उसे घर ले आती है। उसकी दादी राजू को बड़ा टुकड़ा देती है, क्योंकि वह एक लड़का है। मीना ने इसका विरोध किया। आखिरकार वह आम लायी थी और वह दोनों में बड़ी है। वह जोर देकर कहती है कि बड़े होने के नाते उसके हिस्से पर उसका अधिक अधिकार है। उसके पिता उसकी मदद के लिए आते हैं। वे आम को समान रूप से विभाजित करते हैं। अब निम्न प्रश्नों का उत्तर दे –

(1) आम घर कौन लाया?

(2) मीना की दादी ने राजू को बड़ा टुकड़ा क्यों दिया?

(3) आपको क्या लगता है कि बड़ा टुकड़ा किसे मिलना चाहिए था?

सामाजिक विज्ञान शिक्षण के माध्यम से जेंडर समेकन –

सामाजिक विज्ञान, प्राथमिक स्तर से शुरू होने वाली स्कूली शिक्षा के सभी चरणों में स्कूल पाठ्यक्रम का एक अभिन्न अंग है। यह व्यक्तिगत और सामूहिक मानवीय व्यवहारों का पता लगाने का प्रयास करता है जो परिवारों, समुदायों, संस्कृतियों, संस्थानों, पर्यावरण, समाज, विचार, मानदंड और मूल्यों से प्रभावित होते हैं। सामाजिक विज्ञान का प्राथमिक उद्देश्य छात्रों को सक्षम करने के लिए एक महत्वपूर्ण दृष्टि प्रदान करना है –

(क) जेंडर, धर्म, क्षेत्र, वर्ग और दिव्यांगता के संदर्भ में विविधता को स्वीकारना और उसका सम्मान करना तथा सभी व्यक्तियों को समान रूप से देखना

(ख) लोकतंत्र और निरंकुशता, सत्ता और शासन, जाति, नस्ल और गोत्र, जेंडर और पितृसत्ता , रूढ़ियों और पूर्वाग्रह आदि मुद्दों पर विचार–विमर्श करना

(ग) सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक संस्थानों /मुद्दों जो महिलाओं की स्थिति को प्रभावित करते हैं, उसकी गंभीरतापूर्वक जाँच करना

(घ) प्राप्त विचारों, संस्थानों और प्रथाओं पर प्रश्न और जाँच करना।

- सामाजिक विज्ञान का महत्वपूर्ण पहलू, गतिविधियों के माध्यम से अधिगम प्रक्रियाओं में प्रासंगिक और उपयुक्त स्थानीय सामग्री का समेकन है।
- प्रचलित विचार, व्यवस्था (संस्था) और व्यवहारों पर प्रश्न एवं जाँच, सामाजिक रूप से निर्मित मानदडों और पूर्वाग्रहों पर सवाल उठाना सीखना सामाजिक विज्ञानों के विषयों के अध्ययन का एक महत्वपूर्ण पहलू हैं।
- यह महत्वपूर्ण है कि शिक्षकगण इस तरह से इन बिंदुओं पर चर्चा करें, जिससे बच्चे सोचना शुरू करें और मौजूदा संस्थाओ, प्रथाओ, विचारों और व्यवहारों और उनके अतीत से जुड़ी कड़ियों पर सवाल कर पाएँ। हम जानते हैं कि बहुत प्राचीन काल से ही भारतीय समाज में किस तरह से विभिन्न स्तरों, जाति, वर्ग और जेंडर के आधार पर भेदभाव हो रहा है और महिलाएँ इस तरह के मानदडों के प्रचलन पर सवाल उठाने से पीछे नहीं हटी हैं।

Scanned by CamScanner

उदाहरण 1 (सामाजिक और राजनीतिक जीवन, कक्षा 7) – लक्ष्मी लाकड़ा, उत्तरी रेलवे की पहली महिला इंजन ड्राइवर हैं। साधनहीन परिवार से संबंध रखने वाली लक्ष्मी ने कड़ी मेहनत से पढ़ाई की और फिर इलेक्ट्रॉनिक्स में डिप्लोमा पूरा किया। उन्होंने रेलवे बोर्ड की परीक्षा दी और अपने पहले प्रयास में इसे पास कर लिया। लक्ष्मी कहती हैं, ''मुझे चुनौतियाँ पसंद हैं और जिस पल कोई कहता है कि यह लड़कियों के लिए नहीं है तो मैं ठान लेती हूँ कि मैं आगे बढ़ूँगी और इसे करूँगी।''

उदाहरण 2 (सामाजिक और राजनीतिक जीवन, कक्षा 7) – बेगम रुकैया सखावत हुसैन, एक जानी–मानी शिक्षाविद और साहित्यकार थीं। इन्होंने पटना और कलकत्ता में मुस्लिम लड़कियों के लिए स्कूल शुरू किया। वह रूढ़िवादी विचारों की एक निडर आलोचक थीं। इन्होंने तर्क दिया कि हर धर्म के धार्मिक नेताओं द्वारा महिलाओ को नीचा स्थान दिया गया है। इन्होंने 1905 में ' सुल्ताना का सपना' शीर्षक से एक उल्लेखनीय कहानी लिखी जिसमें सुल्ताना नामक एक स्त्री –देश (लेडीलैंड) में पहुँच जाती है। यह स्त्री देश (लेडीलैंड) एक ऐसी जगह है जहाँ महिलाओ को अध्ययन, काम और आविष्कार करने की स्वतंत्रता थी, जैसे कि बादलों से बारिश को नियंत्रित करना और हवाई कारों को उड़ाना आदि।

उदाहरण 3 – ''आदिवासी, दिकु और एक स्वर्ण युग की कल्पना'' अध्याय आदिवासी समाज पर और औपनिवेशिक शासन से कैसे उनका जीवन प्रभावित हुआ, इस पर केंद्रित है।

उदाहरण 4 – उड़ीसा के सुंदरगढ़ जिले की आदिवासी महिलाएँ जैविक खेती के माध्यम से खाद्य सुरक्षा और बेहतर आजीविका प्राप्त करने के लिए सुरक्षित और पौष्टिक खाद्य पदार्थों का उत्पादन करती हैं।

गतिविधि 4 – निम्नलिखित कथनों पर विचार करें और साझा करें कि कुछ संस्थानों/विचारों और प्रथाओं को बदलने की आवश्यकता क्यो हैं

- पुत्र पारिवारिक संपत्ति के कानूनी उत्तराधिकारी हैं
- लड़कियों का शीघ्र विवाह
- पुरूष देखभाल करने वाले/पोषण करने वाले
- दहेज प्रथा
- बेटियों पर बेटों को वरीयता
- मासिक धर्म की वर्जनायें
- लड़कियों की शारीरिक गतिशीलता पर प्रतिबंध
- लड़कियाँ परिवार की अस्थायी सदस्य हैं

विचार उपरांत अपनी प्रतिक्रिया ब्लॉग पर पोस्ट/पब्लिश करे।

गणित शिक्षण के माध्यम से जेंडर समेकन –

प्रत्येक व्यक्ति गणित जानता है लेकिन कई विद्यार्थियों, विशेष रूप से लड़कियों के लिए अभी भी यह ज्ञान का एक दुर्गम क्षेत्र बना हुआ हैं। हमें थोड़ा–बहुत पुरुष केंद्रित गणित के बारे में सोचना चाहिए। यह एक सामान्य मिथक है कि गणित विषय लड़कियों के लिए नहीं बना है, इसलिए इसके शिक्षण में जेंडर भेद और रूढ़िवादिता की गुंजाईश नहीं है। इस मिथक

Scanned by CamScanner

को हमारे पाठ्यक्रम और शिक्षण के माध्यम से समाप्त करना महत्वपूर्ण है। गणित के माध्यम से यह उजागर करना महत्वपूर्ण है कि घर के काम भी उतने महत्वपूर्ण और उपयोगी हैं और गणित के सवालों के माध्यम से दर्शाना चाहिए कि ये काम घर के सभी सदस्यों की जिम्मेदारी हैं और उन्हें इसका वहन करना चाहिए। काम की गरिमा को समय, श्रम और ऊर्जा की खपत की गणना के अभ्यास के माध्यम से परिलक्षित किया जाना चाहिए। जीवन के सभी क्षेत्रों में महिलाओं /बालिकाओं की भागीदारी को बढ़ाने के लिए महिला –प्रबंधक, व्यापारी, उद्यमी, पायलट, वैज्ञानिक, गणितज्ञ आदि के उदाहरण देकर पुर्नस्थापित करें। प्रत्येक जेंडर का पारिवारिक संपत्ति में समान अधिकार है, इसे गणितीय दृष्टांतों के माध्यम से दिखाया जा सकता है।

प्राथमिक स्तर पर रा.शै.अ.प्र.प. की पाठ्यपुस्तकों में जादुई–गणित के कई उदाहरण हैं। जिनमें महिलाओ को एक उत्पादक और निर्णय लेने वाली भूमिकाओं में चित्रित किया गया है, जैसे –कि उद्यमी, किसान, संपत्ति की मालकिन आदि। खाना पकाने जैसे घरेलु कामों में पुरुष–पात्रों को दिखाया गया है। महिलाओं को उनके अधिकारों के लिए दृढ़ता से खड़े हुए चित्रित किया गया है जो कि सत्ता–संबंधों पर सवाल करता है।

विज्ञान शिक्षण में जेंडर समेकन –

पहले विज्ञान और प्रौद्योगिकी तक महिलाओं की सीमित पहुँच थी। उन्हें बौद्धिक, वैज्ञानिक और तकनीकी समुदायों से लगभग बाहर रखा गया था। उनको हमेशा बच्चों के पालन–पोषण और घर की देखभाल से जोड़ा गया है। इसके अलावा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी में महिलाओं का योगदान भी रिकॉर्डिंग की कमी के कारण "इतिहास से छिपा हुआ" है। प्रौद्योगिकी के संबंध में यह आमतौर पर माना जाता है कि महिलाएँ काफी पुराने जमाने से अपने दैनिक जीवन में प्रौद्योगिकी को शामिल करने के बावजूद गैर–तकनीकी होती हैं। विज्ञान की छवि को पुरूष केंद्रित माना जाता है और विभिन्न सामाजिक–सांस्कृतिक कारकों के कारण लड़कियों और महिलाओं को इसमें प्रवेश करने में संकोच होता है, खासकर यदि वे तकनीकी से संबंधित हो। विज्ञान वर्ग, जाति, जेंडर और धर्म के आधार पर पूर्वाग्रहों को कम करने में मदद करते हुए तर्कसंगत सोच को विकसित करता है। विज्ञान के माध्यम से विद्यार्थियों को सिखाया जा सकता है कि शारीरिक रूप से अंतर किसी की श्रेष्ठता या हीनता को नहीं दर्शाता है। शारीरिक विशेषताओं के कारण लड़कों, लड़कियों और ट्रांसजेंडर के बीच भेदभाव नहीं होना चाहिए। लड़के , लड़कियों और ट्रांसजेंडर के लिए बुनियादी शरीर संरचना, कार्य और आवश्यकताएँ भी समान हैं। सभी यौनों की आंतरिक क्षमताओं को पहचाना जाना चाहिए, न कि एक–दूसरे की तुलना की जानी चाहिए कि कौन कितना बेहतर है। भोजन, स्वास्थ्य, देखभाल और सीखने के अनुभव प्रदान करने में कोई भेदभाव नहीं किया जाना चाहिए। महिलाओं द्वारा पर्यावरण संरक्षित करने और उनके जीवन पर इससे पड़ने वाले प्रभाव को भी रेखांकित किया जाना चाहिए।

5वीं कक्षा की रा.शै.अ.प्र.प. की पाठ्य–पुस्तक आस–पास में अलवर की 'डर्की माई' जैसी महिलाओं के उदाहरण शामिल हैं। इन्होंने 'तरुण भारत संघ' जैसे संगठनों की मदद से एक झील का निर्माण करके अपने गाँव में पानी की समस्या को हल करने में मदद की। एक अन्य उदाहरण झारखडं के आदिवासी समुदाय की एक महिला सूर्यमणि का है। इनके द्वारा अपने राज्य के जंगलों को संरक्षित करने का प्रयास किया गया है।

Scanned by CamScanner

गतिविधि 5 – महिला वैज्ञानिकों को तस्वीर देखकर पहचानना।

1. जानकी अम्मल – यह भारत की एक प्रसिद्ध पादप जीवविज्ञानी थीं। संयुक्त राज्य अमेरिका से वनस्पति विज्ञान में पीएचडी प्राप्त करने वाली पहली महिला थी। वनस्पति विज्ञान में योगदान के लिए उन्हें भारत सरकार द्वारा 1977 में पद्म श्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

2. कल्पना चावला – अंतरिक्ष में जाने वाली भारतीय मूल की पहली महिला अंतरिक्ष यात्री थी। उन्हें अमेरिकी सरकार द्वारा प्रतिष्ठित कांग्रेसनल स्पेस मेडल ऑफ ऑनर से सम्मानित किया गया था।

3. शकुन्तला देवी – वह एक भारतीय गणितज्ञ हैं और उनकी मानसिक गणना क्षमताओं के कारण उन्हें मानव कम्प्यूटर के नाम से जाना जाता है। इन्होने केवल 28 सेकंड में दो 13 अंकों की संख्या को गुणा करने के लिए गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में एक स्थान अर्जित किया!

4. टेस्सी थॉमस – वह DRDO के एयरोनॉटिकल सिस्टम की महानिदेशक हैं। उन्हें भारत की मिसाइल महिला के रूप में भी जाना जाता है क्योंकि वह भारत में मिसाइल परियोजना की शुरुआत करने वाली पहली महिला हैं।

गतिविधि 6 – स्वयंविचार करें (विज्ञान के क्षेत्र में महिलाओ द्वारा बदलाव)

भारत के किसी भी राज्य से विज्ञान, प्रौद्योगिकी या महिला पर्यावरणविदों के क्षेत्र में महिलाओं की दो सफल कहानियों की पहचान करें। आप अपने स्थानीय समुदाय से उदाहरण भी ले सकते हैं।

निम्नलिखित प्रश्नों पर चिंतन करें –

• उनके योगदान / उपलब्धियाँ क्या हैं?

• विज्ञान, प्रौद्योगिकी और पर्यावरण के क्षेत्र में महिलाओं द्वारा अनुभव की जाने वाली चुनौतियाँ किस तरह की हैं?

• क्या विज्ञान, प्रौद्योगिकी और पर्यावरण के क्षेत्र में महिलाए संख्या में कम हैं? यदि, हाँ, तो क्यों?

गतिविधियों के माध्यम से जेंडर संबंधी समस्या की पहचान (प्रो. निरजा रश्मि) –

0 समाज द्वारा लिंग के आधार पर बनाई गई धारणाओं के कारण पूर्वाग्रह और रूढ़िवादिता का जन्म होता हैं। जो कि प्रतिभाओं और विशिष्ट भावनाओं को पहचानने में बाधक बनता हैं।

उक्त संदर्भ में गतिविधि 1 –

इस संदर्भ में हम एन.सी.ई.आर.टी. की पाठ्यपुस्तक ''सामाजिक और राजनैतिक जीवन '' से एक गतिविधि का उदाहरण ले। कक्षा में छात्रों को निम्नलितखत चित्र बनाने के लिए कहा जाए –

1. किसान 2. फैक्टरी श्रमिक 3. नर्स 4. वैज्ञानिक 5. पायलट, और 6. शिक्षक

उक्त चित्रों का संख्यात्मक विश्लेषण करेगे तो पायेगे कि नर्स में ही महिला के चित्र बने मिलेगे अन्य सभी पुरूषों के चित्र बने मिलेगे जो कि पुरूष प्रधान सोच को इंगित करता हैं।

Scanned by CamScanner

गतिविधि 2 – लक्ष्मी लाकड़ा, उत्तरी रेलवे की पहली महिला इंजन ड्राइवर का उदाहरण । लड़कियाँ ही नही लड़के भी पूर्वाग्रह का शिकार रहते हैं , इसके लिए उदाहरण के रूप में निम्न **गतिविधि 3** के रूप में अमन का विषय चयन वाला विडियों हैं जिसमें उसे इतिहास विषय अच्छा लगता हैं परन्तु उसके पालक गणित या विज्ञान जैसे विषयों में अच्छा करने के लिए उस पर दबाव डाल रहे हैं।

गतिविधि 4 – रमन और डॉक्टर की बातचीत वाला विडियों जिसमें रमन एक किसान हैं जिसके 5 बच्चे हैं , उसकी पत्नी गृहणी हैं , गृहणी होते हुए उसके महत्वपूर्ण और व्यस्ततम कार्यो को चिन्हित कर महिला की महत्ता बताई गई हैं।

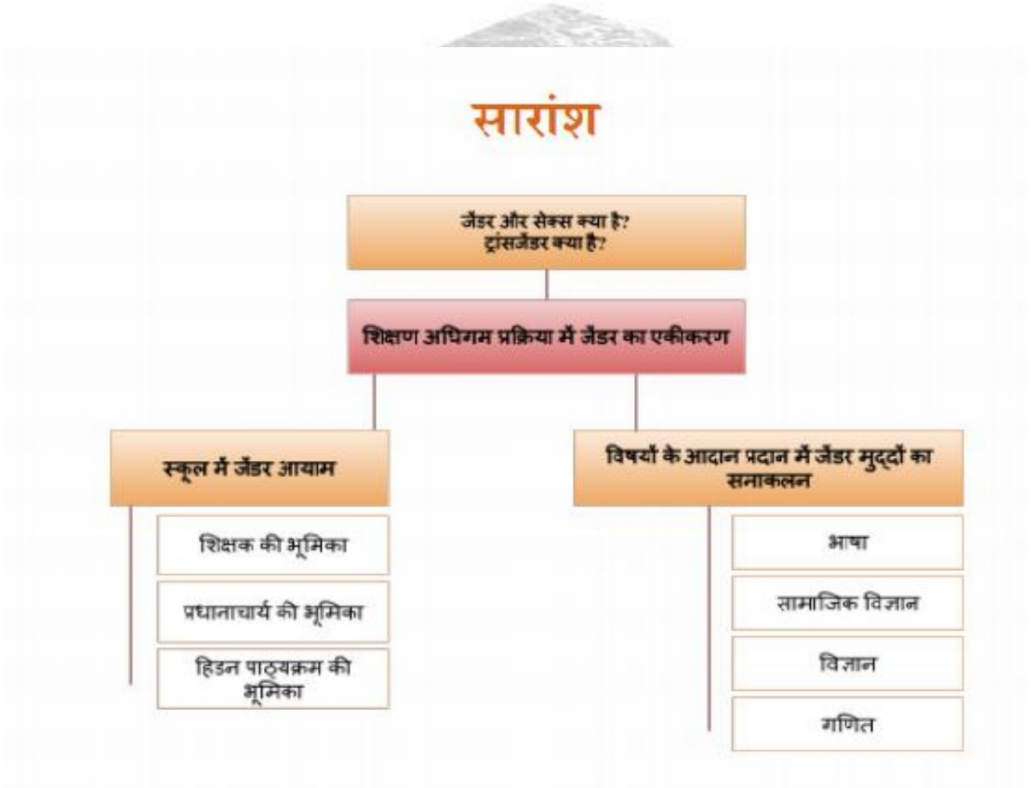

Scanned by CamScanner

पोर्टफोलियों गतिविधि – सभी अध्यायों में जेंडर समेकन

अपनी पसंद के किसी भी विषय या किसी शीर्षक का चयन करें। निम्नलिखित पहलुओं में जेंडर समेकन को कैसे एकीकृत किया जा सकता है, इसकी पहचान करें –

a) दृश्य
b) सामग्री
c) शिक्षण अधिगम प्रक्रिया
d) गुप्त (हिडन) पाठ्यक्रम
e) स्थानीय उदाहरणों / अनुभव / रोल मॉडल का उपयोग ।

पोर्टफोलियों गतिविधि (उदाहरण / मॉड्यूल 4 की सुझावात्मक पोर्टफोलियों गतिविधि) –

उक्त पोर्टफोलियों गतिविधि हेतु चुना गया विषय – गणित, चुना गया टॉपिक – जोड़/घटाव

a) दृश्य – ऐसे दृश्यों को समेकित करना जो बच्चों की गणित (जोड़/घटाव) से जुड़ी रूढ़ीवादी धारणा और पूर्वाग्रहों को प्रश्न करें :
जैसे – महिला गणितज्ञ के चित्र और उनके ऊपर कक्षा में चर्चा, गणित के उदाहरणों में लड़कों और लड़कियों की भागीदारी वाली तस्वीरें, महिलाओं और पुरूषों को अलग–अलग भूमिकाओ में दिखाने वाले गणितीय चित्र।
ह्यपटिआ (गणित पढ़ाने वाली प्रथम महिला) , शकुंतला देवी (ह्युमेन कम्प्यूटर) के चित्र ..... आदि।

b) सामग्री – ऐसा कंटेंट (सामग्री) उपयोग करना जिसमें रूढ़िवादियों और पूर्वाग्रहों को चुनौती दी गई हो :
ऐसे गणितीय उदाहरण जिनमें महिलाओं को उत्पादक और निर्णय लेने वाली भूमिकाओं में चित्रित किया गया हो जैसे – उद्यमी, किसान, संपत्ति के मालिक आदि। पुरूष पात्रों को खाना पकाने जैसे घरेलू कामों में लगे हुए दिखाया गया हो।

c) शिक्षण अधिगम प्रक्रिया – जेंडर संवेदनशील कक्षा हेतु बच्चो को इस तरह समूह में बांटना कि हर समूह में बराबर की संख्या में लड़के और लड़कियां हो और आपस में मिलजुल कर कार्य कर रहे हो व परस्पर स्वस्थ व्यवहार हो।

d) गुप्त (हिडन) पाठ्यक्रम – रूढ़िवादी धारणाओं को बढ़ावा न मिले इसका ध्यान रखे।

e) स्थानीय उदाहरणों / अनुभव / रोल मॉडल का उपयोग – स्थानीय स्तर पर महिला गणित शिक्षक का उदाहरण दे सकते हैं।

Scanned by CamScanner

प्रश्नोत्तरी –

प्रश्न 1. जेंडर के बारे में निम्नलिखित में से क्या सही नही हैं?
उत्तर 1. जेंडर पुरूषों, महिलाओं और ट्रांसजेंडर के बीच जैविक अंतर को दर्शाता हैं।

प्रश्न 2. क्या यह कथन सही हैं 'राजनीति में सत्ता और अधिकार के पदों को संभालने में पुरूषों की तुलना में महिलाएं कम सक्षम हैं?
उत्तर 2. नही।

प्रश्न 3. निम्नलिखित में से कौन सा कथन लड़कों/पुरूषों के बारे में एक जेंडर स्टीरियोटाइप नही हैं?
उत्तर 3. लड़के/पुरूष बच्चे पैदा करने के साथ–साथ खाना भी बना सकते हैं।

प्रश्न 4. निम्नलिखित में से कौन सा वाक्य सही हैं ?
उत्तर 4. लड़के और लड़कियों के साथ बराबरी का व्यवहार किया जाना चाहिए।

प्रश्न 5. पुरूषत्व और स्त्रीत्व को संदर्भित करता हैं?
उत्तर 5. जेंडर।

प्रश्न 6. निम्नलिखित में से कौन सा कथन लड़कियों/महिलाओ के बारे में एक जेंडर स्टीरियोटाइप नही हैं?
उत्तर 6. लड़कियों/महिलाओं के पास नेतृत्व कौशल हैं और वे किसी भी पेशे में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकती हैं।

प्रश्न 7. जेंडर और यौन(सेक्स) के बीच आवश्यक अंतर क्या हैं?
उत्तर 7. यौन(सेक्स) एक जैविक अंतर हैं जबकि जेंडर पुरूषों और महिलाओं के बीच एक सामाजिक रूप से निर्धारित अंतर हैं।

प्रश्न 8. निम्नलिखित में से कौन सा कथन जेंडर मिथक नही हैं, पहचाने?
उत्तर 8. लड़कों और लड़कियों के बीच जैविक अंतर उनकी संज्ञानात्मक क्षमताओं से संबंधित नही हैं।

प्रश्न 9. निम्नलिखित में से कौन सा कार्य लिंग भेद को नही दर्शाता हैं?
उत्तर 9. शेफाली पर्वतारोही बनने के लिए प्रशिक्षण ले रही हैं।

प्रश्न 10. निम्नलिखित में से कौन सा गुण लड़के और लड़कियों दोनो के लिए सही हैं?
उत्तर 10. सभी।

–– 00 कोर्स 4 समाप्त 00 ––

Scanned by CamScanner

कोर्स – 5
[शिक्षण, अधिगम और मूल्यांकन में आई.सी.टी. (सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी) का समन्वय]

मॉड्यूल के उद्देश्य :– इस मॉड्यूल के द्वारा हम निम्न कार्यो में सक्षम हो जायेगे –

- ✓ सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT) का वर्णन कर सकेंगे ।
- ✓ आई.सी.टी. के लाभ बता सकेंगे ।
- ✓ शिक्षण–अधिगम और मूल्यांकन में विभिन्न आई.सी.टी. उपकरणों के उपयोग को पहचान सकेंगे और व्याख्या कर सकेंगे ।
- ✓ शिक्षण सामग्री और शिक्षण–तकनीक के अनुसार उपयुक्त शिक्षण संसाधनों की पहचान कर सकेंगे ।
- ✓ आई.सी.टी.–शिक्षण सामग्री और शिक्षा शास्त्र के समायोजन पर आधारित एक शिक्षण योजना तैयार कर सकेंगे ।

सामग्री की रूपरेखा :–

(1) आई.सी.टी. की अवधारणा
(2) सामग्री, संदर्भ और शिक्षण के तरीकों के आधार पर आई.सी.टी. का उपयोग करने का दायरा
(3) शिक्षण–अधिगम–मूल्यांकन के लिए उपलब्ध विविध ई–संसाधन और प्रौद्योगिकी
(4) ई–संसाधन और प्रौद्योगिकी के चयन के लिए मानदंड
(5) आई.सी.टी. एकीकृत शिक्षण–अधिगम योजना

शिक्षा में आई.सी.टी. : परिचय (प्रो. इन्दु कुमार) –

- शिक्षार्थियों में व्यक्तिगत भिन्नतायें होती हैं और वे अलग–अलग ढंग से सीखते हैं
- शिक्षण प्रक्रिया के दौरान एक से अधिक ज्ञानेन्द्रियों शामिल करने के अवसर देने चाहिए ताकि शिक्षार्थी बेहतर सीख सके।
- शिक्षार्थी को दृश्य, श्रव्य, स्पर्श और गतिविधि आधारित उद्दीपक प्रदान करने चाहिए। संसाधनों की विविधता इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।
- बच्चों को जानकारी एकत्र करने के साथ उसके संश्लेषण और विश्लेषण के लिए भी प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि वे एकत्रित जानकारी का सही अर्थ ग्रहण कर सके।
- आई.सी.टी. के बारे में यह मिथ्या धारणा हैं कि यह केवल कम्प्यूटर से संबंधित हैं।
- आई.सी.टी. क्या हैं? इसका उपयोग क्यो और कैसे करे? किस आई.सी.टी. का उपयोग कब और कहॉ करे? जैसे प्रश्नों के लिए विषयवस्तु, शिक्षाशास्त्र, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के प्रभावी एकीकरण के विषय में एक गहरी समझ की आवश्यकता हैं जिनकी इस मॉड्यूल में चर्चा की जाएगी।

Scanned by CamScanner

गतिविधि 1 (आई.सी.टी. के अर्थ पर चिंतन के लिए) :

आई.सी.टी. से क्या तात्पर्य हैं चिंतन के लिए कुछ समय लेकर ब्लॉग के कमेंट बॉक्स में कमेंट पोस्ट/पब्लिश करे।

आई.सी.टी. की अवधारणा (प्रो.इन्दु कुमार) :–

❖ यूनेस्को के अनुसार – '' आई.सी.टी. का तात्पर्य प्रौद्योगिकी उपकरणों और संसाधनों का एक सेट हैं जिसके माध्यम से डिजिटल जानकारी का संग्रह और संचारण किया जा सकता हैं ''

❖ आई.सी.टी. की मूलभूत विशेषताएँ –

1. सृजन 2. संग्रहण 3. पुनः प्राप्ति 4. फेरबदल 5. प्रेषण 6. प्राप्ति

उदाहरणार्थ – मोबाईल से फोटो खिंचते हैं तो हम सृजन करते हैं और डिजीटली उसका संग्रहण करते हैं तत्पश्चात् आवश्यकता होने पर पुनः प्राप्त भी कर सकते हैं। इसमें एडिटिंग कर फेरबदल भी कर सकते हैं, सोशल मिडिया या अन्य माध्यम से इसे दूसरे व्यक्ति को भेज सकते हैं जिससे दूसरे व्यक्ति को इसकी प्राप्ति होती हैं।

❖ आई.सी.टी. से तात्पर्य चार्ट के रूप में – आई.सी.टी. सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर की एक ऐसी प्रणाली या प्रक्रिया हैं जिससे डिजिटल जानकारी निर्मित करना, स्टोर करना, पुनर्प्राप्त करना, फेरबदल करना, भेजना और प्राप्त करना संभव हैं ।

❖ आई.सी.टी. की उक्त सभी 6 विशेषतओं का सम्मिलन हो ऐसा प्रयास करना चाहिए, आई. सी.टी. की विशेषताओं का आंशिक सम्मिलन हो तो भी उपयोग करते रहना चाहिए।

❖ डिजीटल तकनीक का उपयोग मात्र ही पूर्ण आई.सी.टी. नही हैं।

❖ हम खुद मनन करे कि हम आई.सी.टी. का उपयोग किस सीमा तक या कितनी विशेषताओं को समाहित करते हुए कर रहे हैं।

गतिविधि 2 (क्या यह आई.सी.टी. हैं ?) : प्रश्नावली निम्नलिखित में से आई.सी.टी. के उदाहरण और गैर–उदाहरण के रूप में इंगित करे –

1 डिजीटल समाचार पत्र	2 टेलीफोन	3 स्मार्ट टीवी	4 रेडियो
5 मेल	6 बायोमेट्रिक सिस्टम	7 मुद्रित पाठ्यपुस्तक	

गतिविधि 3 (सूचना एवं संचार तकनीक शिक्षण, अधिगम और मूल्यांकन में कैसे सहयोग करता हैं ?) :

चिंतन के लिए कुछ समय लेकर ब्लॉग के कमेंट बॉक्स में कमेंट पोस्ट/पब्लिश करे।

Scanned by CamScanner

शिक्षण सामग्री – शिक्षा शास्त्र–टेक्नोलॉजी को कैसे एकीकृत किया जाए

डिजिटल दुनिया में उन्नति को ध्यान में रखते हुए, शिक्षकों को शिक्षण और सीखने के लिए आई.सी.टी.का उपयोग करने के लिए आवश्यक पेशेवर क्षमतायुक्त करने की आवश्यकता है। शिक्षण अधिगम में आई.सी.टी. एकीकरण का अर्थ केवल इंटरनेट और डिजिटल उपकरणों का उपयोग नहीं है, बल्कि इन उद्देश्यों और लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, सीखने के लिए और सीखने के परिणामों को प्राप्त करने के साधन के रूप में उपयोग करना है। शिक्षकों को समझना चाहिए कि ज्ञान के अधिग्रहण के लिए अधिगम प्रक्रिया में प्रौद्योगिकी, शिक्षाशास्त्र और सामग्री कैसे एकीकृत हो । नीचे दिए गए आंकड़े बताते हैं कि कैसे तेजी से बदलती प्रौद्योगिकियों की क्षमता को प्रभावी तरीके से शैक्षणिक दृष्टिकोण और सामग्री क्षेत्रों के साथ एकीकृत किया जा सकता है।

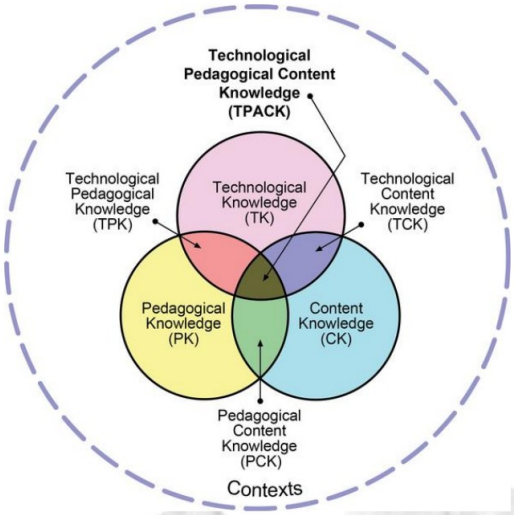

आई.सी.टी. को एकीकृत करते समय निम्न मानदंडों पर विचार किया जाना चाहिए :

1. विषयवस्तु का स्वरुप
2. बुनियादी ढांचा एवं मानव संसाधन के संबंध में संदर्भ
3. शिक्षा शास्त्र– शिक्षण –अधिगम के तरीके
4. तकनीक/उपकरण/ई– सामग्री के प्रकार तथा उसकी विशेषताएँ

पैरामीटर 1 (विषयवस्तु का स्वरूप) : क्या सभी विषय वस्तु के शिक्षण या अधिगम के लिए आई.सी.टी. का उपयोग करना आवश्यक है ?

कुछ मामलों में विषयवस्तु के स्वरूप को देखते हुए आई.सी.टी. का उपयोग करना आवश्यक नहीं है। उदाहरण के लिए, भोजन के बारे में शिक्षित करते समय विद्यार्थियों को तस्वीरों के माध्यम से नहीं, बल्कि वास्तविक खाद्य पदार्थ या उनके द्वारा खाने के डिब्बों में लाए गए भोजन या स्कूल में दोपहर में परोसे गए भोजन के माध्यम से समझाना ज्यादा कारगर साबित होगा। इसी तरह पौधों के अलग–अलग भागों को पढ़ाने के दौरान, बेहतर यही होगा कि विद्यार्थियों को असली पौधे दिखाए जाएँ और पौधों को छूने, उनकी पत्तियों, शाखाओ, तने, जड़ों/कलियों आदि की संरचना व बनावट को महसूस करने के अवसर दिए जाएँ। साथ ही

Scanned by CamScanner

उन्हें स्वयं एक गमले/बोतल/गिलास में बीज बोने, पौधों को पानी देने, सूरज की रोशनी दिखाने, पूरी अंकुरण प्रक्रिया और बीज से बीज तक की यात्रा को देखने व उसका अवलोकन करने के अनुभव भी दिए जा सकते हैं। इस तरह का अनुभावत्मक शिक्षण कक्षा के प्रत्येक विद्यार्थी के लिए एक यादगार अनुभव होगा, जो पीपीटी, वीडियो और मल्टीमीडिया द्वारा शिक्षण कराए जाने से कहीं बेहतर विकल्प है। हाँ, यह सही है कि जीव विज्ञान की कक्षा में जानवरों और पौधों की चीर–फाड़ एक आम बात है, लेकिन आजकल मेंढकों की चीड़–फाड़ करना अनैतिक और अवैध माना जाता है। ऐसी स्थिति में शिक्षक बच्चों को मल्टीमीडिया आधारित आभासी चीर–फाड़ दिखा सकते हैं। कुछ मामलों में विषयवस्तु के स्वरूप के आधार पर सही मीडिया/तकनीक का चयन करना भी महत्वपूर्ण है, इसलिए मीडिया/तकनीक का चयन करते समय जिन प्रश्नों पर विचार किया जाना चाहिए, वे निम्न हैं –

» क्या आई.सी.टी. किसी विशेष सामग्री को सीखने– सिखाने के लिए आवश्यक है?

» यदि हाँ, तो किस प्रकार के आई.सी.टी./मीडिया माध्यमों का उपयोग किया जाना चाहिए?

विषयवस्तु के स्वरूप, मीडिया का चुनाव और इस विशेष मीडिया को चुनने का मूल कारण क्या है, इसे समझने के लिए नीचे दी गए तालिका को देखे –

क्रम संख्या	विषयवस्तु	विषयवस्तु का स्वरूप	मीडिया जिसका प्रयोग किया जा सकता हैं	मीडिया प्रयोग करने का मूल कारण
1.	भारतीय संविधान में मौलिक अधिकार (कक्षा 8)	तथ्यात्मक	दृश्य(विजुअल)–मौलिक अधिकारों की सूची में किसी भी प्रकार की प्रस्तुति , जैसे – स्लाइड प्रस्तुति ,डिजिटल पोस्टर, डिजिटल फ्लैशकार्ड, इत्यादि	चूंकि , सामग्री तथ्यात्मक है और विद्यार्थियों को केवल मौलिक अधिकारों को सूचीबद्ध करने की आवश्यकता है, इस स्थिति में एक श्रव्य–दृश्य साधन अनावश्यक होगा। छात्रों को केवल दृश्य–सामग्री (फ्लैशकार्ड,चार्ट, पोस्टर आदि) प्रदान की जा सकती है।
2.	एक ठोस सिलेंडर का सतही–क्षेत्रफल (कक्षा 6)	वैचारिक	वीडियो प्रदर्शन	यहाँ, विद्यार्थियों को समझाना होगा कि एक ठोस सिलेंडर के सतही–भाग का निर्धारण कैसे किया जाता है। यहाँ अपने आप में एक श्रवण माध्यम पर्याप्त नहीं होगा, क्योंकि विद्यार्थियों को सिलेंडर और उसकी विभिन्न सतहों की कल्पना करनी होगी। एक वीडियो प्रदर्शन, जिसमें दिखाया गया हो कि सिलेंडर में दो वृत्त होते हैं और एक आयत, ज्यादा बेहतर व असरदार तरीका हो सकता है।

Scanned by CamScanner

3.	पाचन तंत्र के कार्य (कक्षा 7)	प्रक्रियात्मक	एनिमेशन वीडियो, ऑगमेंटेड रियलिटी आधारित मोबाइल एप्स,जैसे–एनॉटमी4, बायोडिजिटल मानव, आदि	चूँकि , सामग्री ऐसी होनी चाहिए कि विद्यार्थी एक प्रक्रिया को समझ सकें , इसलिए केवल दृश्य या श्रव्य माध्यमों से सही ढंग से सीखना संभव नहीं है। अगर एक एनिमटेड वीडियो या संवर्धित वास्तविकता (ऑगमेंटेड रियलिटी) आधारित साधन का उपयोग भोजन की पाचन प्रक्रिया को चित्रित करने के लिए किया जाता है, तो छात्र इसे बेहतर ढंग से समझ पाएँगे।
4.	विश्व में क्रिसमस का सर्वश्रेष्ठ उपहार (कक्षा 1–8) कार्यकलाप – "देशों के बीच टकराव को समाप्त करने के लिए क्या युद्ध एक अच्छा तरीका है" पर विचार	अपनी विचार प्रक्रिया के बारे में समझ	चर्चा मंच	यहाँ स्वयं निर्णय लेने की प्रक्रिया पर सवाल उठाया जाना और विश्लेषण किया जाना है। चर्चा मंच का उपयोग शिक्षार्थियों के विभिन्न विचारों और निर्णयों पर चर्चा करने के लिए किया जा सकता है।

उपरोक्त तालिका दर्शाती है कि आई.सी.टी. को उपयोग करने के लिए विषयवस्तु के स्वरूप को समझना आवश्यक है। एक उपयुक्त ढंग से चयन करने के लिए शिक्षक को विषयवस्तु के साथ–साथ विभिन्न आई.सी.टी./मीडिया माध्यमों का ज्ञान भी होना चाहिए। ई–सामग्री को मोटे तौर पर नीचे दिए चित्र के माध्यम से वर्गीकृत किया जा सकता है।

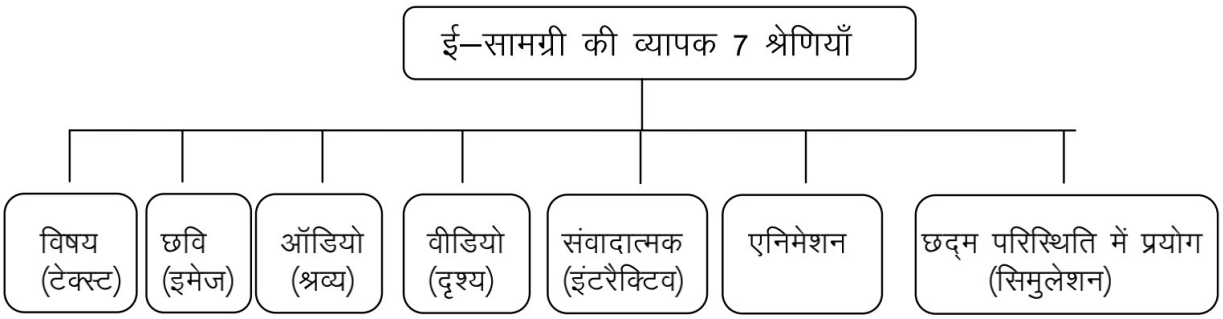

चित्र 1 ई.सामग्री की व्यापक श्रेणियाँ

Scanned by CamScanner

शिक्षक आई.सी.टी. का विवेकपूर्ण ढंग से उपयोग करने में तभी सक्षम होंगे जब वे विषयवस्तु का विश्लेषण कर पाएँ तथा उसके अनुरूप उपयुक्त मीडिया का चयन कर सकें और उसे उचित ढंग से विद्यार्थियों के सामने प्रस्तुत कर सकें जिससे विद्यार्थी आसानी से विषयवस्तु समझ सकें ।

गतिविधि :

दिए गए कार्डों में से विषय का चयन करें। उस विषय पर अपनी पसंद का प्रसंग चुने। उसके लिए सीखने के प्रतिफलों को सूचीबद्ध करें। कम से कम तीन प्रमुख विचारों /विषयवस्तुओं को निर्धारित करें, जिन्हें आप सीखने के प्रतिफल को प्राप्त करने के लिए चयनित विषय के तहत सिखाएँगे। सामग्री के स्वरूप (तथ्यात्मक, वैचारिक, प्रक्रियात्मक और अपनी विचार प्रक्रिया के बारे में समझ) के आधार पर विश्लेषित और वर्गीकृत करें।

पैरामीटर 2 (संदर्भ) : संदर्भ विश्लेषण, उस परिवेश का विश्लेषण करने की एक विधि है जिसमें एक आई.सी.टी. समर्थकृत शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया संचालित होती है। संदर्भ विश्लेषण, शिक्षण–अधिगम की स्थिति के पूरे परिवेश पर विचार करता है।

निम्नलिखित बातों पर विचार करें –

1. स्कूल में आई.सी.टी. की कौन–सी सुविधाएँ उपलब्ध हैं?
2. स्कूल का सहायक तंत्र आई.सी.टी. का उपयोग करने के लिए कितना प्रेरित करता है?
3. शिक्षकों के पास कौन–कौन सी आई.सी.टी. दक्षताएँ हैं?
4. क्या सभी विद्यार्थी आई.सी.टी. का उपयोग कर सकते हैं?
5. क्या उपलब्ध सुविधाओं और विद्यार्थियों की विशेषताओं के आधार पर आई.सी.टी. उपकरण चुने गए हैं?

कक्षा के माहौल का विश्लेषण करते समय, बुनियादी ढाँचे और मानव संसाधन दोनों पहलुओं पर ध्यान दिया जाना चाहिए। बुनियादी ढाँचे के अंतर्गत कक्षा का सामान्य ढाँचा आता है, जैसे – बिजली, प्रक्षेपण प्रणाली (प्रोजेक्शन सिस्टम), इंटरनेट, प्रिंटर, कंप्यूट्यूर /लैपटॉप /टैबलेट आदि की उपलब्धता।

मानव संसाधन से आशय है – शिक्षकों /तकनीकी जानकारों की उपलब्धता, आई.सी.टी. को ठीक तरह से समझा पाने में शिक्षक की योग्यता आदि।

गतिविधि :

आइये एक परिदृश्य पर विचार करे । जहाँ छात्र / छात्रा कोरोना जैसी कुछ महामारी के कारण सामान्य शिक्षा में शामिल नहीं हो पा रहे /रही है । इस संदर्भ में, प्रौद्योगिकी का उपयोग करना, ऑनलाइन मोड में शिक्षण, सीखने और मूल्यांकन को आंशिक रूप से ऑनलाइन या टीवी और रेडियो जैसे पूर्ण ऑफलाइन मोड में जारी रखने में मदद कर सकता है। लेकिन योजना बनाते समय सोचे जाने वाले कुछ प्रश्न हैं –

» शिक्षकों और छात्रों के लिए क्या सुविधाएं उपलब्ध हैं?

» ऑनलाइन कक्षा से शिक्षकों, छात्रों और अभिभावकों की डिजिटल योग्यता को वास्तव में क्या लाभ होगा?

Scanned by CamScanner

» डिजिटल तकनीक का उपयोग करते हुए भी विविधता को कैसे संबोधित किया जा सकता है?शिक्षक के लिए संदर्भ को ध्यान में रखते हुए मध्यवर्तन की योजना बनाना बहुत महत्वपूर्ण है

एक शिक्षक को सीखने वाले को यह भी समझाना होगा कि वह अपने सीखने की व्यापकता का विस्तार करने के लिए उपयुक्त विधि और आई.सी.टी. उपकरणों/संसाधनों का चयन कैसे करे। आई.सी.टी. का उपयोग करने के लिए शिक्षार्थी के चार आयाम हैं, जिन्हें समझने की आवश्यकता है। ये आयाम निम्न हैं–

1. जनसांख्यिकी 2. संज्ञानात्मक 3. मनोवैज्ञानिक 4.भावात्मक 5. सामाजिक

1. जनसंख्या – शिक्षक कक्षा के आकार, आय के संदर्भ में विभिन्नता, सांस्कृतिक संदर्भ, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, जेंडर, हाशियाकरण, भौगोलिक स्थिति और उपलब्धता/ तकनीकी सुगमता पर विचार कर सकता है।
2. संज्ञानात्मक और पूर्व ज्ञान – शैक्षिक स्तर, प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, अनिवार्य ज्ञान और अनुभव , सीखने की शैली, डिजिटल साक्षरता का स्तर, संज्ञानात्मक क्षमता।
3. भावात्मक/सामाजिक – शिक्षक, शिक्षण और अधिगम, ऑनलाइन शिक्षण के वातावरण, स्वयं के प्रति सोच, प्रेरक स्तर, पारस्परिक संबंध और जिन क्षेत्रों में उसकी रुचि है, के बारे में अपने स्वयं के दृष्टकिोण का आत्मविश्लेषण कर सकते हैं। इसके साथ ही विद्यार्थियों के साथ व्यवहार करते समय इन सब बातों पर भी गौर किया जा सकता है।
4. दैहिक – शिक्षक को अपने विद्यार्थियों के सामान्य शारीरिक और भावनात्मक स्वास्थ्य और विशेष जरूरतों के बारे में पता हो सकता है। इस तरह की जागरुकता से उसे यह तय करने में मदद मिलेगी कि किस तरह की चिकित्सा और उपचार करवाने का सुझाव दिया जाना है और किन सहायक तकनीकों को अपनाया जा सकता है।

ऐसी स्थिति पर विचार करें जहां केवल 2 जी नेटवर्क है और केवल कुछ छात्रों के पास कम्प्यूटर है। स्थितियों के दौरान, जहां ऑनलाइन शिक्षा को एकमात्र समाधान के रूप में देखा जाता है, क्या शिक्षा जारी रखने के लिए केवल एक समाधान हो सकता है? शिक्षार्थी के संदर्भ को ध्यान में रखते हुए, हस्तक्षेप की योजना बनाना बहुत महत्वपूर्ण है। हो सकता है कि प्रसारण और टेलीकास्ट सिस्टम का उपयोग सीखने वालों को संबोधित करने के लिए वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से वर्गीकृत करने के बजाय किया जा सकता है।

उदाहरण के लिए दृषटिबाधित छात्र को शैक्षिक संसाधन प्रदान करते समय जानकारी को उस तक पहुँचाने में 'टेक्स्ट टू स्पीच' जैसे आई सी टी उपकरण महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। संसाधनों को सभी के लिए उपलब्ध कराने और उन्हें मुफ्त में प्रदान करने से निम्न आर्थिक पृष्ठभूमि के बच्चों को भी उनका उपयोग करने के अवसर मिलते हैं। इस प्रकार की समझ से शिक्षार्थी को उचित आई.सी.टी. का चयन करने में मदद मिलती है और कक्षा को सभी के अनुरूप बनाया जा सकता है।

विभिन्न संदर्भों में आई.सी.टी. का उपयोग करते हुए दो शिक्षकों पर निम्नलिखित 2 वीडियो देखे –

Scanned by CamScanner

विडियो 1 लिंक – https://youtu.be/yhhmcaq-8_w
(विडियो में दिखाये गए चरित्र – मो. इरफान खॉन शिक्षक निवासी अलवर (नेशनल आई.सी. टी.अवार्ड विनर) , सविता अध्यापिका , चंद्रप्रभा शर्मा अध्यापिका, कृष्ण मुरारी यादव अध्यापक, मंजू शर्मा प्रभारी प्र.अ., साहिल छात्र सभी अलवर के का विडियो) – विडियों में मो. इरफान खॉन के द्वारा बनाए गए शैक्षिक एप्स के बारे में बताया गया हैं एवं इन पर शेष की प्रतिक्रियायें हैं।
विडियो 2 लिंक – https://youtu.be/fyXRYb3awfA
(विडियो में दिखाये गए चरित्र – खयाति गुप्ता, राष्टीसल्व जनार्दन, आद्या गुप्ता, मिहिर चतुर्वेदी, सभी छात्र संस्कृति स्कूल । ऋचा शर्मा अग्निहोत्री प्राचार्य, पूर्णि राजेश स्कूल प्रभारी शिक्षिका, अंजू झा शिक्षिका, निलिमा गुप्ता शिक्षिका, सभी संस्कृति स्कूल जो कि संगीता गुलाटी मैडम जो कि 2016 में आई.सी.टी. अवार्ड विनर हैं कि प्रशंसा करते हुए दिखते हैं एवं संगीता गुलाटी मैडम ने अपने आई सी टी उपयोग के अनुभव साझा किए और सलाह दी।
निम्नलिखित पर चिंतन करें –
» इन दो स्कूलों में शिक्षार्थियों की विशषताओं में क्या अंतर हैं?
» आई.सी.टी. सुविधाओं के संदर्भ में इन दोनों स्कूलों में क्या अंतर हैं?
» क्या इन स्कूलों में आई.सी.टी. के हस्तक्षेप में कोई अंतर है? क्या? क्यों?

गतिविधि 4 (स्वयं करे) : COVID 19 स्थिति को ध्यान में रखते हुए, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में आने वाली चुनौतियों को सूचीबद्ध करने का प्रयास करें। आई.सी.टी. ने इस स्थिति के समाधान के लिए कुछ समाधानों (अखबारों / पत्रिकाओं आदि) के बारे में भी सोचो या खोजो। अपने विद्यालय / कक्षा के लिए इसका उपयोग कैसे किया जा सकता है, इस पर योजना बनाए।

पैरामीटर 3 (शिक्षण/अधिगम की पद्धति) : विचार करें –
1. शिक्षण–अधिगम के विभिन्न तरीकों के क्रियान्वयन में आई.सी.टी. कैसे सहयोग देता है?
2. विशिष्ट विषयों के शिक्षण और अधिगम के लिए कौन से नवीन और एकीकृत तरीके हैं, जिन्हें आई.सी.टी. में समाहित किया जा सकता है?
आई.सी.टी. उपकरण/मीडिया केवल तभी कारगर साबित होते हैं जब इसका उपयोग विषयवस्तु और शिक्षण–अधिगम पद्धति के साथ उचित रूप से किया जाता है। उदाहरण के लिए, यदि शिक्षक धातुओ और अधातुओ की अवधारणा को सिखाना चाहता है, तो उसके संदर्भ के अनुसार किसी भी एक पद्धति को चुना जा सकता है। एक तरीका यह भी हो सकता है कि एक समूह गतिविधि द्वारा रखी गई वस्तुओं के बीच तुलना और अंतर कराकर और अग्रलिखित चरणों का पालन करते हुए धातु और अधातु को परिभाषित किया जाए –
» कक्षा में धातु (जैसे – स्टेपलर पिन, सोने की अंगूठी) और अधातु (जैसे – प्लास्टिक के चम्मच, लकड़ी के ब्लॉक) से बनी वस्तुओं को दिखाए।
» धातुओं की अनिवार्य (जैसे – ठोस प्रकृति, बिजली का संवाहक) और गैर–अनिवार्य (जैसे – आकार, रंग) विशेषताओ का अनुमान लगाने के लिए, इसके गुणों की तुलना व अंतर करें।

Scanned by CamScanner

» जो गुण दिखाई दें, उनके आधार पर धातुओं और अधातुओं को परिभाषित करें।

» परिभाषा के आधार पर और भी उदाहरण (जैसे – लोहा, तांबा), जो उदाहरण नहीं हैं (जैसे – प्लास्टिक, लकड़ी) विपरीत उदाहरण (जैसे – पारा) और भी दें।

गतिविधि : गतिविधि 1 में चुने गए विषयों के आधार पर, उपयुक्त शिक्षण विधियों की पहचान करें और शिक्षण की उस पद्धति को चुनने के औचित्य के बारे में भी सोचें।

पैरामीटर 4 (तकनीक/उपकरण/ई– सामग्री) : विषय वस्तु के स्वरूप और जिस पद्धति को अपनाया जाना हैं, उसके साथ उनकी उपयुक्तता के अनुसार उपयुक्त आई.सी.टी. उपकरण और संसाधन चुने जा सकते हैं।

» छदम परिस्थितियों में प्रयोग–आई.सी.टी. का उपयोग उन वस्तुओं को प्रदान करने के लिए किया जा सकता है जो कक्षा की स्थिति में आसानी से सुलभ नहीं हैं। उदाहरण के लिए, उन वस्तुओं को लाना जो धातु और अधातु हैं और इसकी तुलना और संकुचन करके धातुओ और गैर–धातुओं की परिभाषा पर पहुचने के लिए इसके गुणों का परीक्षण करना। इस प्रयोजन के लिए, सिमुलेशन का उपयोग किया जा सकता है।

» स्लाइड प्रस्तुति – धातुओ और अधातुओ को परिभाषित करना और उदाहरण देना।

» संवादात्मक गतिविधियाँ (जैसे H5P)– समूह गतिविधि द्वारा धातुओ तथा आधातुओं के बीच तुलना और अंतर करवाना। फिर उन्हें समानता के आधार पर वर्गीकृत कर धातुओं और आधातुओं की परिभाषा निर्धारित करना। (http://nroer-gov-in पर H5P संवादात्मक सामग्री देखें)।

अत: यह शिक्षक पर निर्भर करता है कि वह शिक्षण–अधिगम पद्धति पर आधारित उपयुक्त माध्यम का उपयोग करें। यह समझना भी महत्वपूर्ण है कि एक शिक्षक परिचय, व्याख्या, सारांश आदि जैसे उद्देश्यों पर आधारित आई.सी.टी. /मीडिया माध्यमों का भी चयन कर सकता है। इस प्रकार यह समझना आवश्यक है कि प्रत्येक पद्धति की अपनी क्षमता है और उसी के अनुसार उसकी आई.सी.टी. में भी अलग जरूरतें हैं। शिक्षक में किसी भी पद्धति का विश्लेषण करने की क्षमता और आई.सी.टी में उसकी विशेष जरूरतों की जानकारी होनी चाहिए। तभी वे उपयुक्त आई.सी.टी. मीडिया का चयन कर पाएँगे। सीखने के अनुभवों में व्यापक रूप से सुधार लाने के लिए कई नवीन तरीकों (पद्धतियों) जैसे कि फ्लिप क्लास (कक्षा के बाहर अक्सर ऑनलाइन निर्देशात्मक सामग्री प्रदान करके पारंपरिक शैक्षिक व्यवस्था को उलटने वाली प्रणाली) ब्लेंडेड लर्निंग, सहयोगी शिक्षण आदि का उपयोग किया जा रहा है।

Scanned by CamScanner

ई–सामग्री या तकनीकी यंत्रों का चयन करते समय शिक्षकों द्वारा विचार किए जाने वाले मानदंड –

क्रम संख्या	मानदंड	विशेषताएँ
1.	लक्षित समूह	आयुवर्ग, पूर्व–ज्ञान, सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, सीखने की शैली, भाषा, जनसांख्यिकीय जानकारी, भावनात्मक विकास, क्षमता स्तर, सामाजिक विकास
2.	विषय	सटीकता, प्रासंगिकता, सामग्री की विस्तृत सूचना, नवीनतम, पाठ्यक्रम के अनुरूप आदि।
3.	शैक्षणिक विवेचन	उद्देश्य, सामग्री पहुँचाने का तरीका, मीडिया चयन, प्रस्तुति प्रारूप, स्पष्ट संचार, पक्षपात से मुक्त, स्थानीय आवश्यकताओं के लिए प्रासंगिकता, मूल्यांकन के अनेक तरीके, शिक्षार्थी की भागीदारी आदि।
4.	प्रस्तुति	सौंदर्यशास्त्र, प्रेरणा, अभिनव/रचनात्मक, फॉन्ट, प्रभाव, मीडिया तत्वों में सामंजस्य, मंथन और संगठन, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए उपयुक्तता, जेंडर समानता पर चर्चा, बहुसंस्कृतिवाद आदि।
5.	तकनीकी	तकनीकी त्रुटियों से रहित, ऑडियो विजुअल गुणवत्ता, निर्बाध संवादात्मकता और संचालन, लाइसेंस आदि।
6.	प्रशासनिक विचार	लागत, वितरण तंत्र, सहायता, सेवाएँ, प्रशिक्षण, रख–रखाव, ढाँचीय और तकनीकी आवश्यकता, उपलब्धता/प्राप्त करने का स्त्रोत

विभिन्न आई.सी.टी. उपकरणों/तकनीकों का पता लगाएँ (डॉ. रेजाउल करीम बड़भुईया) –

कुछ उपयोगी सॉफ्टवेयर एवं एप्प के उदाहरण जो विषयों को प्रभावशाली ढंग से पढ़ाने में मदद करेगे –

(1) जिओजेब्रा (GeoGebra) – गणित, विज्ञान के साथ पृथ्वी विज्ञान को सिखाने में उपयोगी। कभी–कभी इसे अर्थशास्त्र और कुछ भाषा के लिए भी उपयोग कर सकते हैं। (त्रिभुज के तीनों कोणों का योग 180^{0} होता हैं समझाने वाला उदाहरण – छात्र इसकी मदद से तथ्यात्मक कथन के बजाय सामान्यीकरण के रूप में समझ पावेगे) । विडियों में एक और उदाहरण विषयों के सिमुलेशन के लिए पानी के Ph मान का दिया गया जिसमें पानी को रक्त के साथ मिलाने पर Ph मान की बात कही गई ।

(2) कला और संस्कृति वेबसाईट – इसमें 2000 से अधिक संग्रहालय डिजीटली उपलब्ध हैं, यह मोबाईल एप्प के रूप में भी उपलब्ध हैं। सामाजिक विज्ञान, इतिहास जैसे विषय पढ़ाने के लिए उपयोगी।

Scanned by CamScanner

(3) मार्बल (Marbe Software) – यह एक ऐसा साफ्टवेयर होता हैं जो विशेषताओं के साथ डिजीटली ग्लोब का कार्य करता हैं। भूगोल विषय पढ़ाने के लिए बहुत उपयोगी।
(4) भुवन (Bhuvan) – सामाजिक विज्ञान और इतिहास के लिए उपयोगी।
(5) प्राथमिक स्तर के बच्चों को खेल के साथ पढ़ाने के लिए कुछ युक्तियॉ –

5.1 जी कॉम्पराइज (GCompris) – शैक्षिक खेलों का गेम पैकेज हैं।

5.2 एडुक्टिव 8 (Educative 8) – गणित गेम साफ्टवेयर हैं।

5.3 टक्स मैथ (Tux Math) – इस साफ्टवेयर में मोहर का प्रयोग कर इमेज किसी बेकग्राउण्ड में लगाई जा सकती हैं, बच्चा जब इसका प्रयोग करता हैं तो उसकी अभिव्यक्ति और ज्ञान के बारे में बहुत कुछ पता लग सकता हैं ।

अतिरिक्त गतिविधि (आई.सी.टी. पहलों का अन्वेषण करें) –

ICT INITIATIVES -

(1) ePathshala	-	https://epathshala.nic.in/
(2) NROER	-	https://nroer.gov.in/welcome
(3) SWAYAM MOOCs	-	https://swayam.gov.in/
(4) SWYAM Prabha	-	https://www.swayamprabha.gov.in/
(5) ICT in Eduacation Curriculum	**-**	**https://ictcurriculum.gov.in/**
(6) DIKSHA	-	https://diksha.gov.in/

डिजिटल शिक्षा : स्कूली शिक्षा के लिए निहितार्थ (प्रो. इन्दु कुमार) –

- आमतौर पर, ऑनलाइन शिक्षा और डिजिटल शिक्षा का पर्यायवाची के रूप में उपयोग किया जाता हैं। वास्तव में ऑनलाइन शिक्षा इलेक्ट्रॉनिक रूप से समर्थित शिक्षण हैं, जहाँ शिक्षक और छात्रों के मध्य वार्तालाप और शिक्षण सामग्री का वितरण मुख्यतः इंटरनेट की उपलब्धता पर निर्भर करता है। जबकि, डिजिटल शिक्षा ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनो ही हो सकती हैं, क्योकि इसके माध्यम से छात्रों तक पहुंचने और शिक्षा के सम्प्रेषण के लिए गैर–इंटरनेट आधारित प्रौद्योगिकियों का भी प्रयोग किया जाता हैं।
- जहां तक भारतीय घरों में बुनियादी डिजिटल ढांचे की उपलब्धता का सवाल है। हम भारतीय परवार को छह श्रेणियों में वर्गीकृत कर सकते हैं।

1. ऐसे घर जिनमें सभी संभव इंटरनेट और गैर–इंटरनेट आधारित प्रौद्योगिकियां जैसे – कम्प्यूटर, लैपटॉप, 4जी नेटवर्क वाला स्मार्टफोन, DTH या केबल कनेक्शन के साथ टेलीविजन सेट उपलब्ध हैं।
2. ऐसे घर जिनके पास स्मार्टफोन है लेकिन सीमित इंटरनेट है
3. ऐसे घर जिनके पास सीमित 3g या 2g इंटरनेट वाला स्मार्टफोन हैं या इंटरनेट है ही नही।
4. ऐसे घर जिनके पास डीटीएच या केबल कनेक्शन के साथ घर पर टेलीविजन है।
5. ऐसे घर जिनमे रेडियो या रेडियो वाला बेसिक मोबाइल फोन ही है।
6. ऐसे घर जिनके पास किसी भी तरह का डिजिटल डिवाइस उपलब्ध नही है।

Scanned by CamScanner

- बुनियादी डिजिटल ढांचे में विविधता के अलावा भारत की विशालता भी डिजिटल शिक्षा के लिए एक रूपी योजना बनाने के रास्ते मे बाधा है।
- डिजिटल शिक्षा का विकेंद्रीकृत नियोजन, कार्यान्वयन और विकास आवश्यक हैं।
- डिजिटल शिक्षा के प्रसार के तीन तरीके हैं –

(1) ऑनलाइन मोड (2) आंशिक रूप से ऑनलाइन मोड और (3) ऑफलाइन मोड । उक्त तीन तरीको के तहत विभिन्न मॉडल उपलब्ध हैं जो निम्नानुसार हैं –

(1) ऑनलाइन मोड –

1.1 मॉडल 1 – इसमें शिक्षक मैसेंजर, स्मार्टफोन और ईमेल के माध्यम से सीखनेके संसाधन को साझा करता है और छात्र पूरी तैयारी के साथ वीडयो कॉन्फ्रेंसिंग टूल के माध्यम से ऑनलाइन उपस्थिति के दौरान अपने प्रश्नों पर चचा करते हैं।

1.2 मॉडल 2 – इसमें समय सारणी के अनुसार वीडयो कॉन्फ्रेंसिंग टूल के माध्यम से ऑनलाइन कक्षाओं का संचालन किया जा सकता हैं।

1.3 मॉडल 3 – इसमें किसी भी अधिगम प्रबंधन प्रणाली (LMS) के माध्यम से एक निर्धारित लाइव क्लास का संचालन किया जाता हैं और छात्र (LMS) से एकिकृत लाइव सत्र के दौरान मंचो या समूह के माध्यम से चर्चा में भाग लेते हैं। सभी शिक्षण सामग्री और संसाधन एलएमएस (LMS) में ही साझा किए जाते हैं और असाइनमेंट भी एलएमएस (LMS) के माध्यम से जमा किये जाते है।

(2) आंशिक रूप से ऑनलाइन मोड –

2.1 मॉडल 1 – शिक्षक त्वरित मेसेंजर या ईमेल के माध्यम से दिक्षा (DIKSHA), ई पाठशाला (EPathshala), एन. आर. ओ. ई . आर. (NROER), एन .डी. एल. (NDL) या किसी भी सार्वजनिक रूप से सुलभ मंच पर उपलब्ध संसाधन के लिंक साझा करते है । छात्र उन संसाधन को ऑफलाइन उपयोग के लिए डाउनलोड कर सकते हैं। शिक्षक आगे की जानकारी और ज्ञान वर्धन के लिए ऑफलाइन की जाने वाली गतिविधियों का भी सुझाव देते हैं।

2.3 मॉडल 3 – शिक्षक सी डी ,डी वी डी या पेनड्रॉइव में सन्दर्भ सामग्री जैसे वीडियो लेक्चर , डेमोंस्ट्रेशन, सिमिलेशन इत्यादि छात्रों को देते हैं। शिक्षक सुविधानुसार सप्ताह में एक बार या अधिक ऑनलाइन आकर छात्रों की शंकाओं और प्रश्नों का समाधान कर विषयवस्तु स्पष्ट करते हैं।

(3) ऑफलाइन मोड –

3.1 मॉडल 1 – इसमें कक्षा वार और विषयवार संसाधन स्वयं (SWAYAM), प्रभा, वंदे गुजरात, विक्टर चैनल या मन्ना (MANNA) टीवी आदि जैसे टीवी चैनल पर प्रसारित होते हैं

3.2 मॉडल 2 – इसमें कक्षा और विषय के अनुसार संसाधन, जैसे वीडयो लेक्चर, प्रदर्शन कहानियां आदि को पेन ड्राइव जैसे भंडारण उपकरणों के माध्यम से छात्रों के साथ साझा किया जाता है। संसाधन को छात्रों द्वारा अपने घर में उपलब्ध नए टेलीविजन सेट के माध्यम से देखा जाता हैं।

Scanned by CamScanner

3.3 मॉडल 3 – जहां टीवी भी छात्रों के पास उपलब्ध नहीं है। पंचायत घर कार्यालय या सार्वजनिक स्थनों पर उपलब्ध सामुदायिक टेलीविजन का उपयोग सामूहिक शिक्षा के लिए किया जा सकता हैं।

रेडियो का उपयोग करने वाले मॉडल – यह शायद सबसे कम लागत वाला माध्यम है खास कर उस स्थिति में जब टीवी भी उपलब्ध नही है या जब बिजली की आपूर्ति अनियमित होती है।
रेडियो आधारित मॉडल 1 – इसमें कक्षा अनुसार या विषय अनुसार ऑडियो सामग्री को आल इंडिया रेडियो द्वारा समर्थित रेडियो चैनल के माध्यम से प्रसारित किया जा सकता है। पाठ्यक्रम के अनुसार ऑल इंडिया रेडियो के माध्यम से ऑडयो कार्यक्रम को प्रसारित किया जा सकता हैं।
रेडियो आधारित मॉडल 2 – इसके तहत सामुदायिक रेडियो या एफएम (FM) रेडियो चैनल शिक्षण अधिगम संसाधनों का प्रसारण करते हैं और कई बार स्थानीय जरूरतों के हिसाब से उन्हें ढालते भी हैं।
रेडियो आधारित मॉडल 3 – जहां छात्रों के साथ रेडियो भी उपलब्ध नही है पंचायत संघ कार्यालय में या सार्वजनिक स्थान पर उपलब्ध सामुदायिक रेडियो का प्रयोग करते हुए सामूहिक रूप से छात्रों को शिक्षित किया जा सकता हैं।

- डिजिटल शिक्षा के बारे में कई गलत धारणाएं प्रचलित हैं। हमें यह नही मान लेना चाहिए कि ऑनलाइन सिंक्रोनस कम्युनिकेशन के माध्यम से शिक्षण अधिगम ही एकमात्र तरीका है जिससे बच्चों को समर्थित किया जा सकता हैं ।

पूर्व प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक कक्षाओं के लिए अनुशंसित स्क्रीन समय की सारणी –

कक्षा	सिफारिश
पूर्व प्राथमिक	एक दिन में अभिभावकों के मार्गदर्शन के लिए निर्धारित समय 30 मिनट से अधिक नहीं होना चाहिए
कक्षा 1 से 12	एन सी ई आर टी द्वारा विकसित वैकल्पिक अकादमिक कैलेण्डर को अपनाया जाए
कक्षा 1 से 8	ऑनलाइन तुल्यकालिक अधिगम के दो सत्र 30–45 मिनट की अवधि से अधिक न हो
कक्षा 9 से 12	ऑनलाइन तुल्यकालिक अधिगम के चार सत्र 30–45 मिनट की अवधि से अधिक न हो

Scanned by CamScanner

गतिविधि 5 (डिजिटल सत्र की योजना बनाना) :

विचार करें कि एक गंभीर चक्रवात है और छात्र कक्षा में आने की स्थिति में नहीं हैं। इस दशा में अपनी कक्षा को ध्यान में रखते हुए, गतिविधियों की योजना बनाए जो आपके विषयों के शिक्षण – सीखने के लिए आयोजित की जा सकती हैं। अपने छात्रों के साथ उन गतिविधियों का संचालन करने का प्रयास करें और अपने अनुभव के बारे में एक डायरी लिखें।

ऑनलाइन शिक्षण के दौरान सुरक्षा, बचाव और गोपनीयता (डॉ. रेजाउल करीम बड़भुईया) :

- बहुत ही कम उम्र में हमारे विद्यार्थी साइबर की दुनिया में परिचित हो रहे हैं इसलिए इस विषय पर चर्चा आवश्यक हैं।
- डिजिटल दुनिया मे बच्चे अत्यधिक असुरक्षित हैं, क्योंकि वे डिजिटल दुनिया में होने वाले खतरों से अवगत नहीं हैं और ऐसे वातावरण में किए जाने वाले सुरक्षा उपायों की भी बहुत सीमित समझ विद्यार्थियों में हैं।
- डिजिटल सेफ्टी न केवल आपकी सूचना को सुरक्षित रखने के बारे मे है, बल्कि अन्य लोगों के लिए किस तरीके से सम्मानजनक हुआ जाए एवं अच्छे इंटरनेट शिष्टाचार का उपयोग करने से भी आपको अवगत करती है। इसलिए साइबर सुरक्षा में कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर और डेटा को हमले से, क्षति से या अनाधिकृत पहुंच या उपयोग से बचाने के लिए डिजाइन की गई प्रैद्योगिकियाँ, प्रक्रियाएँ और अभ्यास शामिल हैं।
- डिजीटल दुनिया में होने के दौरान निम्न सावधानी रखे – मजबूत पासवर्ड रखे, अपनी व्यक्तिगत जानकारी को हर कही साझा न करे, पायरेटेड साफ्टवेयर का उपयोग न करे, अपने सोशल अकाउंट को कभी भी अनअटेंडेड या अनलॉक न छोड़े, साइबरस्पेस में संचार के दौरान विनम्र रहे, कोई भी कटेंट लेने में कॉपीराइट नियमों का पालन करे, डिजीटल माध्यमों में लगातार अधिक समय तक कार्य न करे।

गतिविधि 6 (ऑनलाइन रहते हुए सुरक्षा और सुरक्षा के उपाय) :

1. किसी अज्ञात व्यक्ति के साथ व्यक्तिगत जानकारी जैसे आयु, पता, फोन नंबर आदि को साझा न करें क्योंकि इससे पहचान की चोरी हो सकती है। अपने छात्रों को भी यही सलाह दें।
2. ऑनलाइन कक्षाओं के लिंक को पासवर्ड से सुरक्षित किया जाना चाहिए और प्रत्येक प्रतिभागी के साथ व्यक्तिगत रूप से साझा किए जाने वाले लिंक होने चाहिए।
3. छात्रों के साथ स्क्रीन साझा करते वक्त सावधानी बरतने की आवश्यकता है।
4. सार्वजनिक नेटवर्क या कंप्यूटर पर व्यक्तिगत USB या हार्ड ड्राइव जैसे व्यक्तिगत उपकरणों का उपयोग न करें।
5. पासवर्ड दिशा निर्देशों के अनुसार अपने सभी डिजिटल खातों (ई मेल, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग सॉफ्टवेयर, बैंकिंग, ईकॉमर्स, आदि) के लिए एक मजबूत पासवर्ड बनाएं और दुरुपयोग को रोकने के लिए अक्सर पासवर्ड बदलें।
6. ऑनलाइन कक्षाओं के प्रतिभागियों पर सख्ती से नजर रखी जानी चाहिए। सभी प्रतिभागियों को अपने असली नाम का उपयोग करना चाहिए, और शुरुआत में अपना चेहरा दिखा कर अपना परिचय देना चाहिए।

Scanned by CamScanner

7. पायरेटेड सॉफ्टवेयर के उपयोग से बचें। ओपन सोर्स या लाइसेंस (खरीदे गए) सॉफ्टवेयर और ऑपरेटिंग सिस्टम का उपयोग करें।
8. लॉगिन के बाद अपने खाते को खुला न छोड़ें, जब आप इसका उपयोग नहीं कर रहे हों तो लॉग आउट करें।
9. छात्रों को सलाह दें कि वे अपने माता–पिता या अभिभावक के अलावा किसी और को अपना पासवर्ड न बताएं।
10. केवल परिचित लोगों के साथ संवाद करें।
11. किसी भी वेबसाइट या मैसेजिंग ग्रुप पर तस्वीरें, वीडियो और कोई भी संवेदनशील जानकारी पोस्ट करते समय सावधान रहें। उदाहरण के लिए, ऑनलाइन / ऑफलाइन कक्षाओं के दौरान आपके ऑनलाइन कक्षाओं या आपके छात्रों की छवियों की वीडियो रिकॉर्डिंग ऑनलाइन अपलोड करने की आवश्यकता नहीं है जब तक कि आवश्यक न हो।
12. दूसरों की भावनाओं को आहत करने वाली कोई भी पोस्ट न करें। छात्रों को यही सलाह दें।
13. नेटवर्किंग साइटों पर अपने दोस्तों या छात्रों की जानकारी को पोस्ट न करें, जो उन्हें जोखिम में डाल सकते हैं।
14. एक विश्वसनीय स्रोत से इसे सत्यापित किए बिना जो कुछ भी आप सोशल मीडिया पर पढ़ते हैं उसे आगे न भेजें।

विषय सामग्री – प्रौद्योगिकी एकीकरणः एक उदाहरण –

सामग्री और शिक्षाशास्त्र के साथ आई.सी.टी. एकीकरण शिक्षकों की दक्षताओं पर निर्भर करता है। अधिकांश कक्षाएं पूरी तरह से आईसीटी आधारित सत्र नहीं हो सकती हैं, बल्कि यह एक मिश्रित विधि होती है जिसमें आई.सी.टी. आधारित गतिविधियों को पारंपरिक शिक्षण / सीखने के अनुभवों के साथ मिश्रित किया जाता है। शिक्षणशास्त्र और मूल्यांकन में आई.सी.टी. को एकीकृत करने का कौशल अभ्यास और प्रौद्योगिकी शिक्षा और विषयवस्तु ज्ञान (टीपीएकेई) के आधार पर विकसित होता है। आई.सी.टी. एकीकरण इस तरह सार्थक होना चाहिए कि यह किसी अन्य पारंपरिक शिक्षण सहायक के विकल्प बनने के बजाय शिक्षार्थियों द्वारा ज्ञान के निर्माण को बढ़ावा दे।

कक्षा 8 विज्ञान विषय फसले और फसल के प्रकार का उदाहरण।

Scanned by CamScanner

सारांश

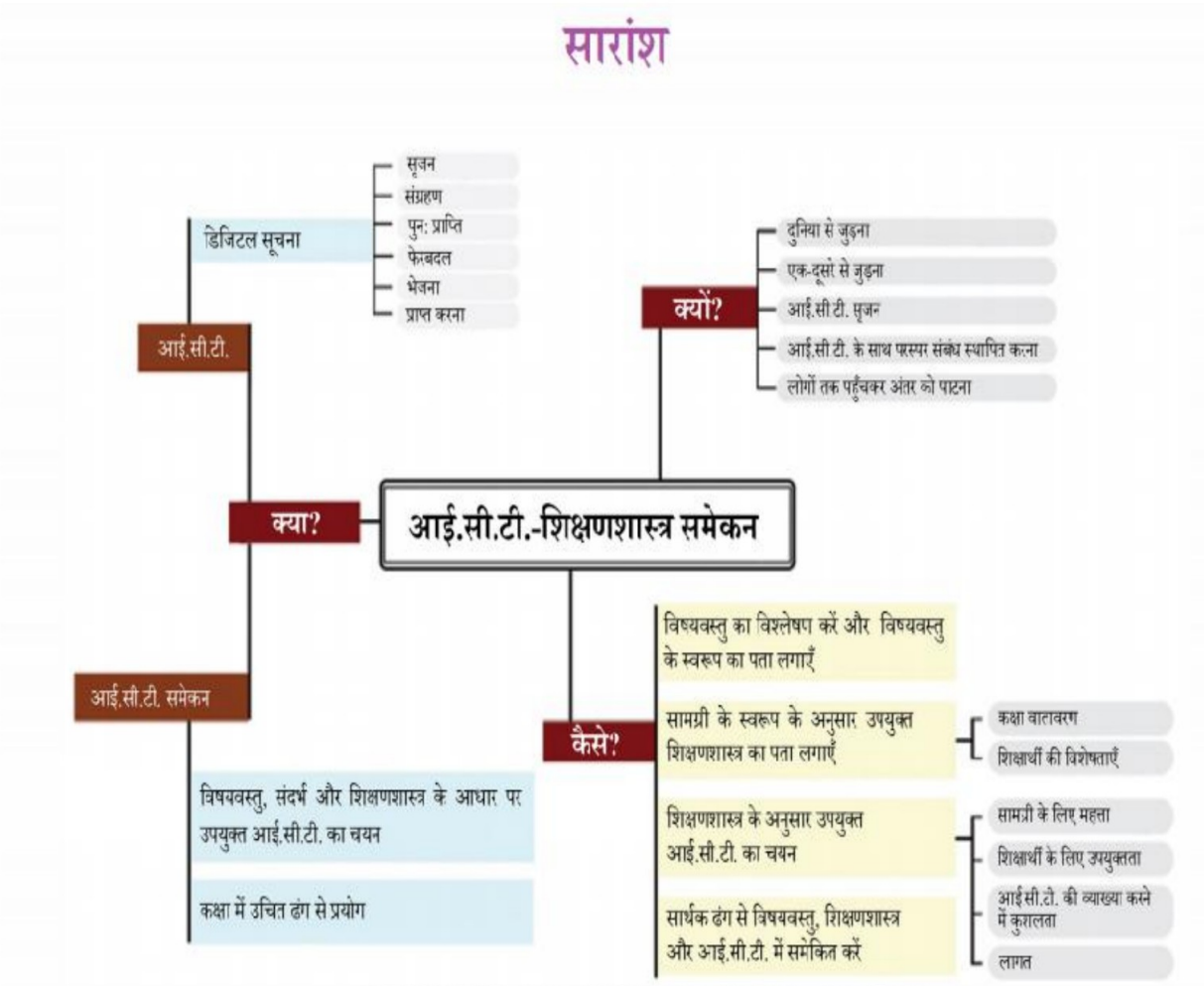

पोर्टफोलियों गतिविधि (एक आई.सी.टी. एकीकृत सत्र योजना की योजना बनाना) :

अपनी पसंद के किसी भी विषय का चयन अपने संबंधित विषय से करें। चयनित विषय के लिए शिक्षण / सीखने / मलूयांकन के लिए आई.सी.टी. एकीकृत विचारों की पहचान करें और फिर निम्नलिखित विवरण प्रस्तुत करें :

» विषय : » ग्रेड : » अध्याय : » विषय :
» अध्ययन के परिणाम : » मखुय विचार / सामग्री कवरेज :
» पूर्व ज्ञान : » आई.सी.टी. एकीकृत सीखने के अनुभवों के लिए योजना :
» मूल्यांकन के लिए योजना :

Scanned by CamScanner

शिक्षकों के लिए उपकरण की लिंक :–
http://cemca.org.in/ckfinder/userfiles/files/Technology%20Tools%20

प्रश्नोत्तरी :

प्रश्न 1. ई–सामग्री निर्माण के निःशुल्क एवं ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर/मंच हैं ?
उत्तर 1. सभी
प्रश्न 2. निम्नलिखित में से कौन सा कथन सत्य नही हैं ?
उत्तर 2. ओपेनशॉट वीडियो एडिटर गेम्स और एनिमेशन बनाने के लिए फ्री ऑलाइन प्रोग्रामिंग सॉफ्टवेयर हैं।
प्रश्न 3. ई–पाठशाला हैं ?
उत्तर 3. सभी
प्रश्न 4. एक फ्री और ओपन–सोर्स साफ्टवेयर हैं ?
उत्तर 4. कोई भी नही
प्रश्न 5. आईसीटी समेकित शिक्षण के लिए विषय–वस्तु विश्लेषण की क्या आवश्यकता हैं ?
उत्तर 5. सभी
प्रश्न 6. ओपन एजुकेशनल रिसोर्स (OER) हैं ?
उत्तर 6. सभी
प्रश्न 7. ई – सामग्री हैं ?
उत्तर 7. सभी
प्रश्न 8. आई सी टी कैसे अधिगम, शिक्षण और मूल्यांकन में सहयोग देता हैं ?
उत्तर 8. सभी
प्रश्न 9. आई सी टी सम्बन्धित नही हैं ?
उत्तर 9. कल्पना
प्रश्न 10. अधिगम एवं शिक्षण के लिए आई सी टी क्यो महत्वपूर्ण हैं ?
उत्तर 10. सभी

–– 00 कोर्स 5 समाप्त 00 ––

Scanned by CamScanner

कोर्स – 6
[कला समेकित शिक्षा (Art Intigrated Learning)]

मॉड्यूल के उद्देश्य :– इस मॉड्यूल के द्वारा हम निम्न कार्यो में सक्षम हो जायेगे –

- ❖ 'कलाएँ,' शैक्षणिक माध्यम कैसे बन सकती हैं ;
- ❖ प्रत्येक बच्चे के सीखने और समग्र विकास पर इनके प्रभाव को समझना;
- ❖ बच्चे की रचनात्मक अभिव्यक्ति का पता लगाने के माध्यम के रूप में कला अनुभव (विभिन्न कला रूपों) के साथ परिचय ;
- ❖ विभिन्न विषयों की शिक्षा को रोचक बनाने के लिए योजना बनाने और आय–उपयुक्त कला अनुभवों के आयोजन की योग्यता हासिल करना।
- ❖ कला समेकित शिक्षा का उपयोग ,योग्यता आधारित शिक्षा को मापने के लिए एक आंकलन उपकरण के रूप में करें।

सामग्री की रूपरेखा :–

(1) कला समेकित शिक्षा क्या है
(2) शिक्षण के रूप में कला समेकित शिक्षा
(3) विभिन्न विषयों और अवधारणाओ के साथ कला समेकित शिक्षा को जोड़ना
(4) कला समेकित शिक्षा द्वारा आंकलन करना

कला समेकित अधिगम : एक परिचय (प्रो. पवन सुधीर) :–

- कला समेकित अधिगम सीखने और सिखाने का एक नया मॉडल है जिसमें 'कला के माध्यम से' और कला के साथ सीखते हैं।
- सीखने के लिए कला समेकन का अर्थ है कलाओं (यानि की दृश्यात्मक एवं प्रदर्शनात्मक) का सीखनेऔर सिखाने की प्रक्रिया में पूर्ण रूप से घुल जाना यानि कि एक हो जाना।
- कला केन्द्रित पाठ्यक्रम विषयों और उनसे सम्बन्धित अवधारणाओं को सरल और स्पष्ट करता है, विभिन्न विषयों को जोड़ने में एक सेतु का कार्य करता है और विषयों और अवधारणाओं को तर्कपूर्ण, अर्थपूर्ण ओर बाल केन्द्रित भी बनाता है।
- कला माध्यम सभी विषय जैसे विज्ञान, गणित, भाषा, सामाजिक अध्ययन आदि की अमूर्त अवधारणाओं को मूर्त करने और इन्हें एक दूसरे से जोड़ने में सहायक सिद्ध होता है। इस विधि में सीखना आन्नददायी, अनुभवजन्य एवं समग्र होगा।
- शिक्षक, कला समेकित विधि को आंकलन के लिए भी उपयोग में ला सकते हैं।
- सीखने सीखाने का यह मॉडल शिक्षण शास्त्र, और करके सीखने की अवधारणा से अवगत कराता है। इसमें स्वतंत्र रूप से सोचने, कल्पना करने, खोजने, अवलोकन करने, निर्माण करने और अभिव्यक्त करने के तरीके और अभ्यास भी शामिल हैं।

Scanned by CamScanner

कला समेकित शिक्षा–अवधारणा (प्रो. पवन सुधीर , प्रो. ज्योत्स्ना तिवारी, डॉ.शर्बरी बैनर्जी) :–

- समेकन या एकीकरण का अर्थ है, 'संपूर्ण इकाई बनाने के लिए भागों को जोड़ना। इस प्रकार, कला एकीकरण का अर्थ है – विभिन्न विषयों के सीखने–सिखाने में 'कला का संयोजन' करना।
- कला विषयों की अमूर्त अवधारणाओं को सहजता से मूर्त रूप दे सकती हैं।
- सीखनेके इस तरीके से विषय के बारे में ज्ञान और समझ तो बढ़ती ही है, और साथ ही साथ शिक्षार्थियों में कला को सरहाने की क्षमता भी बढ़ाती है। इसे ही समग्र या संपूर्ण अधिगम कहा जाता है।
- 'कला' अभिव्यक्ति के लिए दृश्यकला या प्रदर्शनकला के रूप में भाषा प्रदान करती हैं ।
- कला समेकत परिवेश शिक्षार्थी को ऐसे अनुभव प्रदान कराता है जिसमें उसका शरीर, हृदय और मस्तिष्क एक साथ काम करते हैं।
- दृश्य कला – ऐसी कलाएं जिन्हे मुख्य रूप से देखा या सराहा जाये जैसे – चित्रकला, फोटोग्राफ, छापाकला, मंच सज्जा, मिट्टी से बनी आकृतियाँ, मूर्तिकला, एप्लाइड आर्ट व शिल्प आदि।
- प्रदर्शन/मंचीय कला – इसमें संचालन और मौखिक कौशल, चेहरे के भाव और शरीर की गति व लय का उपयोग करके प्रस्तुत की गई कलात्मक अभिव्यक्तियाँ शामिल होती हैं। जैसे – नृत्य, संगीत (गायन और वाद्य), रंगमंच, कठपुतली, मूकाभिनय, कहानी वाचन, मार्शल आर्ट, जादू का प्रदर्शन, सिनेमा आदि।
- कला शिक्षा और कला समेकित शिक्षा में अन्तर – 'कला शिक्षा' एक विषय है, जिसकी अपनी शब्दावली है, भाषा है, सिद्धान्त है, और प्रस्तुती एवं प्रदर्शन की विशेष विधियाँ हैं। कला शिक्षा वह प्रक्रिया है जो संवेदी भावों को प्रोत्साहित करती है। यह उन अभिव्यक्तियों के सृजन हेतु विचारों और सामग्रियों के साथ काम करने का एक मंच प्रदान करती है, जिन्हे केवल शब्दों में व्यक्त नही किया जा सकता। यह गैर–मौखिक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करती है, चाहे वह गीत, पेटिंग या प्रस्तुती आदि के रूप में हो।
  दूसरी ओर, कला समेकित शिक्षा में, हम कला को पाठ्यक्रम का आधार बनाते हुए विभिन्न विषयों को सीखते और सिखाते हैं। विभिन्न कलाओं के माध्यम से विषयों एंव उनकी अमूर्त अवधारणाओं को मूर्त रूप प्रदान करते हैं। इस तरह कला समेकित शिक्षा बच्चों को कई तरह के कौशलों और क्षमताओं का उपयोग करने में सक्षम बनाती हैं और सीखने को अनुभवजन्य एवं आन्नददायी।
  (सारांश में यह समझ सकते हैं कि कला शिक्षा एक विषय हैं जबकि कला समेकित शिक्षा विभिन्न विषयों को सीखाने में मदद करती हैं)
- कला समेकित अधिगम का सक्षमता आधारित शिक्षण के लिए महत्व – शिक्षण कला समेकित अधिगम की गतविधियों में संज्ञानात्मक, भावात्मक और मनोपरक तीनों क्षेत्रों का समावेश होता है, जिससे योग्यता आधारित शिक्षण और क्षमता आधारित सीखने के प्रतिफल की शैक्षणिक आवश्यकता पूरी होती है। इसमें शिक्षार्थियों को मुफ्त अभिव्यक्ति हेतु पर्याप्त स्थान की उपलब्धता, सामग्री की समझ का निर्माण और प्रदर्शन के अवसर मिलते हैं।

Scanned by CamScanner

इसमें अवलोकन, कल्पना, अन्वेषण, प्रयोग, निर्माण और ज्ञान के विभिन्न चरणों से गुजरने के लिए रचनात्मक प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेने का भी मौका मिलता है। कला समेकित अधिगम, शिक्षकों को सीखने की निरंतर और व्यापक प्रक्रिया की समीक्षा करने के लिए मार्गदर्शन करता है जिससे उन्हें, उनकी बच्चों की आवश्यकता के अनुसार विषय को सीखाने में सहायता मिलती है। कला समेकित अधिगम, मूल्यांकन की प्रक्रिया को पारदर्शी बनाने में भी मदद करता हैं जिसमें विद्यार्थियों को अपनी समझ विकसित और अभिव्यक्त करने के लिए विभिन्न माध्यम रखे जाते हैं। कला समेकित अधिगम, दक्षता– आधारित सीखने और क्षमता–आधारित शिक्षा का आंकलन करने के लिए एक प्रभावी उपकरण बनाता है।

- सीखने की प्रक्रिया को समग्र और अनुभवात्मक बनाने में कला की भूमिका – कला के विभि न्न रूपों से जुड़ते हुए शिक्षार्थी विभिन्न चरणों से गुजरते हैं ,जैसे कि निरीक्षण, अवलोकन, विचार, कना, खोज, प्रयोग, तर्क या विचार–विमर्श द्वारा निर्णय पर पहुँचना, सृजन, पुन:सृजन एवं अभिव्यक्ति। ये सभी क्रियाकलाप हमारे संज्ञानात्मक, मनोप्रेरणा और भावात्मक ज्ञान क्षेत्र को जागृत करती ह। अतः इसका यह स्वरूप प्रयोगात्मक होकर प्रत्येक शिक्षार्थी का समग्र विकास करने में सहायक हैं, इस तरह के अनुभवों से अन्य विषयों में शिक्षण बेहतर ढंग से दिया जा सकता हैं। कला ही आधार हैं एवं सर्वांगीण विकास का उपाय।
- कला समेकित शिक्षण से शिक्षा के समावेशी ढाँचे में सहायता – कला का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है कि इसमें कोई सही या गलत उत्तर नही होता है। अनुभव ही ज्ञान प्राप्त करने के तरीके बतलाता है। शिक्षित से अशिक्षित, विशेष आवश्यकता समूह से सामाय समूह या लड़कियों से लड़कों की कला के काम में अंतर करने की आवश्यकता नही है, क्योकि कला स्वयं की क्रियात्मक अभिव्यक्ति है। कला के माध्यम से शिक्षण, वंचितों को अपने अंतरंग की भावनाओं को व्यक्त करने में मदद करता है। इसी तरह जो लोग ऐसे समुदाय के है जिन्हे सामाजिक बहिष्कार का शिकार होना पड़ता है, वे कक्षा में सभी के साथ आसानी से जुड़ कर काम कर सकते हैं। क्योकि कला एक ऐसी यात्रा है, जिसमें सभी के पास अलग–अलग जवाब होते हैं। कला से जुड़ी गतिविधियाँ बच्चों को एक–दूसरे के साथ जुड़ने में मदद करती हैं। धीरे – धीरे बाधाएँ दूर हो जाती है और विभिन्न पृष्ठभूमि से संबंधित बच्चे आपस में संवाद करने की क्षमता पाते हैं।

गतिविधि 1 (अपनी समझ की जाँच करें) :

सही / गलत चुने

1. फोटोग्राफी, कठपुतली बनाना, मुखौटा बनाना प्रदर्शन कला के उदाहरण हैं। (गलत)
2. विजुअल आर्ट्स में ड्रॉइंग, पेंटिंग, क्ले–मॉडलिंग, पेपर क्राफ्ट आदि शामिल हैं। (सही)
3. कला समेकित शिक्षण सक्षमता आधारित शिक्षण को बढ़ाता हैं। (गलत)
4. कला समेकित शिक्षा एक विषय हैं। (गलत)

Scanned by CamScanner

पढ़ने के लिए अतिरिक्त सामग्री :

1. प्राथमिक शिक्षकों के लिए कला शिक्षा पर प्रशिक्षण पैकेज –1

लिंक – http://www-ncert-nic-in/departments/nie/deaa/publication/Print/pdf/tpaev201-pdf

2. प्राथमिक शिक्षकों के लिए कला शिक्षा पर प्रशिक्षण पैकेज –2

लिंक – http://www-ncert-nic-in/departments/nie/deaa/publication/Print/pdf/tpaefptv1-pdf

3. दिशा–निर्देश – कला समेकित शिक्षा

http://www-ncert-nic-n/departments/nie/deaa/publication/Nonprint/pdf/AILGuidelines&English-pdf

अंग्रेजी में कला समेकित शिक्षा – एक नमूना :

विषय – अग्रेजी , कक्षा – आठ , अध्याय 8 – ए शॉर्ट मॉनसून डायरी

यहाँ दी गई गतिविधियाँ, अधिगम उद्देश्य (LO) के संदर्भ को ध्यान में रखते हुए डिजाइन की गई हैं और संदर्भित सामग्री NCERT पाठ्यपुस्तकों से ली गई है। हालाँकि राज्य अपनी स्वयं की पाठ्यपुस्तकों / पाठ्यक्रम का उल्लेख कर सकते हैं। कला के अनुभव इस तरह से संचालित किए जाते हैं कि किसी भी वर्ग या विषय की कोई भी गतिविधि जो पानी से संबंधित है, आसानी से जोड़ी जा सकती है गतिविधियों के लिए चयनित विषय में अंतःविषय लिंक का स्पष्ट उल्लेख है।

विद्यार्थियों के लिए अधिगम उद्देश्य –

इन गतिविधियों के आधार पर निम्नलिखित अधिगम उद्देश्य प्राप्त किए जा सकते हैं–

कक्षा viii – अंग्रेजी

शिक्षार्थी–

- ❖ विभिन्न संदर्भों और स्थितियों में प्रश्न पूछता है (उदाहरण के लिए, बातचीत के दौरान उपयुक्त शब्दावली और सटीक वाक्यों का उपयोग करते हुए पाठ पर आधारित/पाठ से भिन्न/कौतुहलवश);
- ❖ स्कूल और अन्य ऐसे संगठनों द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों, जैसे– वार्तालाप–गतिविधि,कविता पाठ, प्रहसन, नाटक, वाद–विवाद, भाषण, वक्तव्य, व्याख्यान, प्रश्नोत्तरी आदि में भाग लेता है;
- ❖ वास्तविक जीवन के अनुभव और (वास्तविक या काल्पनिक) कहानियाँ सुनाता हैं
- ❖ पढ़ता है, समानताएँ देखता है, परस्पर तुलना करता है, गंभीर रूप से विचार करता है और विचारों को जीवन से जोड़कर देखता है;
- ❖ प्रिंट/ऑनलाइन, नोटिस बोर्ड, समाचार पत्र आदि से सूचना प्राप्त कर लेख तैयार करता है।

बारिश का दिन–कला समेकित शिक्षा(प्रो. पवन सुधीर, प्रो.शर्बरी बनर्जी) :

बारिश का अनुभव देने के लिए हथेली पर अंगुलियों की ध्वनि वाली गतिविधि (पहले क्रमशः एक अंगुली से, दो अंगुली से, तीन अंगुली से, चार अंगुली से, पाँच अंगुली से। फिर घटते क्रम में । कभी कभी Randomly इस तरह से अंगुली की ध्वनि से बरसात होने पर ध्वनि के समान ध्वनि करते हैं) । गतिविधि को बंद आँखों से दोहराना हैं । इस गतिविधि से ध्वनि रूप में अच्छा अनुभव बच्चे बारिश का कर सकेगे। कक्षा में बड़ी संख्या में बच्चे होते हैं जब एक साथ वे ये गतिविधि करेगे तो ध्वनि से वास्तव में बहुत अच्छा बरसात के समान

Scanned by CamScanner

अनुभव होगा। इस गतिविधि में बरसात के ध्वनि रूप में अनुभव के साथ बच्चे गिनती भी सिखेगे।

आगे गतिविधि को बढ़ाते हुए दूसरी गतिविधि के रूप में कक्षा को दो बराबर समूह(संख्या के मान से) में विभाजित करेगे। एक ग्रुप को बरसात की ध्वनि निकालने के लिए कहेगे दूसरे ग्रुप को बरसात के दौरान प्राप्त विभिन्न अनुभवों को अभिनय के द्वारा व्यक्त करने के लिए कहेगे। बच्चें स्वाभाविक रूप से भिन्न भिन्न अनुभव साझा करेगे तो कक्षा का माहौल बहुत अच्छा हो जायेगा। इस गतिविधि से सभी बच्चे अलग–अलग तरह की परिस्थितियॉ सोचेगे।

इस तरह से छोटी–छोटी गतिविधियों के माध्यम से कला समेकित शिक्षा संचालित की जा सकती हैं।

इस तरह की छोटी छोटी आनंददायक गतिविधियॉ शिक्षक स्वयं सोचकर कक्षाओं में कराने के प्रयास करे ।

गतिविधि 2 (अनुवर्ती गतिविधि – बारिश का दिन) :

स्वयं प्रयास करें 1: बारिश की आवाज उत्पन्न करना

निर्देश : हम सभी ने कई बार बारिश का अनभुव किया है। तो अपनी आंखें बंद कर लें और बारिश की बूंदों की आवाज की कल्पना करें । (10–15 सेकंड तक अनुभव करें) फिर एक ऊँगली से ताली बजाते हुए ध्वनि निकालें । फिर दो उँगलियों, तीन उँगलियों, चार उँगलियों और अंत में पाँच उँगलियों के साथ। समन्वयक एक प्रकार की ताली से दूसरी प्रकार की ताली को बजाने के लिए निर्देश देगा और प्रतिभागी वैसा ही करेंगे। लेकिन ऑनलाइन मोड में यह अनुभव , दिए गए वीडियो की मदद से संचालित किया जा सकता है।

अब हम आँखें बंद करके इस अनुभव को उन्हें एक उँगली से पाँच तक और पाँच से एक उँगली तक ले जाते हुए दोहराएँगे। इससे हल्की से तेज बारिश की आवाज उत्पन्न होगी और फिर तेज बारिश से हल्की बारिश की आवाज पैदा होगी।

(क्योंकि हर कोई इस गतिविधि का आनंद उठा सकता है शिक्षार्थी अपने परिवार के सदस्यों (युवा या वयस्क) के साथ इस गतिविधि को कर सकते है । भारी बारिश के अपने अविस्मरणीय अनुभव को साझा करने का प्रयास करें और अपने परिवार के अन्य लोगों के अनुभव को सुनें। एक अनुकूल शिक्षण वातावरण बनाने के लिए यह अनुभव, आपको अविस्मरणीय एहसास दिलाएगा ।)

स्वयं प्रयास करें 2: मैं बारिश को महसूस कर सकता हूं / सकती हूँ

निर्देश : यह गतिविधि बारिश की ध्वनि का अनुभव करने की पिछली गतिविधि को जारी रखते हुए है। अब आवाज सुने और कल्पना करें कि जैसे आप बारिश में हैं ! समूह में करने में तो यह अनुभव और भी दिलचस्प हो जाता है। पर यदि आप अकेले इस गतिविधि को कर रहे हैं, बारिश में भीगने की अभिव्यक्ति का आनंद लेने के लिए दर्पण के सामने बैठ सकते हैं। अपने भावों पर ध्यान दे और बारिश में भीगने के अपने बचपन के दिनों के बारे में सोचने की कोशिश करें, बारिश के पानी में कागज की नावें, एक–दूसरे पर बारिश का पानी छिड़कना, बारिश में नाचना आदि।

Scanned by CamScanner

गतिविधि 3 (स्वयं प्रयास करे) :

सही विकल्प चुने :

1. बारिश की आवाज उत्पन्न करने की गतिविधि इंद्रियों के माध्यम से सीखना हैं। क्या आप इस कथन से सहमत हैं। (सही)

2. उँगलियों की से ताली बजाने और चारों ओर बारिश को महसूस करने के साथ बारिश की आवाज बनाना एक अनुभवात्मक सीख हैं । (सही)

3. गलियों की से ताली बजाने के साथ बारिश की आवाज बनाना मुख्य रूप से एक ..... गतिविधि हैं। (मनोज्ञानात्मक)

गतिविधि 4 (द मेमोरी लेन MP) :

बारिश के मौसम से जुड़े अपने बचपन के अनुभवों को लिखें या चित्र बनाएँ।

निर्देश: यह गतिविधि आपके बचपन की यादें/बारिश के मौसम का आनन्द साझा करने के लिए है। आप नीचे दिए गए बिंदुओं के आधार पर अपना अनुभव लिख सकते हैं –

तरह–तरह की आवाजें जो आपको याद हों – बारिश की आवाज, छत पर गिरने वाली बारिश ,हवा, बादलों की गर्जन, पक्षियों की तथा झरनों आदि की आवाज । बरसात के मौसम मे मिट्टी की गंध – वनस्पति की, गीली मिट्टी की, नमी की, मौसम के दौरान विशेष भोजन की गंध जो आपको याद है।उस समय पहनने वाले वस्त्र। बरसात के मौसम में भोजन, मौसम के विशेष गाने। त्यौहार और फसलें जो आपको याद हों कोई भी बीमारी जो लोग सोचते हो कि वह इस समय में उन्हें प्रभावित कर सकती है ? भारी बारिश के कारण आने वाली समस्याओं या कठिनाइयों का सामना कभी आपको करना पड़ा हो । कुछ और जो आप साझा करना चाहते हैं ? अपने विचार ब्लॉग पर कमेंट/पब्लिश करे।

कला समेकित अधिगम को भाषा शिक्षण से जोड़ना (अंग्रेजी) एवं गणित / भाषा (अंग्रेजी) और गणित को कला से कैसे एकीकृत करे (प्रो. पवन सुधीर, प्रो. ज्योत्स्ना तिवारी) –

- कला समेकित अधिगम (Art Intigrated Learning) को समझने के लिए हमने पिछली गतिविधि के द्वारा आठवी कक्षा के अंग्रेजी के अध्याय ' ए शार्ट मॉनसून डायरी ' से जोड़ने का प्रयास किया था क्योकि उसमें ऑथर एक डायरी शेयर करते हैं जिसमें उन्होने अपने बचपन की सारे बातें , बच्चों को बताने का प्रयास किया हैं। कि जब में अपने मसूरी के घर में था तो वहाँ किस तरह की आवाजे आती थी आदि ...।
- ऐसे बारिश से मिलते जुलते बहुत सारे Concept करीब हर विषय में हैं जैसे – भाषा में कविता, सामाजिक विज्ञान में अधिक बारिश से बाढ़ की स्थिति, गणित में आयतन मापन, पर्यावरण तो सीधे सीधे बारिश से जुड़ा हैं। अतः कह सकते हैं कि हर विषय को कला समेकित अधिगम से जोड़ा जा सकता हैं और अधिगम को प्रभावी, सहज व रोचक रूप से दिया जा सकता हैं।
- कला समेकित अधिगम है ये न केवल सहज, सुलभ, सरल बनाता है हमारी लर्निंग को पर इसे परमानेंट भी बनाता है। इसीलए हम कहते हैं कि कला समेकित अधिगम जो है या आर्ट इंटिग्रेटेड लर्निंग इज फॉर सस्टेनेबल लर्निंग।

Scanned by CamScanner

गतिविधि 5 (विषयों को कला समेकित शिक्षा से जोड़ना) :

एक कला अनुभव / कला गतिविधि के बारे में सोचें जिसे आपके विषय के शिक्षण अधिगम में जोड़ा जा सकता है। यह वर्णन करने का प्रयास करें कि गतिविधि आपकी कक्षा में कैसे हो सकती है।

पढ़ने के लिए अतिरिक्त सामग्री : एक नमूना–1

कला गतिविधि का नाम– विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और भाषाओं के संदर्भ में लोक कथाएँ

कला गतिविधि का रूप– कहानी वाचन/रंगमच/कठपुतली/शिल्प/चित्र/संगीत/कविता

विज्ञान:

कक्षा–छह, अध्याय 9 'जीव व उनका परिवेश

कक्षा–सात, अध्याय 7 'मौसम, जलवायु तथा जलवायु के अनुरूप जंतुओ द्वारा अनुकूलन'

सामाजिक विज्ञान:

कक्षा–छह, (हमारे अतीत, भाग–1), अध्याय 2 'आखेट – खाद्य संग्रह से भोजन उत्पादन तक'

कक्षा–सात, (हमारे अतीत, भाग–2), अध्याय 7 'जनजातियाँ, अस्थिरवासी और एक जगह बसे हुए समुदाय'

भाषा– अंग्रेजी

कक्षा–छह (हनीसकल, अंग्रेजी की पाठ्यपुस्तक), अध्याय 9 'डेजर्ट एनिमल्स'

कक्षा–छह (हनीसकल, अंग्रेजी की पाठ्यपुस्तक), अध्याय 10 'द बैनयन ट्री'

कक्षा–छह (ए पैक्ट विद द सन), अध्याय 1 'ए टेल ऑफ टू बर्ड्स'

कक्षा–छह (ए पैक्ट विद द सन), अध्याय 4 'द फ्रेंड्ली मंगूस'

कक्षा–छह (ए पैक्ट विद द सन), अध्याय 9 'वॉट हैप्पंड टू रेप्टाइल्स'

कक्षा–आठ (इट सो हैप्पंड, अंग्रेजी में सप्लीमेंट्री रीडर), अध्याय1 'हाऊ द कैमल गॉट हिज हंप'

कक्षा–आठ (हनीड्यू , अंग्रेजी में पाठ्यपुस्तक), अध्याय 6 'दिस इज जोडीज फॉन'

कक्षा–आठ, अंग्रेजी (हनी ड्यू), अध्याय 1 'द एट एंड द क्रिकेट'

सुझाये गए मूल्यांकन के तरीके

अवलोकन सारणी, स्वत–मूल्यांकन, साथी–समूह द्वारा मूल्यांकन, मुख्य निर्देश, पोर्टफोलियो

प्रशिक्षण के उद्देश्य

यह मॉड्यूल लोक कथाओं के माध्यम से विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और भाषा सामग्री को समेकित करने के तरीकों को जानने में मदद करेगा।

सीखने के प्रतिफल

सुझाए गए तरीकों का पालन करने के बाद, एस.आर.जी./शिक्षक निम्नलिखित दक्षताओ में निपुण हो पाएँगे—

अंग्रेजी भाषा में शिक्षार्थी—

- विराम चिह्नों के प्रयोग, वर्णन एवं व्याख्या करने और संवाद बोलने के तरीकों के उपयोग के बारे में समझता है, कहानी के पाठ से संवाद लिखता है, अपने साथियों और अन्य लोगों के विभिन्न अनुभवों को सुनने में रुचि दिखाता है;
- विभिन्न प्रकार के निर्शदों का पालन करता है, सुनता है और विभिन्न ध्वनि अनुकरणात्मक आवाजों को परस्पर संबंधित करता है, रचनात्मक कार्यों में उनका उपयोग करता है, अपने

Scanned by CamScanner

और परिवेश के बारे में बात करता है, सरल वाक्यों और प्रतिक्रियाओं का उपयोग करते हुए दोस्तों, शिक्षकों, परिवार तथा अन्य लोगों के साथ बातचीत करता है;

- विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेता है जैसे कि रोल प्ले (भूमिका निर्वहन), कविता पाठ, प्रहसन, नाटक आदि;
- अपने आस–पास की चीजों के बारे में सवाल पूछता है, कहानियाँ सुनाता है, समझते हुए पाठ पढ़ता है, विभिन्न तरह के पाठ पढ़ता है और विभिन्न स्रोतों से पुस्तकें एकत्र करता और पढ़ता है।

विज्ञान में शिक्षार्थी—

- तार्किक स्पष्टीकरण और तर्क प्रस्तुत करता है, निष्कर्ष के बारे में बताता है;
- सबूतों के समर्थन में स्पष्टीकरण प्रदान करता है;
- वैज्ञानिक अवधारणाओं को दैनिक जीवन से जोड़ता है;
- रुचि का भाव प्रदर्शित करता है और उत्साह से भाग लेता है;
- विचार करने के बाद प्रतिक्रिया करता है, नियोजन में रचनात्मकता प्रदर्शित करता है, समस्या सुलझाने की योग्यता दिखाता है, अतंर्निहित मूल्यों को व्यक्त, करता है;
- कार्य करते समय जिम्मेदारियाँ उठाता है और पहल करता है;
- अपने साथी–समूह के साथ सहयोग करते हुए काम करता है, दूसरों की दलीलों को धैर्य से सुनता है;
- पर्यावरण का संरक्षण कैसे किया जाए, इस बारे में सलाह देता है। पर्यावरण के संरक्षण के प्रति संवेदनशीलता रखता है;
- वह जिस वातावरण में रहता है, उसमें विविधता के विभिन्न रूपों की सराहना करता है, परस्पर निर्भरता के प्रति संवेदनशीलता रखता है।

सामाजिक विज्ञान में शिक्षार्थी—

- विशेष आवश्याकतासमूह के व्यक्तियों के प्रति समाज की रूढिवादी सोच को समझ पाता है।
- किसी भी तरह के भेदभाव पर आवाज उठाता है।
- विविधता के कारण उत्पन्न होने वाले विभिन्न मुद्दों पर अलग–अलग विचार व्यक्त करता है।
- आस–पास के परिवेश के बारे में जानने में रुचि लेता है।
- समूह/टीम के काम की सराहना करता है।

कला शिक्षा में शिक्षार्थी—

- कक्षा में और बाहर होने वाली कला गतिविधियों में भाग लेता है और उनका आनंद उठाता है, अपने साथियों और अन्य लोगों द्वारा किए गए कला कार्यों की सराहना करता है।
- कलात्मक क्षमताओं का प्रदर्शन करता है, जैसे — कक्षा और परिवेश को स्वच्छ और सुन्दर रखना, कक्षा में लगाए जाने वाली चीजों को लगाने में मदद करना।
- दृश्य एवं प्रदर्शन कलाओं में भाग लेता है और रुचि के साथ कला प्रस्तुतियों का प्रदर्शन करता है।

Scanned by CamScanner

संक्षिप्त परिचय (गतिविधि के पीछे निहित विज्ञान)

यह सर्वविदित है कि लोकगीतों का, मूलतः वे जिस क्षेत्र के होते हैं, एक सामाजिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ होता है। लोक कथाओं को कल्पना के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। छोटे बच्चे एक ऐसी दुनिया में रहते हैं जिसमें कल्पना और वास्तविकता के बीच के फर्क को परिभाषित नहीं किया जा सकता— एक ऐसी दुनिया जिसमें जानवर बात करते हैं और इंसान झाड़ू पर उड़ते हुए सामने से निकल जाते हैं। यह संभव है कि इनमें से कुछ लोक कथाओं का वैज्ञानिक आधार भी हो। अभी भी लोक कथाओं और परी कथाओं के आकर्षण और कौतूहल को बनाए रखते हुए, हम इस गतिविधि के माध्यम से बच्चों को वास्तविक दुनिया से काल्पनिक दुनिया का फर्क और उसकी खुबसूरती की सराहना करने में मदद कर सकते हैं। वे लोककथा को वर्णित करते चित्रों के माध्यम से संवादात्मक कहानी वाचन सत्रों में भाग लेते हुए वैज्ञानिक शब्दावली और अवधारणाओ को सीख सकते हैं। इस लोककथा को पंचतंत्र की कहानियों से लिया गया है। कुछ वैज्ञानिक तथ्यों को शामिल करने के लिए इसे थोड़ा संशोधित किया गया है।

मॉड्यूल, जीवित जीवों और उनके परिवेश, निवास स्थान में विविधता, जलवायु और जानवरों के जलवायु में अनुकूलन के बारे में कला समेकित अधिगम का अवसर प्रदान करता है।

सत्र के लिए अपेक्षित कुल समय – 2 घटें

अपेक्षित सामग्री – चार्ट पेपर, स्केच पेन, क्रेयॉन, पेंट्स और ब्रश, जाली काटने वाला औजार, कैंची और आवश्यकतानसुार अन्य सामग्री। (ए.आई.एल. गतिविधियों की योजना बनाते समय आस–पास आसानी से मिलने वाली सामग्रियों को लेने की सलाह दी जाती है)।

शैक्षणिक नीतियाँ

समन्वयक ध्यान दें

शिक्षार्थी समूह गतिविधियों में लगे रहेंगे। इस बात का ध्यान रखें कि समूहों में जाति, पंथ, लिंग,क्षमताओं आदि के संदर्भ में किसी तरह का भेदभाव नहीं किया जाए। विशेष आवश्यकता वाले या शारीरिक या मानसिक रूप से अस्वस्थ बच्चों को समूहों में उनकी क्षमताओं के अनसुार शामिल किया जाना चाहिए।

समन्वयक सारे दृश्यों की प्रस्तुति के बाद या प्रत्येक दृश्य के बाद चर्चा शुरू कर सकता है। चर्चा के दौरान विभिन्न विषयों की सामग्री को समेकित करने के सेतुओ को चिह्नित किया जाए। मूल्यांकन साथ–साथ किया जाएगा।

समन्वयक कक्षा को प्रत्येक पाँच छात्रों के आठ समूहों में विभाजित करेगा। कक्षा में कितने बच्चे हैं, उनकी संख्या के अनसुार समूहों में बच्चों की संख्या भिन्न हो सकती है। प्रत्येक समूह को एक दृश्य की सभी गतिविधियों, जैसे—चित्र, पोस्टर, कठपुतलियों, रंगमंच का सामान बनाने और दृश्य को मंचित करने, संवाद लिखने आदि को संभालने दें।

समूह बनाने के लिए आपसी संवाद (20 मिनट)

सत्र, परिचय के दौर और कुछ दिलचस्प अभिव्यक्तिकयों के साथ शुरू होगा, जैसे—उनकी पसंद के किसी भी एक जानवर की नकल या आवाज निकालना, या उसका चित्र बनाना। हर कोई बताएगा कि वह इसी जानवर को क्यों पसंद करता है? उन्हें इस बात की स्वतंत्रता होगी कि वह किसी भी भाषा में अभिव्यक्त करें, अभिव्यक्ति का ढंग और उसका तरीका कैसा भी हो सकता है, जैसे— चेहरे के भाव,सांकेतिक भाषा, कुछ पंक्तियों का वर्णन, अभिनय के माध्यम से,

Scanned by CamScanner

चित्र के माध्यम से या नृत्य आदि के माध्यम से। इस तरह हर किसी को रचनात्मक रूप से सोचने और चीजों को प्रस्तुत करने के लिए नए ढंग से कल्पना करने का मौका मिलेगा और साथ ही वे दूसरों को धैर्यपूर्वक और गंभीर रूप से सुनेंगे।

सामूहिक गतिविधि

समूहों को निम्न दृश्य सौंपे जा सकते हैं–

- सौंपे गए दृश्यों के लिए पात्रों व घटनाओ के अनसुार किसी भी कला रूप का उपयोग करते
- हुए निर्धारित दृश्यों के लिए सिर पर पहनने वाली वस्तुएँ, रंगमंच का सामान, दास्तानों वाली कठपुतलियाँ, चित्र, मुखौटे, कठपुतलियों को तैयार करें (यह उपलब्धता के आधार पर कला और शिल्प शिक्षक के मार्गदर्शन में किया जा सकता है)।
- उपलब्ध संसाधनों का इस्तेमाल करते हुए इस प्रक्रिया में विभिन्न केशविन्यास, वेशभषूा और मेकअप का चयन करें।
- उन्हें दिए गए दृश्यों की प्रस्तुति के बारे में चर्चा करें, योजना बनाएँ और उसकी तैयारी करें और दृश्यों को कठपुतलियों द्वारा मंचित करने या क्षेत्रीय लोक कथाओं का उपयोग करते हुए वाचन,मूकाभिनय आदि करें।
- समन्वयक विभिन्न विषयों जैसे जीवित जीवों और उनके परिवेश, मौसम, जलवायु और जानवरों द्वारा उस जलवायु में रहने की आदत डालने, पूर्वजों की राह पर चलने, आदिवासी, अस्थिरवासी और स्थायी बसाहट वाले समुदायों आदि से संबंधित प्रश्नोत्तरि के माध्यम से इन दृश्यों पर चर्चा करेगा। विषयवस्तु की गहनता संज्ञानात्मक स्तर के अनसुार तय की जाएगी।

दृश्य 1, समूह–1

बहुत समय पहले, एक बड़ी झील में कई जलीय पौधे और जानवर पनपे। झील का पानी बहुत साफ और नीला था। उसमें कमल और जल कुमुदिनी जैसे लंबे तने वाले पौधे थे। जलमग्न हाइड्रिला और वालिसनेरिया (टेप ग्रास) उसमें खूबसूरती से लहराते थे। सतह पर धीरे–धीरे कसपत और पानी की जलकुंभी तैरती थीं। सूक्ष्म शैवालों की वजह से जगह–जगह पानी में हरे धब्बे उभर आए थे। उसमें विभिन्न प्रजातियों की छोटी–छोटी मछलियाँ थीं, जो अचानक एक साथ झुण्ड बनाकर कीड़े के एक टुकड़े के लिए लड़ने लगती थीं। झील में बड़ी मछलियों ने कीटों की आबादी को नियंत्रण में रखा हुआ था। कछुए भोजन की तलाश में इधर–उधर घुमते रहते और बगुले अपने शिकार को पकड़ने के लिए घंटों पानी में खड़े रहते। किंगफिशर का एक जोड़ा पेड़ की एक ऊँची शाखा पर बैठा रहता ताकि अपना भोजन प्राप्त करने के लिए जल्दी से पानी में गोता लगा सके । मेंढ़क झील से अंदर और बाहर छलाँग लगाते रहते, जबकि अपने शिशुओं को वे शैवाल खिलाते, ताकि वे भी झील से बाहर छलाँग लगा सकें । झील एक रहने की जगह थी, जिसमें प्रत्येक जीव को भोजन, आश्रय, संरक्षण और प्रजनन के लिए साथी मिल सकते थे।

दृश्य 2, समूह–2

वहाँ जितने भी जीव थे, उन सभी में, दो मछलियाँ और एक मेंढ़क सबसे अच्छे दोस्त थे। वे एक–दूसरे के साथ शरारतें करते और कभी–कभी सामयिक खबरों पर चर्चा करते। मछलियाँ

Scanned by CamScanner

बहुत चालाक और चतुर थीं, जबकि मेंढ़क एकदम सीधा था। एक मछली हमेशा इस बात की शान मारती थी कि उसे दुश्मन के चंगुल से बचने की सौ युक्तियाँ पता हैं, जबकि दूसरी मछली डींग मारती कि उसे एक हजार युक्तियाँ पता हैं। मेंढ़क अपने चेहरे पर दुविधा के भाव लिए, बस आँखें झपकाता और मन ही मन बुदबुदाता कि उसे तो कुछ ही तरीकों के बारे में पता है। फिर भी, तीनों हर दिन मिलते और विशाल कमल के पत्तों और प्यारे फूलों के बीच लुका–छिपी खेला करते। वे एक–दसरे को अपने पूर्वजों की वीरता के किस्से भी सुनाते थे, जो एक ही थे।

दृश्य 3, समूह–3

एक शाम जब सूरज पश्चिम दिशा में अस्त हो रहा था, कुछ मछुआरे झील पर आए। एक वृद्ध मछुआरे ने कहा, "इस झील में मछलियाँ और झींगें भरे हुए हैं। हम भोर में यहाँ आएँगे और उन्हें पकड़ लेंगे।"

"बहुत अच्छा विचार है," दूसरे मछुआरे ने कहा । उनकी आँखें खुशी से चमक रही थीं और वे दोनों वहाँ से चले गए।

दृश्य 4, समूह–4

एक पल के लिए तीनों दोस्त एकदम मौन हो गए। तब मेंढ़क ने साहस बटोरते हुए कहा, "जो उन्होंने कहा, क्या तुमने सुना? अब हम क्या करें, यहीं रुकें या भाग जाएँ?" वह डर के मारे उछलने लगा और बोला, "अब हम क्या करें? अब हम क्या करें? वे कल सुबह अपने जाल लेकर यहाँ आ जाएँगे!"

एक हजार युक्तियाँ जानने वाली मछली जोर–जोर से हँसने लगी। उसने यह कहकर मेंढक को शांत करने की कोशिश की कि "कुछ फालतूशब्दों को सुनकर डरने की जरूरत नहीं है। हम क्यों भागें? मेरे पास असंख्य युक्तियाँ हैं, बचने के हजारों तरीके हैं और मैं उन सभी को जानती हूँ। मैं तुम्हारी भी रक्षा करूँगी!"

मेंढक तब भी दुविधा में लग रहा था, तब दूसरी मछली ने कहा, "डरो मत। एक दूरदर्शी और प्रतिभाशाली व्यक्ति वहाँ पहुँच सकता है जहाँ हवा और सूरज की किरणें भी प्रवेश नहीं कर सकती हैं। तुमको अपना घर छोड़कर जाने की जरूरत नहीं है। मैं अपने ज्ञान से तुम्हारी रक्षा करूँगी । घर, घर ही है और किसी भी स्वर्ग से इसकी तुलना नहीं की जा सकती है।"

दृश्य 5, समूह–5

लेकिन मेंढक का संशय खत्म नहीं हुआ। उसके बाद उसने अपने आपको संभाला और आत्मविश्वास से कहा, "सुनो, मेरे मित्रों, अभी तो मैं मछुआरों के जाल में फँसने से बचने के लिए केवल एक ही युक्ति सोच सकता हूँ। इसलिए मैं अपनी पत्नी के साथ यहाँ से जा रहा हूँ।" मेंढ़क और उसकी पत्नी ने झील से छलाँग लगाई और साथ वाले तालाब में कूद गए । मछलियों ने उन्हें जाते हुए देखा और सिर हिलाते हुए कहा, "मूर्ख ! उन्हें वास्तव में जाने की कोई जरूरत नहीं थी।"

दृश्य 6, समूह–6

अगले दिन भोर में, मछुआरे झील पर आए और अपना जाल बिछाया । उन्होंने मछलियों, कछुओं, केकड़ों और मेंढ़कों के एक बड़े समूह को पकड़ लिया। जब डूबते सूरज की लालिमा आकाश में फैली, तो मछुआरों ने उन सबको लादा और वापस गाँव जाने के लिए रवाना हो गए।

Scanned by CamScanner

दृश्य 7, समूह–7

वापस जाते समय मछुआरे तालाब के पास से गुजरे, जहाँ मेंढ़क और उसकी पत्नी एक जलकुंभी (लिली के तैरते पत्ते) पर बैठे थे। मेंढक ने देखा कि दिन भर में उन्होंने जिन जीवों को पकड़ा था, वे उनकी पीठ पर लदे हुए हैं और वह यह सोचकर दुखी हो गया कि उसने अपने सबसे अच्छे दोस्तों को हमेशा के लिए खो दिया है। मेंढक ने अपनी जुड़ी हुई उँगलियों से उन जीवों की ओर इशारा करते हुए अपनी पत्नी से भारी मन से कहा, "देखो, प्रिय! मेरे मित्र जा रहे हैं। मैं तो यह सोचकर ही काँप रहा हूँ कि उनका अब क्या होगा— उन्हें तला जाएगा या तंदूर में डाल दिया जाएगा।" तभी उसकी पत्नी जल्दी से उसकी ओर मुड़ी और बोली, "अगर हम अपने पुराने घर वापस चले जाएँ तो ज्यादा अच्छा नहीं होगा? मछुआरे कुछ समय के लिए अब हमारी झील में अपना जाल नहीं डालेंगे।" मेंढक को उसकी बातों में कुछ समझदारी दिखाई दी और वह उसकी बात मान गया।

दृश्य 8, समूह–8

इसलिए उन्होंने बाहर छलाँग लगाई और अपने पुराने घर में वापस आ गए। उन्होंने वहाँ जो देखा, उसे देख उन्हें अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। वे चौंक गए और उन दो मछलियों को वहाँ देखकर आश्चर्यचकित भी रह गए जिनके बारे में वे कल्पना कर रहे थे कि अभी तो वे किसी का भोजन बन चुकी होंगी। उत्साहित हो उन्होंने उनसे पूछा, "तुम कैसे बच गई?" मछलियाँ एक साथ समवेत स्वर में गाने लगीं, "हम अपनी कमजोरियों को पहचानते हैं, हम अपनी ताकत का सही इस्तेमाल करते हैं। अपने को बचाने के लिए हम किसी भी हद तक जा सकते हैं।"

सीखने के रूप में मूल्यांकन

प्रस्तुतीकरण के दौरान समन्वयक प्रतिभागियों द्वारा की गई पहल, उनके संवाद कौशल, सहयोग, समझ और विचारों की स्पष्टता, चीजों को प्रस्तुत करने में रचनात्मकता, चीजों का आपस में संबंध स्थापित करने की क्षमता और चीजों को तदनुसार सुधारने, संसाधनों के उपयोग की क्षमता आदि का निरीक्षण कर सकते हैं।

विचार–विमर्श के लिए प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों का उपयोग विभिन्न अतर–संबन्धित शिक्षण विषयों पर चर्चा के लिए किया जा सकता है—

- ऐसी खाद्य श्रृंखला के बारे में बताएँ जो एक झील में देखने को मिलती है।
- पानी की सतह पर कसपत (डकवीड) और जलकुंभी (लिली के तैरते पत्ते) तैरती हैं। क्या उनकी जड़ें होती हैं? वे पोषक तत्वों को कैसे अवशोषित करती हैं?
- लोग रहने के लिए जगह का चयन कैसे करते हैं?
- बदलते परिवेश ने इंसान की जीवन –शैली को कैसे प्रभावित किया है?
- कुछ ऐसी युक्तियों का विवरण दें जिनका प्रयोग उन दोनों मछलियों ने अपने क्षेत्र में आए दुश्मन के चुंगल से बचने के लिए किया होगा
- अगर हम इन युक्तियों को विशेषताएँ मानते हैं, तो क्या वे एक जीव को उसके निवास स्थान में बेहतर जीवन जीने के योग्य बना सकती हैं?

Scanned by CamScanner

- क्या आपने कभी मछली पकड़ी है या किसी को ऐसा करते देखा है? इस काम के लिए किन पारंपरिक औजारों और उपकरणों का उपयोग किया जाता है?
- मछली पकड़ने को बड़े/व्यावसायिक पैमाने पर कैसे किया जाता है?
- "घर, घर ही है और किसी भी स्वर्ग से इसकी तुलना नहीं की जा सकती है।"क्या आप इस बात से सहमत हैं? घर पर मिलने वाली भौतिक सुविधाओं के अलावा, कौन से अन्य कारक हैं जो घर को इतना खास बनाते हैं?
- मेंढ़कों की दो अनुकूली विशेषताओं का उल्लेख करें, जिन्होंने उन्हें झील छोड़ने के बारे में तुरंत निर्णय लेने में मदद की?
- प्राचीन काल में सूचना के स्त्रोत क्या थे? (भित्ति–चित्र)
- कहानी से क्या शिक्षा मिलती है?
- क्या मेंढक की पत्नी का पुराने घर में वापस जाने का सुझाव बुद्धिमत्तापूर्ण था? क्यों?
- निर्णय लेने के लिए आप कौन–से कदम उठाते हैं?
  संकेत — (1) आपको पता है कि आप क्या चाहते हैं; (2) समस्या को समझते हैं; (3) विकल्प कौन–कौन से हैं, यह देखते हैं; (4) सबसे अच्छा विकल्प चुनते हैं।
- क्या होगा अगर किसी विशेष जीव की आबादी तेजी से घटने या बढ़ने लगे?
  संकेत — खाद्य श्रृंखला को बाधित कर सकता है, सुपोषण हो सकता है।
- दीर्घकालीन जैव–विविधता क्या है?
  संकेत — हम मनुष्य होने के नाते जैव–विविधता के संरक्षण के लिए क्या कर सकते हैं ? उदाहरण के लिए, हम कम उपभोग कर सकते हैं और सोच–समझ कर उपभोग कर सकते हैं।
- मछलियों की अनुकूलक विशेषताओं की व्याख्या करें जो उन्हें पानी में तैरने में मदद करती हैं।
- आपको क्या लगता है कि मेंढक के दिमाग में उस समय क्या चल रहा था जब उसने अपने दुश्मन को चकमा दिया?
- मेंढ़कों को उभयचर क्यों कहा जाता है?
- उन्होंने समान पूर्वजों के होने की बात क्यों कही? उनके पूर्वज एक ही थे, इसका आप क्या प्रमाण दे सकते हैं?
  संकेत — मेंढ़कों के जीवन–चक्र में पहला चरण मछली की तरह मेंढ़क के बच्चे के रूप में होता है।
- क्या आप हमारे देश के उन स्थानों से परिचित हैं जहाँ लोग पूर्व–आपदा प्रबंधन करते हैं? जीवन और संपत्ति के नुकसान को कम करने के लिए एक दूरदर्शिता के रूप में उनके द्वारा उठाए गए कदमों पर चर्चा करें।
- क्या आप किसी आपदाग्रस्त क्षेत्र में रह रहे हैं? आपके घर में आपदा से बचाव करने के लिए क्या प्रबंध किए गए हैं? स्थानीय अधिकारियों द्वारा क्या उपाय किए गए हैं?

सीखने के प्रतिफलों के अन्तर्गत विज्ञान की अवधारणाओ और दक्षताओं को समझने के लिए विचार–विमर्श हेतु इस्तेमाल होने वाले प्रश्न अवलोकन का अवसर प्रदान करेंगे।

Scanned by CamScanner

गतिविधि

शिक्षक किसी और लोक कथा को चुन सकता हैं, जिसमें संदर्भ के प्रासंगिक बिंदु हों। इसे कुछ वैज्ञानिक तथ्यों को शामिल करने के लिए संशोधित किया जा सकता है। क्षेत्रीय भाषा में भी लोक कथाएँ चुनी जा सकती हैं।

- पाठ्यपुस्तक की कहानियों का चयन करके भी गतिविधि की जा सकती है।

ध्यान दें — सत्र 3, 4 और 5 को भी क्षमता निर्माण कार्यक्रम में सत्र 1 और 2 के रूप में संचालित किया जा सकता है।

नमूना– 3

कक्षा–आठ, हिंदी (वसंत , भाग–3) अध्याय 16 'पानी की कहानी'

कला गतिविधि का रूप – वार्तालाप एवं नुक्कड़ नाटक

अपेक्षित समय – 2 घंटें

यहाँ यह जानना महत्वपूर्ण है कि प्रस्तावित कला गतिविधियों को सीखने के अंतिम परिणाम के रूप में नहीं, बल्कि सीखने की प्रक्रिया के रूप में संचालित किया जाना चाहिए।

प्रशिक्षण के प्रतिफल

शिक्षार्थी—

- पर्यावरण के विभिन्न घटकों और उनके बीच के परस्पर संबंधों का वर्णन करता है।
- प्राकृतिक संसाधनों— वायु, जल, ऊर्जा, वनस्पतियों और जीवों के संरक्षण की आवश्यकता के प्रति संवेदनशीलता दर्शाता है।

. जल, मिट्टी और जंगल जैसे प्राकृतिक संसाधनों के न्यायोचित उपयोग को समझता और सराहता है।

ध्यान दें— यहाँ यह बताना महत्वपूर्ण है कि प्रत्येक सीखने के प्रतिफल पर आधारित एक लघुनाटक या नुक्कड़ नाटक किया जा सकता है। इसी तरह, दो या दो से अधिक सीखने के प्रतिफल को एक एकल प्रदर्शन द्वारा भी किया जा सकता है। यह निर्धारित समय–सीमा पर निर्भर करता है जिसमें नाटक का प्रदर्शन किया जाना है।

अपेक्षित सामग्री – कथानक के अनसार कुर्ता, पायजामा, धोती, गाँधी टोपी, दुपट्टे, पगड़ी जैसे परिधान। पैंट–शर्ट, आसानी से उपलब्ध उपकरण जैसे ढोलक, मंजीरे, डमरू। (ए.आई.एल. गतिविधियों की योजना बनाते समय आस–पास आसानी से मिलने वाली सामग्रियों को लेने की सलाह दी जाती है)।

- सत्र 1 में दिए गए सामग्री के समान दृश्य कला की सामग्री
- गतिविधि की आवश्यकता के अनसुार पृष्ठभूमि में संगीत बजाने के लिए आई.सी.टी. का उपयोग या फिर बच्चे स्वयं संगीत बना एवं बजा सकते हैं।

गतिविधियाँ

चरण 1

समन्वयक कक्षा में एक विचार एवं चिंतन सत्र का आयोजन करेगा जिसमें शिक्षार्थियों को सामाजिक महत्व के किसी भी मुद्दे या एक सामाजिक समस्या तथा उन्हें हल करने के लिए आवश्यक उपायों/कदमों पर आधारित थिएटर गतिविधि के बारे में जानकारी दी जाएगी। अभिनयात्मक गतिविधि या नुक्कड़ नाटक के माध्यम से पाठ्यपुस्तक के अध्याय के बारे में

Scanned by CamScanner

समन्वयक एक छोटा सा विवरण दे सकते हैं। छात्रों को 6–8 सदस्यों वाले छोटे समूहों में विभाजित किया जा सकता है और प्रत्येक समूह से उस अवधारणा को समझने का अनुरोध करते हुए अध्याय को ध्यान से पढ़ने के लिए कहा जा सकता है। शिक्षार्थी अध्याय के मुख्य विषय को प्रस्तुत करते हुए यह बताएँगे कि उन्होंने इससे क्या सीखा और इसमें क्या सन्देश निहित है ।

चरण 2

समन्वयक अन्य सहयोगियों और छात्रों की मदद से समूह के सदस्यों को विभिन्न पात्रों की भूमिका देगा। छात्रों की टीम के सदस्यों को सामाजिक विज्ञान, भाषा और विज्ञान की पाठ्यपुस्तक के अन्य अध्यायों के आधार पर आगे की अभिनयात्मक गतिविधि निभाने या नुक्कड़ नाटक का आयोजन करने का काम बारी–बारी से इस तरह सौंपा जाएगा, ताकि प्रत्येक छात्र को कम से कम एक बार, एक चरित्र की भूमिका निभाने, मंच के सामान को लगाने, चित्रों को सजाने और छोटे संवादों को लिखने का अवसर मिले।

चरण 3

समन्वयक और उसके सहकर्मी शिक्षार्थियों के सामने किसी पात्र या चरित्र की भूमिका को इस तरह से निभा सकते हैं, जिस तरह से शिक्षार्थियों ने अध्याय पढ़ते समय या टीवी पर इन पात्रों को देखते हुए उन्हें समझा है। यहाँ आई.सी.टी. की भूमिका आती है। इसी तरह के पात्रों पर आधारित एक लघुफिल्म भी शिक्षार्थियों को दिखाई जा सकती है ताकि वे समझ सकें कि ये पात्र आमतौर पर कैसे आपस में संवाद करते हैं। समन्वयक लगातार शिक्षार्थियों को इशारों व विभिन्न पात्रों द्वारा उपयोग की जा रही बॉडी लैंग्वेज के साथ वार्तालाप की शैली पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रेरित करेगा, इससे सही मायनों में अभिनय प्रभावी बन सकेगा।

चरण 4

अभिनयात्मक गतिविधि के कथानक के बारे में शिक्षार्थियों को उसमें अपेक्षित भाव–पक्ष और बॉडी लैंग्वेज के बारे में कुछ संकेत देते हुए बताया जाएगा। समन्वयक शिक्षार्थियों से कहेगा कि वे बताएँ कि मंच पर ऐसा करते समय किस तरह के सामान की जरूरत पड़ेगी और साथ मिलकर उनकी व्यवस्था करने को कहेगा (जैसे वेशभूषा)। कथानक की आवश्यकता के अनसुार शिक्षार्थियों द्वारा कुछ तस्वीरें व चित्र भी तैयार किए जा सकते हैं और अंततः विषयवस्तु के अनुसार मंच की व्यवस्था की जाएगी।

चरण 5

अभिनयात्मक गतिविधि या नुक्कड़ नाटक के मंचन से पहले समन्वयक कुछ रिहर्सल सत्र आयोजित कर सकता है। रंगमंच की सभी आवश्यक सामग्री और सेट–संबंधित सामग्री का भी उपयोग रिहर्सल सत्र के दौरान किया जाना चाहिए ताकि शिक्षार्थियों को रंगमंच की सामग्री का उपयोग पर्याप्त और उचित ढंग से करने का अवसर मिल सके । इससे उन्हें अपने सहयोगियों के साथ समन्वय की भावना के साथ मंच पर प्रदर्शन करते हुए रंगमंच की सामग्री का उपयोग करने के बारे में अनुभव मिल सकेगा।

चरण 6

अभिनयात्मक गतिविधि या नुक्कड़ नाटक किया जाता है। विद्यार्थी, मंच पर अभिनय करते हैं और कुछ मंच के पीछे से सहयोग देते हैं। वीडियो रिकॉर्डिंग की जा सकती है और उसे विद्यार्थियों को दिखाया जा सकता है। समन्वयक और विद्यार्थी रिकॉर्ड किए गए संस्करण को

Scanned by CamScanner

एक साथ बैठकर देख सकते हैं और प्रदर्शन कला के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा कर सकते हैं। अपेक्षित सुधार कैसे किया जाए, इस संबंध में सुझावों को रिकॉर्ड किया जा सकता है। विद्यार्थियों की एक–दूसरे से तुलना नहीं की जानी चाहिए। समूह में कौन सबसे अच्छा था, इस पर बात करने के बजाय, विभिन्न पहलुओं जैसे कि पटकथा लेखन, संवाद बोलने, समन्वय आदि पर और किस तरह से गुणात्मक सुधार किया जा सकता है, इस पर चर्चा की जानी चाहिए।

अन्य विषयों के साथ एकीकरण

समन्वयक शिक्षार्थियों को समाज की अन्य सामाजिक समस्याओं या इसी तरह के मुद्दों का अवलोकन करने के लिए भी प्रेरित कर सकते हैं। वे इन विषयों को भाषायी क्षमताओं के साथ समेकित करना सीख सकते हैं। हालाँकि भाषा, प्रदर्शन कला, विशेष रूप से अभिनयात्मक गतिविधि और नुक्कड़ नाटक का एक समेकित घटक है, जिसमें कथन, संवाद बोलने का तरीका और कथानक लिखना आवश्यक रूप से शामिल हैं ।

नमूना– 4

कक्षा–आठ, हिंदी (वसंत , भाग–3), अध्याय 16 'भोर और बरखा',अध्याय 5'थोड़ी धरती पाऊँ '

कला गतिविधि का प्रकार – दृश्य तथा प्रदर्शन कलाएँ

हिंदी की कक्षा–सात की पाठ्यपुस्तक के ये पाठ हैं—

भोर और बरखा — वसंत, भाग–2

थोड़ी धरती पाऊँ — दूर्वा , भाग–2

गतिविधि के उपरांत यही सोच हमारे पर्यावरण से जुड़ सकती है — सामाजिक विज्ञान अध्याय4 (वायु), अध्याय 5 (जल) और अध्याय 8 (मानव–पर्यावरण अन्योन्य क्रिया— उष्णकटिबंधीय एवं उपोष्ण प्रदेश)

नीचे दी गई कला गतिविधि अंतर अनुशासनात्मक है तथा वास्तविक जीवन से जुड़ी हुई है। समन्वयक ध्यान दें— गतिविधि 1, 2, 3 और 4 के साथ दी गई गतिविधियाँ इस स्वरूप से अलग हैं और दो कविताओं को ध्यान में रखते हुए तैयार की गई हैं— 'भोर और बरखा', थोड़ी धरती पाऊँ '

लक्षित अधिगम प्रतिफल (विद्यार्थी)

शिक्षार्थी, जिज्ञासावश और पाठों (पस्तु कों या अन्य संसाधनों से) पर आधारित प्रश्न पूछता है; जवाब देता है; गंभीर रूप से सोचता है; घटनाओं, विचारों, विषयों की तुलना करता है और उन्हें जीवन से जोड़ कर देखता है तथा विचारों को रचनात्मक रूप से प्रस्तुत करता है।

अपेक्षित सामग्री

कागज और पेंसिल, कैंची, गोंद, चार्ट–पेपर, क्रेयॉन, पुराने समाचार पत्र/पत्रिकाएँ, स्केच पेन, दोनों तरफ से चिपकाने वाला टेप, सेलो टेप। सरल संगीत तैयार करने के लिए 'डफली' या 'मंजीरा'। (ए.आई.एल. गतिविधियों की योजना बनाते समय आस–पास आसानी से मिलने वाली सामग्रियों को लेने की सलाह दी जाती है)।

शैक्षणिक नीतियाँ

गतिविधि 1 (एस.आर.जी. के लिए, समय–1 घंटा)

सुबह के समय को याद करना व महसूस करना

पक्षियों का चहचहाना (आइस ब्रेकर चुप्पी तोड़ने वाली गतिविधि)—

Scanned by CamScanner

हर किसी को खड़े होने के लिए कहें और अपने पीछे–पीछे गौरैया की आवाज निकालने के लिए कहें।
उन्हें प्रदर्शन माध्यम से विधि समझाएँ—
अपनी हथेली को चूमते समय तेज आवाज करें। अपनी आँखों को बंद करके ऐसा करते रहें। गतिविधि को 3 मिनट तक जारी रखें। विचार मंथन विधि में आगे की गतिविधियों के लिए प्रश्न हो सकते हैं—

- आपने क्या महसूस किया?
- क्या यह आवाज आपको कुछ याद दिलाती है?
- दिन के किस समय इस तरह की चहचहाहट को सुनते हैं?

यह अनुभव समन्वयक को अधिक विस्तृत ढंग से प्रश्नों पर बातचीत शुरू करने के लिए एक मौका दे सकता है—

- आपमें से कितने लोग सुबह जल्दी उठना पसंद करते हैं?
- सुबह जल्दी उठने पर आपको कैसा महसूस होता है?
- अगर बारिश का दिन है, तो आपके विचार और भावनाएँ कैसी होंगी?
- आमतौर पर आप जागने के बाद किन चीजों को देखते हैं ?
- आपके बचपन के प्रातःकालीन अनभु वों से यह कितना अलग है ?

समूह गतिविधियाँ
चरण 1
आगे की चर्चा के लिए प्रतिभागियों को समूहों में विभाजित करें, ताकि समूह के सदस्य आपस में चर्चा कर सकें और अपने बचपन से जुड़ी सुबह की यादों को पेश कर सकें । उस समय को याद करते हुए वे विचार करें कि 'सबसे अच्छी बात क्या थी'। यह कई तरह से हो सकता है, जैसेकृ मूकाभिनय, अभिनयात्मक गतिविधि, प्रहसन, कहानी–वाचन, संगीत और हाव–भाव या पेंटिंग के माध्यम से, ऐसी कोई भी कला गतिविधि, जहाँ समह के सभी प्रतिभागी सक्रिय रूप से शामिल हो सकें ।
चरण 2
जब वे इसके लिए तैयार हो जाएँ, तो उन्हें एक–एक करके अपनी प्रस्तुतियों के लिए बुलाएँ। योग्यता आधारित शिक्षा के लिए अन्य समूहों द्वारा किए गए अवलोकन की भी सराहना करें। प्रस्तुति प्रतिभागियों/छात्रों को सुबह के परिवेश से जोड़ेगी, जो 'भोर और बरखा' कविता की पृष्ठभूमि है।
चरण 3
समूहों द्वारा की गई प्रस्तुति से संकेत लेते हुए, गतिविधि के बाद चर्चा में समन्वयक/शिक्षक कविता की सामग्री को जोड़ सकते हैं। उदाहरण के लिए, जब माँ यशोदा कृष्ण को जगाती थीं तो वह गाती थीं— 'जागो बंसी वाले ललना, जागो मेरे प्यारे...'। मीराबाई ने जैसे सोचा होगा, उसी प्यार व उनके प्रति स्नेह का भाव रखते हुए सबको एक साथ कविता गाने का इशारा करें। इस अनुभव के आधार पर समन्वयक/शिक्षक उन पाठों की भाषा गतिविधियों को ले सकते हैं।

Scanned by CamScanner

मूल्यांकन— समूह प्रस्तुति पर अवलोकन के माध्यम से स्व–मूल्यांकन और साथी–समूह द्वारा मूल्यांकन। कला को समेकित करने के कौशल की जाँच करने के लिए समन्वयक चेक–लिस्ट का उपयोग कर सकते हैं।

गतिविधि 2 (30 मिनट) (विद्यार्थियों के लिए)

अगली कविता है—"बरसे बदरिया सावन की"

चरण 1

बच्चों को उँगलियों से टप–टप करने और ताली बजाने और बारिश की आवाज निकालने के लिए कहें। ब्लैकबोर्ड पर बड़े–बड़े अक्षरों में 'बरसे बदरिया' लिखें। वे बारिश से जुड़ी अपनी यादों में बसी विभिन्न ध्वनियों को याद कर सकते हैं। उन्हें एक वीडियो दिखाया जा सकता है जिसमें विभिन्न ध्वनियाँ सुनाई दें जो बारिश गिरने की ध्वनियों को व्यक्त करती हों। ताल–वाद्य के माध्यम से विभिन्न लय एवं बोलियों के द्वारा यह गतिविधि और भी स्पष्ट हो सकती है।

चरण 2

शरीर के विभिन्न अंगो (हाथ, पैर, जुबान इत्यादि) से अलग–अलग ध्वनियाँ निकालते हुए, बारिश की आवाज निर्मित करें। इसके लिए दो समूह बनाएँ। बच्चो को यह बताने के लिए पैरों और हाथों से लय पैदा कर सकते हैं कि पहली बूँद कैसे गिरी और धीरे–धीरे कम वर्षा से लेकर अधिक वर्षा (वर्षा की वृद्धि और कमी) कैसे हुई। इस गतिविधि के उपरांत निम्न सवाल हो सकते हैं—

- अगर बारिश न हो तो क्या होगा?
- उन्हें सामाजिक विज्ञान की पुस्तक के अध्याय 'जल' को पढ़ना होगा।
- अगली कक्षा में हिदी कविता की पंक्तियाँ सीखी जा सकती हैं। शब्दों को अलग–अलग लयबद्ध तरीके में रखा जा सकता है, सहज सुर और ताल में तैयार बोल, एक गीत बन सकता है।

मूल्यांकन— दूसरों के द्वारा की जाने वाली प्रस्तुतियों (साथी–समूह द्वारा मलूयांकन के लिए) को सावधानीपूर्वक सुनने और अवलोकन करने के बाद टिप्पणी दें। शिक्षक एल.ओ. पर आधारित टिप्पणियों को रिकॉर्ड कर सकता है।

गतिविधि 3 (30 मिनट)

कविता— "थोड़ी धरती पाऊँ " (दूर्वा , भाग–2, अध्याय 5)

बच्चे अपनी पाठ्यपुस्तक को खोलते हैं और शिक्षक भावात्मक तरीके से कविता की पंक्तियों पढ़ते हैं। वह चार पंक्तियों को पढ़ने के बाद रुक जाते हैं और छात्रों से उन पंक्तियों पर आधारित अपने विचारों को चित्रित करने के लिए कहते हैं। वह उनके चित्र देखते हैं और उन सभी की सराहना करते हैं। शिक्षक बच्चों को समूहों में अगली चार पंक्तियों को पढ़ने और दृश्य बनाने के लिए प्रेरित करते हैं। बच्चे इन चार पंक्तियों के कई पहलुओं पर चर्चा करते हुए ,उनके चित्र बनाते हैं। यह कला की भाषा उन्हें प्रयोगात्मक शिक्षण की ओर ले जाती है।

सुझाए गए मूल्यांकन संकेतक

- मौखिक और गैर–मौखिक अभिव्यक्ति,
- चयनित अवधारणा की समझ,

Scanned by CamScanner

- व्यक्तिवगत पहल, और
- समूह में काम करना

यह जानना महत्वपूर्ण है कि यहाँ कला गतिविधियों का उपयोग प्रक्रिया के रूप में किया गया है, न कि परिणाम के रूप में।

गतिविधि 6 (प्रतिबिम्ब) :

बताएँ कि कैसे कला समेकित शिक्षा का अनुभव छात्रों को आपके विषयों के सार्थक सीखने में लाभान्वित कर सकता हैं । चिंतन के लिए कुछ समय लें और कमेंट/पब्लिश करें।

कला समेकित शिक्षा द्वारा मूल्यांकन (प्रो. पवन सुधीर, प्रो. ज्योत्स्ना तिवारी) :

Three Stages of Assessment in AIL are :

a) Assessment as learning
b) Assessment for learning
c) Assessment of learning

उक्त में a) और b) बहुत महत्वपूर्ण हैं सामान्यतः c) पर अधिक ध्यान दिया जाता हैं।

- कला समेकित अधिगम एक ऐसी सीखने–सीखाने की प्रक्रिया हैं जिसमे एक प्राकृतिक ढंग से मूल्यांकन होता ही जाता हैं।
- मूल्यांकन का तरीका Compeency Based (योग्यता आधारित) होता हैं।
- बिना असेसमेन्ट/मूल्यांकन के कोई भी प्रक्रिया पूर्ण नही मानी जा सकती।
- मूल्यांकन के दौरान हमको जजमेंटल होने के बजाय बच्चो को एंकरेज करना चाहिए।
- असेसमेंट ऑफ लर्निंग में बच्चा किस परिवेश से आता हैं, वह किस समाज में रहता हैं, वह किन लोगो के सम्पर्क में रहता हैं जैसी चीजें भी आती हैं ।
- कला समेकित अधिगम में मूल्यांकन के दौरान इस बात के भी प्रयास करने चाहिए कि खेल–खेल में अपने बच्चे की हर बात पता कर ले , हो सकता है वो आपको घर की ऐसी कोई बात बता दे जो कि आपको पहले पता ही नहीं थी।

Scanned by CamScanner

सारांश :

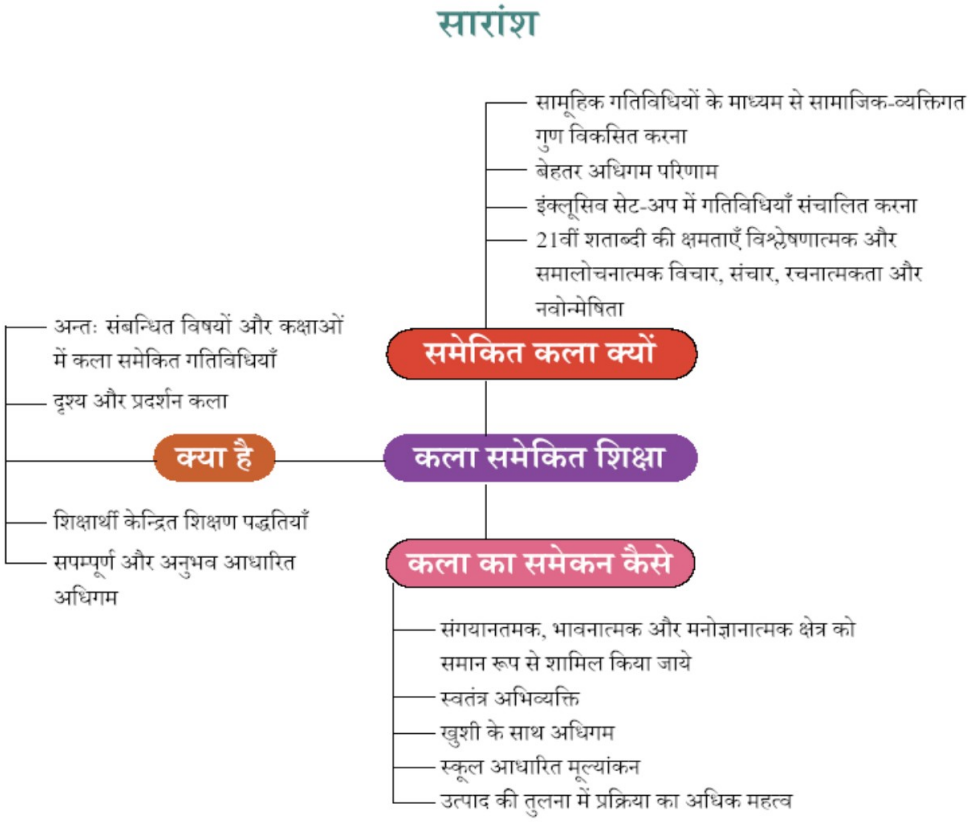

पोर्टफोलियों गतिविधि :

अपनी पसंद के विषय और सीखने के परिणामों पर एक कला एकीकृत अध्ययन सत्र की योजना बनाएँ ।

गतिविधि के लिए चेक–लिस्ट

1. कला समेकित गतिविधि के लिए विषय / अवधारणा और कक्षा।
2. क्या आपने अपनी कला समेकित गतिविधि के लिए अधिगम उद्देश्य का चयन किया है?
3. कला अनुभव के आयोजन के लिए गतिविधि।
4. प्रगति की जाँच के लिए कार्यपत्रक।
5. विषय के साथ कला संबंधी अनुभव जोड़ना।

अतिरिक्त संसाधन :

कुछ महत्वपूर्ण ऑडियो विडियो संसाधन हेतु लिंक –

- Har Diwas Kala Diwas: https://nroer.gov.in/55ab34ff81fccb4f1d806025file/5880928d472d4ac74d236ad5
- Bobbing butterfly toy:

Scanned by CamScanner

- https://nroer.gov.in/55ab34ff81fccb4f1d806025/file/57da300d16b51c69a20c6fc2
- Origami series: nroer.gov.in/55ab34ff81fccb4f1d806025/searchresults/?search_text=Origami#results
- Math activity: https://nroer.gov.in/55ab34ff81fccb4f1d806025/page/57d17ef316b51c090c3868e2
- Light (Audio) https://nroer.gov.in/55ab34ff81fccb4f1d806025/file/59f0244716b51c59f65dfad0
- Kavita Manjaree Series: https://nroer.gov.in
- QR Codes of AIL Guidelines and Training Package

प्रश्नोत्तरी :

प्रश्न 1. कला रूपों के एकीकरण के माध्यम से, शिक्षको द्वारा मूल्यांकन नहीं किया जा सकता हैं।

उत्तर 1. गलत

प्रश्न 2. निम्नलिखित में से कौन सी कला प्रदर्शन कला नही हैं।

उत्तर 2. चित्रकला

प्रश्न 3. गणित की विभिन्न अवधारणाएँ, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन और भाषा को समेकित अधिगम के जरिये प्रभावकारी ढंग से पढ़ाया जा सकता हैं।

उत्तर 3. सही

प्रश्न 4. समेकित शिक्षा निम्नलिखित में से किन क्षेत्रों के विकास में सहायक होती हैं।

उत्तर 4. सभी

प्रश्न 5. कला समेकित शिक्षा की गतिविधियों का वीडियो देखने के बाद, कौन सी ध्वनियाँ उँगलियों से बनाई जा सकती हैं ?

उत्तर 5. बारिश की ध्वनि

प्रश्न 6. कला समेकित गतिविधियाँ इनमें से किस सिद्धान्त पर आधारित हैं?

उत्तर 6. अनुभव आधारित अधिगम

प्रश्न 7. कला समेकित शिक्षा के माध्यम से शिक्षक क्या विकसित कर सकेंगे ?

उत्तर 7. कार्यानुभव के लिए गतिविधियाँ

प्रश्न 8. विशेष जरूरतों वाले बच्चों (CWSN) को निम्न में से किसके माध्यम से आनंददायी अधिगम में लगाया जा सकता हैं?

उत्तर 8. कला समेकित शिक्षा

प्रश्न 9. समेकित का अर्थ हैं

उत्तर 9. विभिन्न पाठ्यक्रम क्षेत्रों के शिक्षण के साथ कला का संयोजन।

प्रश्न 10. कला समेकित शिक्षा में, 'कला' को किस सन्दर्भ में लिया गया हैं?

उत्तर 10. शिक्षण–शास्त्र का एक टूल।

—— 00 कोर्स 6 समाप्त 00 ——

Scanned by CamScanner